A Daily News Magazine
भोपाल
मंगलवार, 3 जून, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 22, अंक 264, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

भारत को खुद को अभेद्य 'सिंदूर दुर्ग' में बदलना चाहिए

मनोज नरवणे

महाराष्ट्र के माल्वाण शहर के पास अरब सागर में एक छोटे-से द्वीप पर बने सिंधुदुर्ग किले को सबसे महत्वपूर्ण समुद्री किलों में गिना जाता है। इसे मराठा साम्राज्य के संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1664-67 में बनवाया था। यह किला समुद्री क्षेत्र में रणनीतिक सुरक्षा और विदेशी हमलों से सुरक्षा देने के लिए बनाया गया था। शिवाजी ने कोंकण के समुद्रतट की सुरक्षा और एक शक्तिशाली नौसेना के गठन की जो योजना बनाई थी उसका केंद्र था यह किला। इसने भारत की समुद्री सुरक्षा रणनीति की नींव डाली।

इसी तरह, 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन करने के बाद भारत को खुद को एक सिंदूर दुर्ग में तब्दील कर लेना चाहिए, जो अभेद्य हो; ज़मीनी, समुद्री और हवाई या साइबर जैसे बहुआयामी खतरों से सुरक्षित हो। यह आतंकवाद के खिलाफ भारत के उस नए सिद्धांत की शुरुआत मानी जाएगी, जिसकी रूपरेखा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस महीने के शुरू में राष्ट्र के नाम अपने संबोधन में प्रस्तुत की - 'आतंकवाद और व्यापार साथ-साथ नहीं चल सकते, पानी और खून साथ-साथ नहीं बह सकते।'

पाकिस्तान के अंदर आतंकी तामझाम पर 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत सैन्य आक्रमण को विराम दे दिया गया है। पाकिस्तान इसके कारण अपनी छवि और फौजी ताकत को हुए नुकसान से अभी भी परेशान है और बदला लेने को उतावला हो रहा होगा। थोड़े समय के लिए हुए इस संघर्ष ने उसे अपने घरेलू मसलों, खासकर आर्थिक बदहाली से ध्यान भटकाने का मौका दिया और इसने अपने पुराने दुश्मन के खिलाफ मुल्क को उम्मीद के मुताबिक एकजुट किया, बेशक थोड़े ही समय लिए। आईएमएफ से मिली मदद और जनरल आसिम मुनीर को फील्ड मार्शल नियुक्त किए जाने से उत्साहित पाकिस्तान के सियासी-फौजी नेतृत्व को सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखने की उम्मीद जगी है। चूंकि, उसकी ओर से एक और दुस्साहस किए जाने की आशंका को खारिज नहीं किया जा सकता इसलिए हमें और अधिक बहुआयामी और दुस्साहसी खतरे का सामना करने की तैयारी कर लेनी चाहिए।

किसी भी किले का पहला मकसद खुद को और इसमें रहने वालों को सुरक्षा प्रदान करना होता है। भारत ने अपनी संप्रभुता और भौगोलिक अखंडता की रक्षा करने की अपनी क्षमता का जोरदार प्रदर्शन कर दिया है। हमारा जो विशाल भौगोलिक आकार है और हमारी जो विविधता है, उसके मद्देनज़र अपने सभी नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना काफी बड़ा काम है। इतिहास बताता है कि आतंकवादी हमले केवल सीमावर्ती सूबों या केवल सैन्य ठिकानों पर ही नहीं होते. इनके कारण समस्या और विकट हो जाती है।

समाधान मजबूत खुफिया तंत्र है, जिसकी जड़ें वफादार स्थानीय आबादी में धंसी हों और उसे सरकार की सभी शाखाओं से सूचनाएं मिल रही हों। पहलगाम हमले जैसा कांड बिना लाल झंडी दिखाए नहीं हो सकता था। इन संकेतों को नहीं पकड़ा गया, या पकड़ा गया तो उन्हें संबंधित अधिकारियों तक नहीं पहुंचाया गया। यह चिंता की बात है। ज़मीन से गहरा जुड़ाव और लोगों की नब्ज़ पर हाथ ही आतंकवाद या बगावत विरोधी रणनीति का मुख्य आधार होना चाहिए।

'ऑपरेशन सिंदूर' ने ऑपरेशन संबंधी हमारी क्षमता में जो कमियां उजागर कीं उन्हें दूर करने की ज़रूरत है। हालांकि, हमारे देसी वेपन सिस्टम्स ने प्रशंसनीय काम किए, लेकिन रक्षा संबंधी जो खरीद लंबे समय से अटकी हुई हैं उन्हें तेज़ी से आगे बढ़ाने की ज़रूरत है, भले ही इसके लिए सीमित स्तर पर आयात क्यों न करने पड़ें। अगला हमला होने वाला है, हमें इसके लिए तैयार रहना होगा। रक्षा संबंधी इस तैयारी की कीमत पर 'आत्मनिर्भरता' को तरजीह नहीं देनी चाहिए। केंद्र सरकार ने तीनों सेनाओं को जो 'इमरजेंसी पावर' दिए हैं वह एक स्वागतयोग्य कदम है, लेकिन इसे औपचारिक और सुगठित रूप देने की ज़रूरत है। 'इमरजेंसी पावर' पहले भी कई बार दिए गए हैं - 2017 के डोकलाम टकराव, 2020-24 के बीच गलवान संघर्ष के दौरान अलग-अलग समय के लिए और अब पहलगाम कांड के बाद। इस तरह यह एक नई सामान्य बात बन गई है, लेकिन इससे ऐसा लगता है कि हम हमेशा तैयार नहीं रहते, जब भी संकट पैदा होता है तब पूंजी और राजस्व के खाते से हमें आपात खरीद करनी पड़ती है। 'इमरजेंसी पावर' के प्रावधान को स्थायी बनाने की ज़रूरत है, क्योंकि इससे खरीद में तेज़ी आती है। इसे कोई नया नाम दिया जा सकता है ताकि जब भी इसे लागू किया जाए तब ऐसा न लगे कि संकट हावी हो गया है।

वैसे, किले का उद्देश्य केवल सुरक्षा नहीं होता। इतिहास बताता है कि उनका इस्तेमाल हमला करने के लिए भी किया जाता रहा है। सिंदूर दुर्ग इसी काम के लिए हो। यह ऐसा राजनीतिक और सैन्य आधार बने जिसका इस्तेमाल हमारे दुश्मनों और हमारे हितों को चोट पहुंचाने वालों को जवाब देने के लिए किया जा सके।

सभी दलों की वरिष्ठ राजनीतिक हस्तियों के प्रतिनिधिमंडल तमाम देशों में भेज कर भारत ने दिखा दिया है कि वह एक राष्ट्र के रूप में एकजुट है। इन प्रतिनिधिमंडलों में सेना की ऑपरेशन शाखा के भी प्रतिनिधि शामिल किए जाते तो उनका वजन और बढ़ जाता। ये प्रतिनिधिमंडल न केवल हमारा नज़रिया स्पष्ट करेंगे बल्कि पाकिस्तान को सबसे अलग-थलग करने की मांग के पक्ष में अंतर्राष्ट्रीय समर्थन भी जुटाएंगे। पाकिस्तान को आईएमएफ से 2.3 अरब डॉलर की मदद देने के खिलाफ किसी देश ने मतदान नहीं किया; पहलगाम हत्याकांड पर इज़रायल और ताइवान को छोड़ किसी देश ने भारत को बिना शर्त समर्थन नहीं दिया - ये बातें बताती हैं कि जनमत को जीतने के लिए अभी लंबी जंग करने पड़ेगी।

बहरहाल, फिलहाल जो विराम मिला है वह सेनाओं को आगे संभावित आक्रमणों का नए सिद्धांत के तहत जवाब देने की रणनीति और योजना तैयार करने का समय और गुंजाइश उपलब्ध करता है। नई नीति से बिलकुल स्पष्ट है कि ताकत का जवाब ताकत से दिया जाएगा, चाहे स्थान कोई भी हो और हमलावर किसी देश का नागरिक हो या नागरिकता विहीन हो। किला देश के विकास के लिए ज़रूरी अमन-चैन और स्थिरता भी उपलब्ध कराता है। हमारा आर्थिक आधार मजबूत होगा तभी हम अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन कर सकते हैं। दोनों साथ-साथ चलती हैं। आर्थिक रूप से मजबूत होने पर ही भारत अपना वैसा प्रभाव डाल सकेगा, जैसा आज अमेरिका और चीन डाल रहे हैं। सिंदूर दुर्ग उस नए, मुक्त भारत का प्रतीक होगा, जिसने औपनिवेशिकता के जंजीरों को तोड़ डाला है और जो देशों के समुदाय में एक शक्ति के रूप में मान्य किए जाने के लिए दस्तक दे रहा है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

सिक्किम में 'धंस' गया पहाड़, 3 जवानों की मौत

● बारिश और बाढ़ का पूर्वोत्तर में आतंक, 6 जवान हैं लापता

इंफाल (एजेंसी)। सिक्किम में रविवार शाम 7 बजे एक मिलिट्री कैंप भारी बारिश के बाद लैंडस्लाइड की चपेट में आ गया। इसमें 3 जवानों की मौत हो गई, जिनके शव बरामद हुए हैं। चार लोगों को मलबे से जिंदा निकाला गया है। उन्हें मामूली चोटें आई हैं। छह जवान अभी लापता हैं। सर्च ऑपरेशन जारी है। सेना ने सोमवार को घटना की जानकारी दी और बताया कि जिन जवानों के शव मिले हैं, उनकी पहचान हवलदार लखबिंदर सिंह, लांस नायक मनीष ठाकुर और पोर्टर अभिषेक लखाड़ा के रूप में हुई है। दूसरी तरफ, सिक्किम के लाचेन और लाचुंग में 30 मई से फंसे एक हजार से ज्यादा टूरिस्टों को भी आज रेस्क्यू किया गया। सिक्किम सहित पूर्वोत्तर के राज्यों में पिछले 4 दिनों से भारी बारिश हो रही है। बारिश के कारण बाढ़ और लैंडस्लाइड की घटनाओं में अब तक 37 लोगों की जान गई है। इसमें असम में 10, अरुणाचल प्रदेश में 9, मिजोरम में 5 और मेघालय में 6 मौतें शामिल हैं। सिक्किम में अक्टूबर, 2023 को बादल फटने के बाद तीस्ता नदी में अचानक बाढ़ आने से 18 लोगों की मौत हो गई थी। कम से कम 98 लोग लापता हो गए थे, जिसमें सेना के 22 जवान शामिल थे।

इनका कुछ पता नहीं चल पाया था। पूर्वोत्तर राज्यों में राहत और बचाव के लिए भारतीय सेना, एयरफोर्स और असम रायफल्स के जवानों को तैनात किया गया है। असम में 3.64 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। ब्रह्मपुत्र और बराक समेत 10 प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। मणिपुर में बाढ़ से 19,000 से ज्यादा लोग प्रभावित हुए हैं। 3,365 घर क्षतिग्रस्त हो गए हैं।

मुर्शिदाबाद दंगों में लोगों पर हुए हमले का लेंगे बदला

● बीजेपी सिखाएगी सबक, अमित शाह के सामने गरजे सुवेंदु अधिकारी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल विधानसभा में नेता विपक्ष और बीजेपी के वरिष्ठ नेता सुवेंदु अधिकारी ने रविवार को कहा कि मुर्शिदाबाद दंगों के दौरान लोगों पर हुए हमलों का बदला लिया जाएगा। पार्टी उन लोगों को 'सबक सिखाएगी', जिन्होंने लोगों की हत्या की साजिश रची थी। उन्होंने तृणमूल कांग्रेस सरकार पर अप्रैल में धुलियान, शमशेरगंज और जिले के अन्य इलाकों में बड़े पैमाने पर आगजनी और हिंदुओं पर सशस्त्र हमलों के दौरान 'चुपचाप सब देखने' का आरोप लगाया। सुवेंदु अधिकारी ने कहा कि अगर सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) लोगों की जान

और संपत्ति बचाने के लिए आगे नहीं आता, तो जिले में बदतर स्थिति हो सकती थी। राज्य विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि राज्य ने बीएसएफ को नहीं बुलाया, जबकि उसके पुलिस बल घटनास्थल से भाग गए या दूर से आगजनी और लूटपाट होते देखते रहे। उन्होंने कहा कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बीएसएफ की तैनाती को संभव बनाया क्योंकि हमने कलकत्ता हाईकोर्ट का रुख किया। अधिकारी नेताजी इंडोर स्टेडियम में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की मौजूदगी में बीजेपी की 'विजय संकल्प रैली' को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि अमित शाह जी ने मुर्शिदाबाद के दंगा प्रभावित इलाकों में बीएसएफ को तुरंत तैनात करके शांति स्थापित की और लोगों की जान बचाई।

आज राजा भभूत सिंह की स्मृति में 3 जून को पचमढ़ी में होगी मंत्रिपरिषद की बैठक

जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास को सामने लाने के लिए की जा रही विशेष पहल : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'विरासत भी और विकास भी' के संकल्प की पूर्ति के लिए मध्य प्रदेश सरकार संकल्पित है। पहले लोकमाता देवी अहिल्याबाई के 300वें जयंती वर्ष में इंदौर और अब क्रांतिवीर राजा भभूत सिंह की

स्मृति में मंगलवार 3 जून को पचमढ़ी में मंत्रिपरिषद की बैठक आयोजित की जा रही है। इन ऐतिहासिक स्थानों पर कैबिनेट करने के पीछे विरासत के संरक्षण के साथ विकास की भावना है। युवा देशभक्त राजा भभूत सिंह ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तात्या टोपे के मुख्य सहयोगी के रूप में सतपुड़ा की गोद में 1857 की सशस्त्र क्रांति का सूत्रपात किया था। वे 1860 तक अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते रहे। राज्य सरकार पचमढ़ी में कैबिनेट कर महान स्वाधीनता सेनानी राजा भभूत सिंह के राष्ट्रहित में बलिदान का पुण्य स्मरण और उन्हें श्रद्धांजलि देने जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को मीडिया को जारी संदेश में यह विचार व्यक्त किए।

राजा भभूत सिंह ने समाज के हर वर्ग को आजादी के आंदोलन से जोड़ा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजा भभूत सिंह छापामार युद्ध नीति में पारंगत होने के कारण नर्मदांचल के शिवाजी कहलाते थे। उन्होंने आदिवासी समाज के साथ-साथ क्षेत्र के सभी वर्ग के लोगों को आंदोलन से जोड़ा था। वे सतपुड़ा के पहाड़ी मार्ग के चप्पे-चप्पे से वाकिफ थे, जबकि अंग्रेज इस क्षेत्र की भौगोलिक परिस्थितियों से परिचित नहीं थे। भभूत सिंह को पकड़ने के लिए ही ब्रिटिश सरकार को मद्रास इन्फेंटरी को बुलाना पड़ा था। दो साल के कड़े संघर्ष के बाद ब्रिटिश सेना राजा भभूत सिंह को गिरफ्तार कर पाई। राजा भभूत सिंह की वीरता के किस्से आज भी लोक मानस की चेतना में जीवंत हैं। पचमढ़ी में आज का बोरी क्षेत्र भभूत सिंह जी की जागीर में ही आता था।

जल, जंगल और जमीन के लिए जनजातीय योद्धाओं ने दी कुर्बानी

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश राज्य के गठन के बाद वर्ष 1959 तक पचमढ़ी ग्रीष्मकालीन राजधानी रही और यहीं पर विधानसभा का सत्र हुआ करता था। अब हमारी सरकार ने इसी स्थान पर कैबिनेट बैठक करने का निर्णय लिया है। पचमढ़ी, प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ स्वतंत्रता के लिए जनजातीय समाज द्वारा दिए गए बलिदान की दृष्टि से भी एक प्रमुख स्थान है। अंग्रेजों से सशस्त्र संघर्ष में जनजातीय समुदाय ने अपनी जान की बाजी लगाकर न केवल 1857, बल्कि इसके पूर्ववर्ती काल में भी जल, जंगल और जमीन के लिए कुर्बानी दी। इस गौरवशाली इतिहास को सबके सामने लाने के लिए राज्य सरकार जनजातीय भाई-बहनों के साथ समाज के सभी वर्गों का ध्यान रख रही है।

कैबिनेट बैठक के बाद पचमढ़ी में होगा सांसद-विधायकों का प्रशिक्षण वर्ग

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सरकार प्रदेश के सभी क्षेत्रों में गरीब, किसान (अन्नदाता), युवा और नारी सशक्तिकरण के लिए कार्य कर रही है। प्रदेश की वन संपदा और घने जंगलों में टाइगर (बाघ) सहित वन्य जीवों की संख्या लगातार बढ़ रही है। वन्य क्षेत्र के संरक्षण में जनजातीय समाज का सराहनीय योगदान रहा है।पचमढ़ी रोजगार और पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण क्षेत्र है। मंत्रिपरिषद की बैठक में पचमढ़ी क्षेत्र के विकास के लिए मंथन किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि विकास के मामले में पहले यहां कई तरह की पाबंदियां थीं, जिन्हें पिछली कैबिनेट में हटाने का कार्य किया गया है। पचमढ़ी एक बार पुनः अपने प्राकृतिक सौंदर्य के साथ गौरव प्राप्त करेगी। पचमढ़ी में कैबिनेट बैठक के बाद दूसरे चरण में विधायकों और सांसदों का प्रशिक्षण वर्ग आयोजित होगा।

सुप्रभात

अब क्या बताएँ टूटे हैं
कितने कहाँ से हम
ख़ुद को समेटते हैं
यहाँ से वहाँ से हम
क्या जाने किस जहाँ में
मिलेगा हमें सुकून
नाराज़ हैं ज़मीं से
ख़फ़ा आसमाँ से हम
अब तो सराब ही से
बुझाने लगे हैं प्यास
लेने लगे हैं काम
यक़ीं का गुमाँ से हम
लेकिन हमारी आँखों ने
कुछ और कह दिया
कुछ और कहते रह गए
अपनी ज़बाँ से हम
आईने से उलझता है
जब भी हमारा अक्स
हट जाते हैं बचा के
नज़र दरमियाँ से हम
मिलते नहीं हैं अपनी
कहानी में हम कहीं
ग़ाएब हुए हैं जब से
तिरी दास्ताँ से हम
ग़म बिक रहे थे मेले में
ख़ुशियों के नाम पर
मायूस हो के लौटे हैं
हर इक दुकाँ से हम।

– राजेश रेड्डी

'ऑपरेशन सिंदूर' होगी क्लोजिंग सेरेमनी की थीम

● आईपीएल फाइनल आज, तीनों सेना प्रमुखों को न्योता ● शंकर महादेवन का लाइव कॉन्सर्ट होगा, सजा स्टेडियम

अहमदाबाद (एजेंसी)। आईपीएल का फाइनल मंगलवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेला जाएगा। फाइनल की क्लोजिंग सेरेमनी की थीम 'ऑपरेशन सिंदूर' होगी। कार्यक्रम में तीनों सेनाओं के प्रमुखों को इनवाइट किया गया है। हालांकि, अब तक इनके ऑफिस से सेरेमनी शामिल होने की पुष्टि नहीं हुई है। पूरे स्टेडियम को तिरंगे रंग की लाइट से सजाया जाएगा और इस दौरान सिंगर शंकर महादेवन का लाइव कॉन्सर्ट होगा। बीसीसीआई सेक्रेटरी सचिव देवजीत सैकिया ने कहा- ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का जश्न मनाने के लिए हमने सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी, नौसेना प्रमुख एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल अमर प्रीत सिंह के साथ-साथ अन्य सेना प्रमुखों, अधिकारियों और जवानों को

अहमदाबाद में आईपीएल फाइनल मैच देखने के लिए आमंत्रित किया है। सैकिया ने कहा- बीसीसीआई देश के सशस्त्र बलों की बहादुरी, साहस और निस्वार्थ सेवा को सलाम करता है। सेना के प्रति आभार के प्रतीक के रूप में हमने समापन समारोह सशस्त्र बलों को समर्पित करने और हमारे नायकों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है। भले ही क्रिकेट एक राष्ट्रीय जुनून रहा है, लेकिन हमारे राष्ट्र की संप्रभुता, अखंडता और सुरक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं है। 8 मई को धर्मशाला में पंजाब-दिल्ली का मैच पाकिस्तान के ड्रोन हमले के कारण बीच में ही रोक दिया गया था। अगले ही दिन बीसीसीआई ने आईपीएल को एक सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया था। सीजफायर के ऐलान के बाद बीसीसीआई ने 16 मैचों के कार्यक्रम की घोषणा की।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 38 °c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ मंगलवार, 3 जून 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

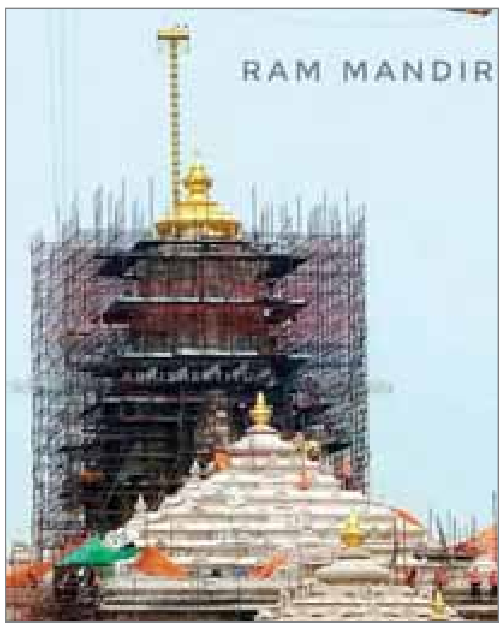

सोने से जगमगाया अयोध्या में राममंदिर का शिखर

● दूर से ही बिखेर रहा चमक, 5 जून को होगी राम दरबार की प्राण प्रतिष्ठा

अयोध्या (एजेंसी)। अयोध्या में रामलला के मंदिर के शिखर पर स्वर्ण जड़ित कलश लगाया गया गया है। यह दूर से ही चमक बिखेर रहा है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने रविवार को मंदिर के स्वर्ण जड़ित भव्य और चमकदार शिखर की तस्वीरें जारी की हैं। मंदिर में 5 जून को राम दरबार की स्थापना की जाएगी। इसके लिए अनुष्ठान 3 जून से प्रारंभ हो जाएंगे। अयोध्या राम मंदिर में 5 जून को राम दरबार सहित 7 मंदिरों की प्राण प्रतिष्ठा होगी। गंगा दशहरा पर सुबह 11 बजे के बाद स्थिर लग्न और अभिजीत मुहूर्त में पूजा शुरू होगी। प्राण प्रतिष्ठा में अयोध्या और काशी के 101 आचार्य शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में बतौर

मुख्य अतिथि सीएम योगी को ट्रस्ट की ओर से आमंत्रित किया गया है। योगी ने आमंत्रण स्वीकार कर लिया है। प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान कार्यक्रम 3 जून से शुरू होगा। इससे पहले 2 जून को महिलाओं द्वारा सरयू जल कलश यात्रा निकाली जाएगी। 3 जून की सुबह 6.30 बजे से सभी मंदिरों में विशेष पूजा-पाठ शुरू होगा, जो रात 9 बजे तक चलेगा। दोपहर में 1 घंटे का विश्राम होगा। इसी तरह 4 जून को भी विशेष पूजा-पाठ होगा। फिर 5 जून को सुबह 5.30 बजे पूजा शुरू होगी। प्राण प्रतिष्ठा 11 बजे के बाद की जाएगी। मंदिर के फर्स्ट फ्लोर पर राम दरबार की स्थापना हुई है, जबकि परकोटे में 6 मंदिरों में भगवान सूर्य, गणेश, हनुमान, शिव, माता भगवती और माता अन्नपूर्णा की मूर्तियां स्थापित की गई है।

7 मंदिर भक्तों के लिए कब खोले जाएंगे, अभी तय नहीं

प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम लाइव टेलीकास्ट किया जाएगा। फर्स्ट फ्लोर पर राम दरबार और परकोटे में 6 भगवान सूर्य, गणेश, हनुमान, शिव, माता भगवती और माता अन्नपूर्णा का मंदिर भक्तों के दर्शन के लिए किस दिन खोला जाएगा, इस पर अभी फैसला नहीं हो पाया है। मंदिर के पश्चिम हिस्से में लिफ्ट लगाई जा रही है। प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में सीएम योगी और काशी-अयोध्या के 101 आचार्यों के अलावा 20 संत-धर्माचार्य, 15 गृहस्थ और ट्रस्ट के पदाधिकारी को भी आमंत्रित किया गया है। प्राण प्रतिष्ठा उत्सव के दौरान ग्राउंड फ्लोर पर रामलला का दर्शन जारी रहेगा। राम दरबार की मूर्तियां मकराना के सफेद संगमरमर से बनी है। इसमें भगवान श्रीराम और सीता सिंहासन पर विराजमान हैं। भरत और हनुमानजी भगवान श्रीराम के चरणों के पास बैठे हैं। मूर्ति जयपुर में बनकर तैयार हुई है। सत्य नारायण पांडे, गोविंद, केशव, समेत 5 मूर्तिकारों ने बनाई है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अनुसार, प्राण प्रतिष्ठा को लेकर अयोध्या में उत्साह का माहौल है। जगह-जगह सजावट, फूल-मालाएं, दीपों और झंडों से मंदिर परिसर को सजाया जा रहा है। श्रद्धालुओं की भीड़ लगातार बढ़ रही है। वहीं, सुरक्षा और व्यवस्था को लेकर प्रशासन पूरी तरह से मुस्तैद है।

नीतिश विरोध ने बनाई पीके और पप्पू की जोड़ी

● एंटी इनकम्बेंसी के रथ पर एनडीए सरकार की बलि लेना चाहते हैं प्रशांत किशोर

पटना (एजेंसी)। सत्ता पलट कर सत्ता पर जनसुराज को काबिज कराने वाले जनसुराज के नायक प्रशांत किशोर की भूमिका अब बदल गई है। इस नई भूमिका का चेहरा या तो भविष्यवक्ता का लगता है या फिर राज्य के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार के धुर विरोधी का। लगभग दो साल के कालखंड में बड़ा बदलाव यह दिख रहा है कि अब प्रशांत किशोर को लगता है कि जनसुराज में फिलवक्त सत्ता पलटने का दम खम नहीं है। पर इतना विश्वास है कि अब बतौर मुख्यमंत्री सत्ता में नीतिश कुमार नहीं रहेंगे। जनसुराज के नायक प्रशांत किशोर ने एक मीडिया को साक्षात्कार देने के क्रम में कहा कि राज्य में बदलाव तो तय है लेकिन वह जनसुराज ही होगा इसकी गारंटी नहीं है। बिहार विधानसभा चुनाव के बाद बिहार में सत्ता का बदलना तय है।

नीतिश कुमार नवंबर के बाद मुख्यमंत्री इसलिए नहीं रहेंगे कि बिहार में बदलाव के लिए 60 फीसदी से ज्यादा जनता तैयार बैठी हुई है। बिहार में लोगों को इतनी परेशानी है कि इसके बाद एंटी इनकम्बेंसी ना हो यह संभव नहीं है। इसका असर यह होगा कि बिहार में नया मुख्यमंत्री बनेगा। पर कौन बनेगा यह तीन चार माह बाद पता चलेगा। जनसुराज पार्टी के सक्रिय राजनीति में होने की बात जब चल पड़ी थी तब यह जानने की कोशिश हुई थी।

सद्गुरु की आवाज, चेहरा और पहनावा बेहद है खास

● दिल्ली हाईकोर्ट ने कई वेबसाइट्स को बंद करने का दे दिया आदेश ● बोला-उनकी इजाजत के बिना कोई इनका इस्तेमाल नहीं कर सकता

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली हाई कोर्ट ने सद्गुरु जग्गी वासुदेव के पक्ष में एक अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कहा कि कोई भी उनकी आवाज, चेहरा, पहनावा, बोलने का अंदाज या और किसी भी तरीके से उनकी पहचान को बिना इजाजत इस्तेमाल नहीं कर सकता खासकर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) के जरिए। दरअसल कुछ वेबसाइट और सोशल मीडिया अकाउंट्स एआई तकनीक के जरिए सद्गुरु की आवाज और वीडियो में बदलाव करके उन्हें अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे थे। इसे लेकर सद्गुरु ने कोर्ट में याचिका दायर की कि उनकी पहचान का गलत तरीके से इस्तेमाल हो रहा है। कोर्ट ने कहा कि सद्गुरु की पहचान बिलकुल खास है और उसका दुरुपयोग न हो।

खरगोन-इंदौर रोड पर भेड़-बकरों से भरा ट्रक पलटा

60 की मौत, 17 चोरी, 47 घायल ; मवेशियों को ईद के लिए हैदराबाद ले जाया जा रहा था

खरगोन (नप्र)। खरगोन-इंदौर रोड पर मेनगांव थाना क्षेत्र के निमगुल के पास सोमवार तड़के एक तेज रफ्तार ट्रक अनियंत्रित होकर पलट गया। ट्रक में भरे 180 भेड़-बकरों में से 60 की मौके पर दबकर मौत हो गई, जबकि 47 घायल हो गए। हादसे में कई जानवर सड़क पर बिखर गए, जिन्हें देखकर लोग मौके पर जमा हो गए। इसी दौरान 17 जानवरों को कुछ लोग उठा ले गए। पुलिस ने मवेशी चोरी की पुष्टि की है।

कार को बचाने की कोशिश में पलटा ट्रक- हादसा उस वक्त हुआ जब आगे चल रही कारअचानक बंद हो गई। पीछे से आ रहा भेड़-बकरों से भरा ट्रक उसे बचाने की कोशिश में असंतुलित होकर पलट गया।

ट्रक ड्राइवर नौशाद खान बाकानेर से खरगोन की ओर आ रहा था। उसने बताया कि कार में डीजल खत्म होने से वह अचानक बंद हो गई थी।

ईद के लिए हैदराबाद भेजे जा रहे थे मवेशी- पशु मालिक वली मोहम्मद ने बताया कि ट्रक में लदे भेड़-बकरे ईद पर कुर्बानी के लिए हैदराबाद भेजे जा रहे थे। ट्रक नीमच से हैदराबाद की ओर जा रहा था।

पुलिस और पशु चिकित्सा विभाग मौके पर पहुंचे- हादसे की सूचना पर मेनगांव पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस और पशु चिकित्सा विभाग की टीम ने पंचनामा बनाकर घायल मवेशियों का इलाज पास के खेत में किया। पुलिस का कहना है कि हादसे के बाद 17 मवेशी चोरी हो गए हैं। अज्ञात लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

4 लोगों ने 2 भाइयों को लात-घूसों, डंडों से पीटा

भोपाल (नप्र)। भोपाल के नूर महल इलाके में वाहन पार्क करने को लेकर चार लोगों ने मिलकर दो भाइयों पर हमला कर दिया। आरोपियों ने लात-घूंसों और डंडों से दोनों की पिटाई कर दी। कुछ देर में आरोपी लहूलुहान हालत में दोनों युवकों को छोड़कर फरार हो गए। मामले में कोतवाली पुलिस ने केस दर्ज कर लिया है। चारों नामजद आरोपियों की तलाश की जा रही है।

पुलिस के मुताबिक 25 वर्षीय अरबाज खान मुंशी हुसैन तालाब के पास नूर महल में रहता है और मेडिकल स्टोर पर काम करता है। उसका चचेरा भाई अयान खान अपनी मां परवीन को अस्पताल से चेक कराने के बाद रविवार की देर रात घर लौटा था। यहां उसने देखा की उनकी पार्किंग में पड़ोसी जावेद ने अपनी कार पार्क कर रखी है। हार्न बजाने पर जावेद डंडा लेकर बाहर निकला और अयान को गालियां देने लगा। शोर की आवाजें सुनने के बाद अरबाज घर के बाहर निकला।

आरोपियों ने अचानक किया हमला

अरबाज ने पुलिस को बताया कि वह जावेद को समझाने का प्रयास कर रहे थे। तभी जावेद के घर से उसका साला सादिक, साले का ससुर इंसाफ और साले का बेटा कैफ बाहर आए। सभी ने निकलकर अरबाज और अयान पर हमला कर दिया। सिर में डंडा लगने से अरबाज को गंभीर चोट आई।

भाजपा प्रदेश कार्यालय में संगठनात्मक प्रशिक्षण बैठक 3 जून को

भोपाल (नप्र)। भारतीय जनता पार्टी संगठन के जून माह के विभिन्न संगठनात्मक कार्यक्रमों को लेकर प्रशिक्षण बैठक का आयोजन 3 जून को प्रातः 10 बजे भाजपा प्रदेश कार्यालय में किया जा रहा है।

इस प्रशिक्षण बैठक को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व खजुराहो सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा, प्रदेश प्रभारी डॉ. महेन्द्र सिंह एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी संबोधित करेंगे। बैठक में भाजपा के प्रदेश पदाधिकारी, संभाग प्रभारी, मोर्चा अध्यक्ष एवं विभिन्न संगठनात्मक कार्यक्रमों के जिला संयोजक शमिल होंगे।

मप्र सरकार के लिए जनकल्याण और जन सेवा सर्वोपरि: मुख्यमंत्री

● वरिष्ठ नेता स्वर्गीय कैलाश नारायण सारंग की जयंती और श्रीमती प्रसून सारंग की स्मृति में हुए कार्यक्रम

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्यप्रदेश सरकार के लिए जन सेवा के कार्य और जनकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन सर्वोपरि है। यह वर्ष अनेक सेवा प्रकल्पों के कारण जाना जाएगा। जन सेवा और सुशासन की प्रतीक लोकमाता अहिल्या देवी जी के 300 वें जन्मदिन को उल्लास से मनाया गया। भोपाल में हुए कार्यक्रम में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की उपस्थिति थी और भोपाल के नागरिकों ने इस कार्यक्रम को स्मरणीय बना दिया। अब जनजातीय योद्धा राजा भभूत सिंह के सम्मान में पचमढ़ी में केबिनेट बैठक रखी गयी है। मुख्यमंत्री डॉ यादव आज भोपाल के सुभाष नगर खेल मैदान में वरिष्ठ नेता स्वर्गीय कैलाश नारायण सारंग की जयंती और श्रीमती प्रसून सारंग की स्मृति में हुए कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में हुए इस कार्यक्रम में जहां वरिष्ठ जन का सम्मान किया गया, वहां सामूहिक विवाह भी संपन्न हुए।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग द्वारा माता-पिता की स्मृति में यह आयोजन सराहनीय है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए माता-पिता के साथ बिताया समय यादगार होता है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म लेना और मृत्यु को प्राप्त होना तय है, लेकिन जन्म और मृत्यु के मध्य यात्रा कितनी सार्थक रही यह महत्वपूर्ण है। स्वर्गीय कैलाश नारायण सारंग जी ने भी जीवन में सेवा कार्यों को अपनाया। हमारी भारतीय संस्कृति में सेवा का विशेष महत्व है और यह सनातन संस्कृति की पहचान भी है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत में कुटुंब परंपरा है और मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने बुजुर्गो की सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय पहल की है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ यादव ने बुजुर्गों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया और नव दंपतियों को बधाई दी।

माता-पिता भगवान से भी पहले आते हैं - केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान- केंद्रीय किसान कल्याण एवं कृषि विकास मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि माता-पिता भगवान से भी पहले आते हैं। उन्होंने कहा कि मंत्री श्री विश्वास सारंग को अपने माता-पिता की स्मृति को मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में मनाने के संकल्प को साधुवाद देता हूं। स्व. श्री कैलाश सारंग केवल विश्वास सारंग के पिता नहीं, बल्कि हमारे जैसे करोड़ों कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शक और पालक थे।

कार्यक्रम मातृ-पितृ सेवा का उदाहरण-वी.डी. शर्मा- प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद श्री वी.डी. शर्मा ने कहा कि श्रद्धेय स्व. श्री कैलाश नारायण सारंग के जयंती को मातृ-पितृ भक्ति दिवस के रूप में मनाने वाले मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने दूसरों के लिये प्रेरणा का काम किया। स्व. श्री सारंग ने जो भूमिका संगठन के अंदर निभाई है।

चेन्नई की अन्ना यूनिवर्सिटी में रेप के दोषी को उम्रकैद

30 साल जेल में रहना होगा, बिरयानी वेंडर ने 19 साल की स्टूडेंट का किया था शोषण

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के चेन्नई स्थित अन्ना यूनिवर्सिटी में हाई प्रोफाइल यौन शोषण मामले के दोषी ज्ञानसेकरन को सोमवार को उम्रकैद की सजा सुनाई गई है। महिला कोर्ट की जज एम राजलक्ष्मी ने कहा कि दोषी को बिना किसी छूट के कम से कम 30 साल जेल में रहना होगा। दोषी पर 90 हजार रुपए जुर्माना भी लगा है। ज्ञानसेकरन को 28 मई को दोषी ठहराया था। उसके खिलाफ यौन उत्पीड़न, रेप, धमकी और अपहरण सहित सभी 11 आरोप सही साबित हुए थे। मामले में कम से कम 29 गवाहों ने गवाही दी और पुलिस ने 100 पन्नों का चार्जशीट दाखिल किया था। मामला दिसंबर, 2024 का है। ज्ञानसेकरन ने 23 दिसंबर की रात 8 बजे यूनिवर्सिटी कैंपस में घुसकर 19 साल की इंजीनियरिंग स्टूडेंट का रेप किया था। पीड़ित अपने युवक दोस्त के साथ थी। ज्ञानसेकरन ने दोस्त की पिटाई के बाद युवती का शोषण किया था। दोषी ने पीड़िता को ब्लैकमेल करने के लिए घटना का वीडियो भी बनाया था। पुलिस ने यूनिवर्सिटी कैंपस में लगे छ्ष्टञ्जङ्क फुटेज की जांच के बाद ज्ञानशेकरन को अगले दिन गिरफ्तार किया था।

रूस ने माना-यूक्रेन ने पांच एयरबेस पर की एयरस्ट्राइक

● कहा-ड्रोन के जरिए आतंकी हमला किया, कई विमान तबाह हुए

मास्को (एजेंसी)। रूसी रक्षा मंत्रालय ने रविवार को पुष्टि की कि यूक्रेन द्वारा किए गए ड्रोन हमलों में देशभर के 5 सैन्य एयरबेस को निशाना बनाया गया, जिससे कई विमानों को नुकसान पहुंचा है। हालांकि, कितने विमान क्षतिग्रस्त हुए हैं, इसका सटीक आंकड़ा नहीं बताया है। अपने बयान में रूसी रक्षा मंत्रालय ने यूक्रेन पर आरोप लगाया कि उसने मुरमान्स्क, इरकुत्स्क, इवानोवो, रयाजान और अमूर क्षेत्रों में स्थित हवाई अड्डों पर एफपीवी ड्रोन से आतंकी हमला किया। मंत्रालय ने कहा कि इवानोवो, रयाजान और अमूर क्षेत्रों के सैन्य एयरबेसों पर सभी आतंकी हमलों को नाकाम कर दिया गया। पहली बार आधिकारिक रूप से यह पुष्टि की गई है।

'ऑपरेशन सिंदूर' पर अपनी तारीफ खुद ही करने की जरूरत नहीं है

● खरगे ने पीएम मोदी पर कसा तंज, संसद के विशेष सत्र की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। 'ऑपरेशन सिंदूर' को लेकर देश का सियासी पारा हाई है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर हमला तेज कर दिया। उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' पर संसद के विशेष सत्र की मांग फिर से दोहराई। खरगे ने कहा कि राष्ट्रीय मामलों में एकता होनी चाहिए और विरोधियों को हराने पर ध्यान देना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों पर सभी नेताओं को चुप रहना चाहिए। सीडीएस जनरल अनिल चौहान के बयान के बाद खड़गे ने यह बातें कहीं है। दरअसल जनरल चौहान ने कहा था कि भारत को पाकिस्तान के साथ हालिया युद्ध में नुकसान हुआ था, लेकिन उन्होंने पाकिस्तान के 6 भारतीय जेट विमानों को गिराने के दावे को गलत बताया था। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम मोदी पर निशाना साधा।

देश में 4 हजार होने वाले हैं कोविड केस, 32 की मौत

● केरल-महाराष्ट्र और दिल्ली के बुरे हाल, सबसे ज्यादा मामले

नई दिल्ली (एजेंसी)। कोविड-19 संक्रमण एक बार फिर से तेजी के साथ पैर पसार रहा है। देश में कोरोना के मामले 4 हजार के करीब पहुंच गए हैं। यानी किसी भी वक्त कोविड-19 के मामले 4 हजार के आंकड़े को पार कर सकते हैं। इस वक्त सबसे ज्यादा कोविड संक्रमित मरीज केरल (1435) में हैं। इसके बाद दूसरे नंबर पर महाराष्ट्र (506) और तीसरे नंबर पर दिल्ली (483) है। कोविड संक्रमण के कारण मौत के आंकड़ों की बात करें तो अब तक 34 कोविड मरीजों की मौत हो चुकी है। पिछले 24 घंटे के अंदर 4 लोगों ने संक्रमण के कारण दम तोड़ा है। मरने वालों में एक मरीज दिल्ली, एक केरल, एक महाराष्ट्र और एक तमिलनाडु का है। तेजी से बढ़ते संक्रमण और संक्रमित मरीजों के मौत के मामले ने सभी को डरा दिया है। उत्तर प्रदेश के नोएडा में पिछले 24 घंटे के अंदर एक कोविड पॉजीटिव केस मिला है, जिसके बाद कोविड संक्रमितों की तुलना अब 63 हो गई है, जिसमें महिला 31 और पुरुष 32 हैं। बताया जा रहा है कि कोरोना वायरस कमजोर स्वास्थ्य वाले लोगों को ज्यादा निशाना बना रहा है। कोविड से होने वाली मौतों में एक समानता यह थी कि सभी मरीजों को पहले से कोई गंभीर बीमारी थी। ये लोग पूरी तरह स्वस्थ नहीं थे, बल्कि उनकी पहले से मौजूद स्वास्थ्य समस्याओं ने उन्हें ज्यादा कमजोर बना दिया था, जिससे वायरस उन्हें ज्यादा नुकसान पहुंचा पाया।

लालू के लाल तेजप्रताप को मिला सुधाकर का साथ

● बोले-हिंदुओं में 2-3 शादियां जायज, लालू यादव फैसले पर फिर सोचें

पटना (एजेंसी)। अनुष्का संग रिश्ते और फोटो वायरल होने के बाद पार्टी-परिवार से निकाले गए तेजप्रताप यादव को आरजेडी सांसद सुधाकर सिंह का साथ मिला है। सुधाकर सिंह ने मोतिहारी में कहा, ये तेजप्रताप का निजी मसला है। शादी-ब्याह करना, ये कोई गुनाह नहीं है। हिंदू समाज में दो-तीन शादियों को वैध माना गया है। हमने समाजवादी विचारक डॉ. राम मनोहर लोहिया की किताबों में भी पढ़ा है कि ऐसे मामलों को समाज की स्वीकृति मिली है। तेजप्रताप को माफ करने के सवाल पर सुधाकर सिंह ने कहा कि लालू प्रसाद यादव को एक पिता के रूप में अपने बेटे के फैसले को स्वीकार करना चाहिए। इसी बीच तेजप्रताप आरजेडी से ऑफिशियल तरीके से बाहर हो चुके हैं। रविवार को उनके निष्कासन का लेटर सार्वजनिक हुआ। आरजेडी के राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी ने इसे लेकर पत्र जारी किया है। 6 दिन बाद सामने आए पत्र में एक लाइन में उनके निष्कासन की जानकारी है।

मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव से केन्द्रीय सूचना प्रसारण एवं संसदीय कार्य राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में मुलाकात की।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंखयक कल्याण विमुक्त घुमंतू और अर्धघुमंतु कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर की उपस्थिति में मंत्रालय के सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में माह के पहले दिन जन गण मन एवं वंदे मातरम का सामूहिक गान हुआ। इस अवसर पर मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद पटेल ने मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन में भेंट की। उन्होंने नरसिंहपुर में 26 से 28 मई तक चले कृषि उद्योग समागम 2025 के सफल आयोजन के लिए मुख्यमंत्री डॉ. यादव को पुष्प गुच्छ भेंट कर आभार माना।

जेईई एडवांस्ड 2025 में बुरहानपुर के माजिद की एआईआर-3 रैंकिंग

मध्यप्रदेश के टॉपर रहे, जबलपुर के देव के कैमिस्ट्री में 100 में से 100 नंबर

भोपाल (नप्र)। आईआईटी कानपुर ने जेईई एडवांस्ड 2025 का रिजल्ट 2 जून को जारी कर दिया था। बुरहानपुर के माजिद मुजाहिद हुसैन ने ऑल इंडिया रैंक- 3 हासिल की है। वे मध्यप्रदेश के टॉपर रहे हैं। पहले स्थान पर राजित गुप्ता और दूसरे स्थान पर सक्षम जिंदल हैं। दोनों कैंडिडेट कोटा (राजस्थान) से हैं।

माजिद ने कहा- सफल होना है तो खुद पर भरोसा जरूरी है। ऐसा होने पर आप ज्यादा बेहतर प्रदर्शन कर पाते हैं। साथ ही, मानसिक तनाव से दूर रहते हैं। वहीं, जबलपुर के देव कौरव ने ऑल इंडिया रैंक (एआईआर) 159 हासिल की है। देव ने कैमिस्ट्री में 100 में से 100 नंबर पाए हैं।

माजिद मुजाहिद हुसैन

हर्षिता गोयल

परीक्षा में शामिल हुए कैंडिडेट्स ऑफिशियल वेबसाइट jeeadv.ac.in पर जाकर अपना रिजल्ट चेक कर सकते हैं। कुल 1,80,422 स्टूडेंट्स परीक्षा में शामिल हुए थे, जिसमें से 54,378 क्वालिफाई हुए हैं। जबलपुर के देव कौरव ने जेईई एडवांस्ड परीक्षा में ऑल इंडिया रैंक 159 हासिल की है।

इंदौर की हर्षिता लड़कियों में टॉपर- कानपुर जोन में इंदौर की हर्षिता गोयल लड़कियों में टॉपर रही हैं। हर्षिता की 434वीं रैंक आई है। हर्षिता ने कहा- मैंने 11वीं क्लास से ही जेईई की तैयारी शुरू कर दी थी। पता था कि रिजल्ट अच्छा आएगा लेकिन यह नहीं पता था कि एमपी में फर्स्ट रैंक मिलेगी।

हर्षिता जेईई मेन-2025 के पहले चरण में 99.90 परसेंटाइल के साथ लड़कियों में सिटी और स्टेट में टॉपर रही हैं। वे एआई या कम्प्यूटर साइंस की फील्ड में ही आगे जाना चाहती हैं। उन्हें रीडिंग, आर्ट एंड क्राफ्ट और ट्रैवलिंग का शौक है।

हर्षिता बोलीं– 15 घंटे पढ़ाई का रहता था शेड्यूल

हर्षिता गोयल ने बताया कि मेंस में जिस तरह से मेहनत की थी। एडवांस में भी वैसे ही मेहनत की। तीन-चार महीने रिवीजन ही करना था। इसलिए ज्यादा टफ नहीं रहा। मेरे 15 घंटे का शेड्यूल होता था। अधिकतर समय कोचिंग पर ही रहती थी। इसलिए सोशल मीडिया से तो दूर ही रही। फोन इस्तेमाल करने का समय ही नहीं मिलता था।

कोचिंग पर 15 घंटे में रिवीजन भी हो जाता था। मैं मूल रूप से उज्जैन की रहने वाली हूं, लेकिन इंदौर में रहकर एग्जाम की तैयारी कर रही थी। इंदौर में मेरे साथ मेरी नानी रहती है। जबकि मम्मी उज्जैन में एक बैंक में काम करती है। नानी-मम्मी का सपोर्ट सबसे ज्यादा रहा है। हर्षिता ने नानी-मम्मी और कोचिंग की फैकल्टी के सपोर्ट के लिए धन्यवाद दिया है।

स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन में अग्रणी बनने के लिए हर स्तर पर समन्वय और सक्रियता अनिवार्य : उप मुख्यमंत्री शुक्ल

15वें वित्त आयोग एवं पीएम–अभिम अंतर्गत स्वास्थ्य विकास कार्यों की संभागवार वृहद समीक्षा की

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने मंत्रालय स्थित सभाकक्ष में लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 15वें वित्त आयोग एवं प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत - स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभिम) के अंतर्गत संचालित निर्माण एवं विकास कार्यों की संभागवार वृहद समीक्षा की। बैठक में निर्माण कार्यों की प्रगति, बजट व्यय की स्थिति, गुणवत्ता, समय-सीमा, तकनीकी और प्रशासनिक सहयोग के महत्वपूर्ण विषयों पर गहन चर्चा कर उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि केंद्र सरकार की स्वास्थ्य योजनाओं के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य बने, इसके लिए सभी स्तरों पर समन्वय और सक्रियता अनिवार्य है।

उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि सभी कार्यों की सघन मॉनिटरिंग कर निर्धारित समयसीमा में कार्य पूर्ण किए जाएं, ताकि आम नागरिकों को समय पर बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल सके। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि संभागीय स्तर पर कार्यों की नियमित समीक्षा की जाए। हर 15 दिवस में राज्य स्तर पर कार्यों की प्रगति की समीक्षा होगी। प्रमुख सचिव लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा श्री संदीप यादव, आयुक्त श्री तरुण राठी, परियोजना संचालक श्री नीरज कुमार सिंह सहित विभागीय वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

तकनीकी मैनपावर की समुचित व्यवस्था करें- उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि तकनीकी सहयोग और कार्यों की गहन निगरानी हेतु आवश्यक तकनीकी मैनपावर की समुचित व्यवस्था की जाए और इसके लिए एक प्रभावी निगरानी तंत्र तैयार किया जाए। किसी भी स्तर पर कार्यों में अवरोध हो तो उसकी जानकारी तत्काल उच्च स्तर पर दी जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि किसी प्रकार की लापरवाही या अनावश्यक विलंब को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। राज्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदेशवासियों को सुलभ, सशक्त और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना है और इसके लिए जो भी आवश्यक कदम उठाने होंगे, वे तत्परता से उठाए जाएंगे।

15वें वित्त आयोग में मध्यप्रदेश में स्वास्थ्य ढाँचे के सुदृढ़ीकरण के लिए 4 हजार 600 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई, जिसमें से अब तक 2 हजार 540 करोड़ रुपये की राशि राज्य को प्राप्त हुई है और 1 हजार 487 करोड़ रुपये का व्यय किया जा चुका है। भवनविहीन उप स्वास्थ्य केंद्रों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों के निर्माण हेतु 1 हजार 649.17 करोड़ रुपये की स्वीकृति प्राप्त हुई, जिसमें 543.06 करोड़ रुपये जारी किए गए और 298.97 करोड़ रुपये का व्यय हुआ। ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स हेतु 94.41 करोड़ रुपये की स्वीकृति दी गई, 57.98 करोड़ रुपये जारी हुए और 44.47 करोड़ रुपये खर्च किए गए।

उप स्वास्थ्य केंद्रों में डायग्नोस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थापना के लिए 544.87 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत हुई, जिसमें 312.96 करोड़ रुपये जारी किए गए और 226.36 करोड़ रुपये का व्यय हुआ। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डायग्नोस्टिक इंफ्रास्ट्रक्चर हेतु 577.34 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए, जिनमें से 331.56 करोड़ रुपये की राशि जारी की गई और 219.60 करोड़ रुपये व्यय हुआ। ग्रामीण क्षेत्रों के उप स्वास्थ्य केंद्रों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर में परिवर्तित करने हेतु 395.50 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत और पूर्णतः जारी की गई, जिसमें से 297.78 करोड़ रुपये का व्यय हुआ।

शहरी क्षेत्रों में डायग्नोस्टिक सुविधाओं के विकास हेतु 144.28 करोड़ रुपये स्वीकृत हुए, 54.34 करोड़ रुपये जारी हुए और 41.07 करोड़ रुपये व्यय किए गए। शहरी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटरों की स्थापना एवं संचालन हेतु 1 हजार 195.29 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई, जिसमें से 845.12 करोड़ रुपये जारी हुए और 359.08 करोड़ रुपये व्यय किए गए। 15वें वित्त आयोग के अंतर्गत प्रदेश की 2 हजार 37 स्वास्थ्य इकाइयों के लिए कुल 1 हजार 512.64 करोड़ रुपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई, जिनमें से अब तक 347.99 करोड़ रुपये का व्यय हुआ है।भवनविहीन 1790 उप स्वास्थ्य केंद्रों में से 118 कार्य पूर्ण हो चुके हैं, 1507 कार्य निर्माणाधीन हैं। यह कार्य स्वास्थ्य विभाग द्वारा किए जा रहे हैं। भवनविहीन 119 प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में से 26 कार्य पूर्ण, 88 प्रगतिरत हैं। ये कार्य स्वास्थ्य विभाग, म.प्र. भवन विकास निगम तथा म.प्र. स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण निर्माण निगम द्वारा किए जा रहे हैं। ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट्स के 117 कार्यों में से 77 कार्य पूर्ण हो चुके हैं। ये कार्य पीआईयू, स्वास्थ्य विभाग, एमपीपीएचसी और एमपीबीडीसी द्वारा किए जा रहे हैं। 11 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में से 3 कार्य प्रगति पर हैं और 8 कार्य टेंडर स्तर पर हैं।

संगठन सृजन से कांग्रेस को मिलेगा नया संबल : अरुण यादव

राहुल गांधी के नेतृत्व में नव सृजन से बदलेगा राजनीतिक परिदृश्य : सज्जन वर्मा

भोपाल। आज भोपाल में संयुक्त प्रेस ब्रीफिंग आयोजित की गई। इस अवसर पर पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं वरिष्ठ नेता श्री अरुण यादव, पूर्व मंत्री श्री सज्जन वर्मा, कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष श्री मुकेश नायक उपस्थित रहे और उन्होंने आगामी कार्यक्रम के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाला।

पूर्व केंद्रीय मंत्री अरुण यादव ने नव सृजन अभियान को कांग्रेस के संगठनात्मक पुनर्गठन की दिशा में ऐतिहासिक पहल बताया। उन्होंने कहा- यह अभियान मध्यप्रदेश में कांग्रेस को पुनर्गठित करने और जनमानस से गहरे जुड़ाव की दिशा में एक निर्णायक कदम है। आदरणीय राहुल गांधी जी के नेतृत्व में पार्टी एक बार फिर जनभावनाओं से जुड़ने और जमीनी स्तर पर मजबूत संगठन खड़ा करने के लिए प्रतिबद्ध है। यह केवल सांगठनिक चर्चा नहीं, बल्कि कांग्रेस की आत्मा को फिर से जनआंदोलन से जोड़ने का प्रयास है। पूर्व मंत्री श्री सज्जन वर्मा ने जानकारी दी कि कांग्रेस के नेता श्री राहुल गांधी 3 जून 2025 को भोपाल पहुंचेंगे, जहाँ वे नव सृजन अभियान की शुरुआत करेंगे। उन्होंने राहुल गांधी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा जातिगत जनगणना की मांग को राहुल गांधी जी ने जिस शिद्दत से उठाया, उससे देशभर में एक नई चेतना जागृत हुई। पहले तो मोदी जी ने इस मांग का कटाक्ष किया लेकिन अंततः उन्हें घुटने टेकने पड़े और इसे स्वीकार करना पड़ा। यह जीत उन वंचित वर्गों की है, जिन्हें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय की प्रतीक्षा थी।

कांग्रेस मीडिया विभाग के अध्यक्ष मुकेश नायक ने कहा- नव सृजन का अर्थ केवल एक नया संगठन नहीं, बल्कि विचार, संपर्क और संवाद के माध्यम से एक ऐसी वैचारिक राजनीति की स्थापना है जो जनता से जुड़ी हो और जमीनी सच्चाइयों को उजागर करने में सक्षम हो। यह अभियान उत्प्रेरक समूहों का निर्माण करेगा जो मैदान में सक्रिय रहकर भाजपा की झूठ और भ्रम की राजनीति का पर्दाफाश करेंगे।

तीनों नेताओं ने समस्त कांग्रेसजनों से इस ऐतिहासिक कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की अपील की और विश्वास जताया कि यह प्रयास कांग्रेस को एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान करेगा।

रेप-ब्लैकमेलिंग गैंग से लेन-देन करने वालों से पूछताछ

दर्जन भर से अधिक लोगों ने कई बार 40–50 हजार रुपए तक दिए

भोपाल (नप्र)। भोपाल में कॉलेज छात्राओं से रेप और ब्लैकमेलिंग करने वाले गिरोह के सरगना फरहान खान के खातों की जांच में एक दर्जन से अधिक लोग चिह्नित किए गए हैं। इन लोगों ने पिछले चार सालों के भीतर कई बार फरहान से 40 से 50 हजार रुपए तक लिए और दिए हैं। अब पुलिस इन लोगों को पूछताछ के लिए नोटिस जारी कर रही है। फरहान से लेन-देन क्यों किया इस संबंध में पुलिस जानकारी जुटा रही है।

साद उर्फ शम्स उद्दीन अबरार नबील

हालांकि फरहान ने पुलिस को बताया था कि सभी बड़े ट्रांजेक्शन उन लोगों से किए हैं जिनसे उसने टू व्हीलर बेची अथवा खरीदी थी। वह खर्च चलाने के लिए सेकेंड हैंड बाइक बेचने और खरीदने का काम भी किया करता था। स्टेट एसआईटी (स्पेशल इन्वेस्टिगेशन टीम) की पड़ताल में आरोपी द्वारा शेयर ट्रेडिंग किए जाने का भी खुलासा हुआ था। इसके लिए आरोपी ने पीड़ित छात्राओं के खाते के इस्तेमाल किया था।

अबरार अब भी पुलिस गिरफ्त से दूर- भोपाल के इस बहुचर्चित मामले में 17 अप्रैल को पहली एफआईआर बागसेवनिया थाने में दर्ज की गई थी। इसके बाद से ही आरोपियों में से एक अबरार का अब तक कोई सुराग नहीं लग सका है। इंजीनियरिंग का स्टूडेंट रहा अबरार बेहद शातिर है। पुलिस से बचने के लिए वह अपने परिजन से भी संपर्क नहीं कर रहा है। बाकी आरोपी अली, नबील, साद, फरहान और साहिल भोपाल सेंट्रल जेल में बंद हैं।

भोपाल की बीएचएमएस छात्रा की सड़क हादसे में मौत

सलकनपुर मंदिर से लौटते समय एक्सीडेंट में गई जान, दोस्त की हालत नाजुक

भोपाल (नप्र)। भोपाल के करोंद में रहने वाली बीएचएमएस छात्रा रविवार को दोस्तों के साथ सलकनपुर मंदिर गई थी। रात के समय सभी ने रास्ते में एक होटल में खाना खाया। यहां से दोस्त के साथ बाइक पर सवार होकर छात्रा भोपाल के लिए रवाना हुई। नर्मदापुरम रोड ओबैदुल्लागंज में बाइक एक ट्रैक्टर से टकरा गई। हादसे में युवती और उसका दोस्त गंभीर रूप से जख्मी हो गए। दोनों को इलाज के लिए नर्मदा अस्पताल में भर्ती कराया गया। सोमवार की सुबह इलाज के दौरान युवती की मौत हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक सोनम प्रजापति (21) पिता अमान सिंह प्रजापति मूल रूप से विदिशा की रहने वाली थी। भोपाल के करोंद इलाके में किराए का कमरा लेकर रह रही थी और यहीं एक प्राइवेट कॉलेज से बीएचएमएस सेकेंड ईयर की पढ़ाई कर रही थी।

मुख्यमंत्री ने खंडवा जिले को जल संरक्षण और पुनर्भंडारण कार्य में देशभर में प्रथम स्थान मिलने पर दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने देशभर में जल संरक्षण और जल के पुनर्भंडारण कार्य में खंडवा जिले को प्रथम स्थान मिलने पर प्रदेशवासियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने सभी राज्य सरकारों से वर्षा जल के संरक्षण और भूगर्भ जल भंडारण के लिए अभियान चलाने का आह्वान किया था। मध्य प्रदेश सरकार प्रधानमंत्री श्री मोदी की भावना के अनुरूप 'जल ही जीवन है' के नारे को चरितार्थ करने के लिए बारिश की बूंद-बूंद सहेजने के लिए संकल्पित है। प्रदेश सरकार ने इस वर्ष गुड़ी पड़वा से 90 दिनों तक चलने वाले जल गंगा संरक्षण अभियान की शुरुआत की, यह अभियान 30 जून तक जारी रहेगा। अभियान के अंतर्गत प्रदेशभर में जल संरचनाओं को संरक्षित करने के कार्य प्रगति पर हैं। गत वर्ष भी जल संरक्षण के लिए एक माह का अभियान चलाया गया था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को मीडिया को जारी संदेश में यह जानकारी दी।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश का इंदौर शहर स्वच्छता में नंबर-1 है, राजधानियों में भोपाल शीर्ष पर है, धार्मिक नगरी में उज्जैन नंबर-1 पर आ रही है। ऐसे में खंडवा को जल संरक्षण में प्रथम स्थान मिलना, निश्चितरूप से प्रदेशवासियों के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धि है। इसके लिए स्थानीय नागरिक, जनप्रतिनिधि, जिला प्रशासन के अधिकारी और बूंद-बूंद बचाने के प्रयास में जुटे सभी प्रदेशवासी बधाई के पात्र हैं। जल संरक्षण के लिए जारी विकास कार्यों में मध्य प्रदेश की स्थिति अन्य राज्यों से बेहतर है। अभी कई जिलों के आंकड़े आना शेष हैं। जल संरक्षण अभियान में प्रदेश की नदियों, तालाब, बाबड़ी, पोखर और कुओं का जीर्णोद्धार किया जा रहा है। प्रदेशभर में नए खेत तालाबों का भी निर्माण जारी है। इन सभी प्रयासों से शीघ्र ही प्रदेश नए दौर में प्रवेश करेगा।

रीवा, अम्बिकापुर व सिंगरौली इंटरसिटी ट्रेनों में लगेंगे एलएचबी कोच

यात्रियों को मिलेगी अधिक सुविधा और सुरक्षा ; इस महीने से होगी शुरुआत

भोपाल (नप्र)। यात्रियों को अब इंटरसिटी ट्रेनों में भी बेहतर यात्रा अनुभव मिलेगा। पश्चिम मध्य रेलवे ने रीवा, अम्बिकापुर और सिंगरौली के बीच चलने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस ट्रेनों में आधुनिक और सुरक्षित एलएचबी कोच लगाने का फैसला किया है। यह बदलाव यात्रियों की सुविधा, सुरक्षा और यात्रा मांग को ध्यान में रखते हुए किया जा रहा है। बता दें कि एलएचबी (लिंक हॉफमैन बुश) कोच उच्च तकनीक से निर्मित हैं, जो पारंपरिक आईसीएफ कोचों की तुलना में न केवल ज्यादा सुरक्षित हैं, बल्कि अधिक आरामदायक भी हैं। इनकी गति क्षमता भी अधिक होती है, जिससे ट्रेनें समय पर संचालन के लिहाज से बेहतर प्रदर्शन करती हैं। एल्यूमीनियम और स्टेनलेस स्टील से बने ये कोच हल्के व अत्याधुनिक डिज़ाइन के होते हैं, जिससे यात्रा के दौरान झटकों का अनुभव बेहद कम होता है।

6 जोड़ी ट्रेनों में लगेंगे कोच

- गाड़ी संख्या 12189/12190 रीवा-जबलपुर-रीवा इंटरसिटी एक्सप्रेस
- रीवा से एलएचबी रैक के साथ प्रारंभः 11 जुलाई 2025
- जबलपुर से एलएचबी रैक के साथ प्रारंभः 13 जुलाई 2025
- गाड़ी संख्या 11265/11266 जबलपुर-अम्बिकापुर-जबलपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस
- जबलपुर से प्रारंभ- 11 जुलाई 2025
- अम्बिकापुर से प्रारंभ- 12 जुलाई 2025
- गाड़ी संख्या 11651/11652 जबलपुर-सिंगरौली-जबलपुर इंटरसिटी एक्सप्रेस
- जबलपुर से प्रारंभः12 जुलाई 2025
- सिंगरौली से प्रारंभः 13 जुलाई 2025

वीर क्रांतिकारी राजा भभूतसिंह : सतपुड़ा की गोद से जन्मी आज़ादी की ज्वाला

एक ऐसा योद्धा जिसकी गाथा लोकगीतों में आज भी जीवित है

भोपाल (नप्र)। मध्य भारत की धरती, विशेषकर मालवा और नर्मदा तटवर्ती सतपुड़ा क्षेत्र, प्राचीन समय में अवंतिका महाजनपद का हिस्सा रही है। इस क्षेत्र की महादेव पहाड़ियाँ, ताप्ती और नर्मदा की घाटियाँ, हजारों वर्षों से धार्मिक और आध्यात्मिक साधना की भूमि रही हैं। यहाँ का कोरकू आदिवासी समाज भोलेनाथ को अपना आराध्य और कुल देवता मानता है। ऐसा विश्वास है कि कोरकू समाज भोलेनाथ के गणों और उनके अनुयायियों के वंशज हैं।

कोरकू समुदाय का प्रभुत्व 18वीं सदी तक इस सम्पूर्ण भूभाग में स्थापित था। राजा भभूतसिंह कोरकू, इसी परंपरा के एक ऐसे सिद्ध पुरुष और जागीरदार थे, जिनका प्रभुत्व पचमढ़ी, हर्राकोट, पातालकोट, तामिया, बोरी, मढ़ई, हरियागढ़, केसला, बैतूल और हरदा तक फैला हुआ था।

राजा भभूतसिंह का जीवन चमत्कारिक शक्तियों, आध्यात्मिक सिद्धियों और रणकौशल का अद्वितीय संगम था। वे तंत्र-मंत्र, जड़ी-बूटियों और वन औषधियों में पारंगत थे। कहा जाता है कि उन्होंने ऐसी दिव्य औषधियों का प्रयोग कर रखा था जिससे उनके शरीर पर किसी भी अस्त्र-शस्त्र का प्रभाव नहीं होता था। उन्होंने बूटी को अभिमंत्रित कर अपने शरीर में स्थापित किया था और इस कारण से लोहे के हथियार उनके शरीर को नुकसान नहीं पहुँचा सकते थे।

उनके शरीर की अमरता की कथा भी प्रसिद्ध है- राजा केवल हरे बांस की लकड़ी से ही मृत्यु को प्राप्त हो सकते थे, यह रहस्य केवल उनके सबसे निकटस्थ एक मित्र को ज्ञात था।

1857 के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जब तात्या टोपे और उनकी सेना अंग्रेजों से संघर्ष करते हुए सतपुड़ा पहुँचे, तब उन्होंने राजा भभूतसिंह की शरण ली। अक्टूबर 1858 के अंतिम सप्ताह में फतेहपुर के सरैया घाट से तात्या टोपे ने नर्मदा पार की और पचमढ़ी क्षेत्र में प्रवेश किया। राजा भभूतसिंह ने गुफाओं के माध्यम से उन्हें हरियागढ़, बोरदई और फिर मुलताई क्षेत्र की ओर भेजा।

अंग्रेज कप्तान जेम्स फोर्सिथ को जब यह पता चला कि भभूतसिंह ने तात्या टोपे को शरण दी है, तो उसने फतेहपुर के नवाब आदिल मोहम्मद खान के माध्यम से राजा से तात्या को सौंपने का आग्रह किया। लेकिन निडर भभूतसिंह ने अंग्रेजों के सामने झुकने से इनकार कर दिया।

जुलाई 1859 में राजा भभूतसिंह ने खुलेआम विद्रोह कर दिया। अंग्रेजों ने मिलिट्री पुलिस और मद्रास इन्फेंट्री की टुकड़ी को भेजा। देनवा घाटी में युद्ध हुआ जो लगभग छह महीनों तक चला। कोरकू योद्धाओं की गुप्त युद्ध नीति और पहाड़ी मार्गों की जानकारी अंग्रेजों के भारी हथियारों पर भारी पड़ी।

कहा जाता है कि युद्ध के दौरान राजा ने चिरौंठा के दानों को मंत्रों से अभिमंत्रित कर मधुमक्खियों में परिवर्तित किया और उन्हें युद्ध के एक हथियार के रूप में प्रयोग किया। भभूतसिंह द्वारा अपनाई गई छापामार युद्ध रणनीति बिल्कुल शिवाजी महाराज जैसी थी- अदृश्य रहकर प्रहार करना और जंगलों की भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाना।

एक बार राखी पर्व के अवसर पर भभूतसिंह अपनी मुंह बोली बहन से राखी बंधवाने खारी गाँव पहुँचे। वहीं किसी ने अंग्रेजों को गुप्त सूचना दे दी। अंग्रेजों ने उन्हें चारों तरफ से घेर लिया, लेकिन उनकी दिव्य शक्ति के कारण उन्हें बाँधना असंभव था। कहा जाता है कि राजा का एक विश्वासपात्र मित्र, जो उनकी शक्तियों और रहस्यों से परिचित था, अंग्रेजों से मिल चुका था। उसी की गद्दारी से भभूतसिंह को पकड़ने में अंग्रेज सफल हुए।

अंग्रेजों ने उन्हें यातनाएँ दीं, परंतु वे अपने खजाने और रहस्यों की जानकारी देने को तैयार नहीं हुए। जब शारीरिक यातनाएँ बेअसर रहीं, तो उन्हें अन्न-जल से वंचित रखा गया। इसके बावजूद वे अंत तक अडिग रहे।

1860 में अंग्रेजों ने उन्हें जबलपुर में मृत्युदंड दिया। कुछ प्रमाणों में कहा गया है कि उन्हें फांसी दी गई, वहीं कुछ में कहा गया कि उन्हें गोलियों से छलनी कर मार दिया गया। अंग्रेजों ने उनके नामोनिशान मिटाने के प्रयास में उनके राज्य को वन विभाग को सौंप दिया। यह घटना भारतीय इतिहास में पहली थी जब किसी आदिवासी की शहादत के बाद उनकी जागीर को वन क्षेत्र घोषित किया गया।

आज भी देनवा नदी के तट पर राजा भभूतसिंह का बग़ीचा और भभूतकुण्ड विद्यमान है, जिसमें बारहमासी जल भरा रहता है। चौरागढ़ मंदिर में उनके द्वारा चढ़ाए गए पत्थर के त्रिशूल आज भी दर्शनार्थियों को वीरता और भक्ति का संदेश देते हैं।

राजा भभूतसिंह की वीरता और बलिदान को कोरकू समाज ने लोकगीतों और भजनों के माध्यम से जीवित रखा है। पचमढ़ी क्षेत्र के गाँवों, मंदिरों और लोक संस्कृति में आज भी उनकी गाथाएँ सुनाई जाती हैं। राजा भभूतसिंह न केवल एक योद्धा थे, बल्कि वे जनजातीय चेतना और आत्मसम्मान के प्रतीक बन चुके हैं।

उनकी मृत्यु के बाद अंग्रेजों का कोप कोरकू समाज पर टूटा। अनेक कोरकू लोग पहाड़ों में छुप गए, कुछ अन्य गोंड जागीरदारों के पास चले गए, तो कुछ तात्या टोपे के साथ महाराष्ट्र तक पहुँच गए। अनेक लोगों ने अपनी पहचान छिपा ली और अपने गोत्र/सरनेम बदल लिए।

राजा भभूतसिंह की वीरगाथा, अंग्रेज अधिकारी एलियट की 1865 की सेटलमेंट रिपोर्ट में भी दर्ज है। वे सतपुड़ा क्षेत्र के शिवाजी कहे जाते हैं। अफसोस है कि जिस योद्धा ने अंग्रेजों से दो वर्षों तक सतत संघर्ष किया, वह इतिहास की पुस्तकों में उचित स्थान नहीं पा सका।

राजा भभूतसिंह कोरकू एक ऐसा नाम हैं, जो केवल कोरकू समाज का नहीं, पूरे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का गौरव हैं। उनका जीवन आदिवासी अस्मिता, देशभक्ति, और आध्यात्मिक शक्ति का जीवंत उदाहरण है। उनके बलिदान और शौर्य की गाथा को राष्ट्रीय पटल पर लाना, आज की पीढ़ी का नैतिक कर्तव्य बनता है।

संपादकीय

खंडवा : गौरवपूर्ण उपलब्धि

देश में जल संचय के मामले मे निमाड़ के खंडवा जिले का अव्वल आना तथा पानी बचाने को लेकर मप्र का परफार्मेंस देश की टॉप टेन रैंकिंग में चौथे स्थान पर रहना भी न केवल खंडवा जिले बल्कि पूरे मध्यप्रदेश के लिए गौरव का विषय है। इसके लिए लोगों को और प्रशासन को बधाई। खास बात यह है कि जिले में पानी को बचाने का पुनीत कार्य जनभागीदारी के माध्यम से किया गया है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा टॉप टेन जिलों, राज्यों और नगरीय निकायों की रैंकिंग जारी की गई है। इसमें खंडवा जिला टॉप टेन में नंबर वन है। वहीं मध्यप्रदेश भी टॉप परफॉर्मर राज्यों में शामिल है। एमपी की रैंकिंग टॉप टेन राज्यों में चौथी है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने यह रैंकिंग 31 एमई की आधी रात जारी की और इसे वेबसाइट पर अपलोड भी कर दिया। स्वाभाविक ही है कि इस गौरवपूर्ण इस उपलब्धि पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने खंडवा के नागरिकों, जन-प्रतिनिधियों और शासकीय अमले को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण सरकार की प्राथमिकता है। इस अभियान में पूरे प्रदेश के सभी जिलों में बेहतर से बेहतर कार्य होगा। उल्लेखनीय है कि प्रदेश में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के अंतर्गत जिलों में कुओं, बावड़ियों की सफाई करने के साथ खेत तालाब योजना और अन्य माध्यमों से जल स्रोत विकसित करने का काम कराया जा रहा है। जिला पंचायत सीईओ खंडवा नागार्जुन बी गौड़ा ने बताया कि इसके साथ ही जिले में 15 हजार कूप रिचार्ज पिट बनाए जा रहे हैं, करीब 10 हजार कार्य प्रगतिरत हैं। खंडवा जिला 7 मई की स्थिति में देश में तीसरे स्थान पर रहा है।

गौरतलब है कि बारिश के पानी का संचय करने के लिए भारत सरकार के केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल संचय, जन भागीदारी अभियान, राष्ट्रीय अभियान चलाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत देशभर के सभी जिलों में बारिश के पानी को एकत्र करने के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग रिचार्ज पिट, स्टॉप डैम, सोख्ता गड्ढा सहित विभिन्न प्रकार के कार्य किए जा रहे हैं। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय के अनुसार देशभर में ग्राउंड वाटर रिचार्ज के लिए कुल 27 लाख 62 हजार 621 काम शुरू किए गए हैं, जिसमें से 23 लाख 83 हजार 37 काम पूरे हो चुके हैं और 3 लाख 79 हजार 584 काम अभी चल रहे हैं। एमपी में 'जल गंगा संवर्धन अभियान' अंतर्गत खंडवा जिले को 4 हजार 700 कूप रिजार्च पिट बनाने का लक्ष्य मिला था, जिसे समय से पहले पूरा कर लिया गया है। जिले में 4 हजार 838 कूप रिचार्ज पिट बनाए गए हैं। जिला पंचायत सीईओ खंडवा नागार्जुन बी गौड़ा के अनुसार केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय द्वारा जल संचय जनभागीदारी अभियान पिछले साल शुरू किया था। इसके अंतर्गत वाटर कंजर्वेशन के लिए स्ट्रक्चर बनाए जाने का काम किया जाना है। इसमें बड़े डैम या तालाब बनाए जाने के बजाय छोटे स्ट्रक्चर बनाए जाने के निर्देश थे, जिसके लिए खंडवा की जनता ने मिलकर काम किया। खंडवा जिले की यह उपलब्धि इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि दुनिया भर में पेयजल संकट गहराता जा रहा है। जानकारों का कहना है कि विश्व में अगला विश्वयुद्ध जमीन के बजाए पानी के लिए ही होगा। क्योंकि पानी अब एक रणनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल हो रहा है। भारत सहित कई देशों में भूजल स्तर लगातार गिर रहा है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम और खेती का चक्र भी बदल गया है। पानी की लगातार होती कमी भविष्य के जलसंकट की चेतावनी है। ऐसे में खंडवा जैसे जिले में जल संवर्धन लेकर इतनी चेतना जागी है, यह सराहनीय है। इसे आगे भी कायम रहना चाहिए।

बड़ी सोच लोकल लेवल पर अब भी छोटी

नजरिया

सुधीर मोता

लेखक साहित्यकार हैं।

बताईये आपने हमने जीवन में कोई युद्ध शुरू होते देखा और फिर समाप्त भी होते देखा हो ? ये वाला भी ऐसा ही हुआ है। इस बीच दूसरी लड़ाई शुरू हो गई। अंदरूनी। होना था नहीं होना था ! हर लड़ाई निशान छोड़ जाती है। युद्ध विराम भी निशान छोड़ता है। हम शत्रु पर भारी पड़े सो हमारे यहां इसके निशान वैसे दिखाई नहीं देते जैसे वहां। हमें ऐसा लगता है कोई हमारी आंखों पर बेहद मोटे लेंस वाला चश्मा लगा गया। सब कुछ बड़ा बड़ा दिखने लगा। इस कर के हमारे यहां इस लड़ाई और युद्ध विराम के निशान कुछ अलग टाईप से दिखाई दिये। हम सीमा पर जा नहीं सकते थे, सो टीवी के सामने बैठ कर युद्ध में हिस्सा लिया। अब हमारे कुछ दोस्तों को जैसे कोई हथियार हाथ लग गया हो। जब तब फोन करते हैं -जल्दी आ जा एक बड़ी खबर है। हम बहुत उम्मीद से सारे काम छोड़ कर उन तक पहुंचते हैं तो पता चलता है कोई पुराना ही किस्सा है।

युद्ध विराम हो गया है। अचरज है कि अब आजकल युद्ध विराम ही होते हैं, याने स्थगित ही होते हैं समाप्त नहीं होते। बताईये आपने हमने जीवन में कोई युद्ध शुरू होते देखा और फिर समाप्त भी होते देखा हो? ये वाला भी ऐसा ही हुआ है। इस बीच दूसरी लड़ाई शुरू हो गई। अंदरूनी। होना था नहीं होना था! हर लड़ाई निशान छोड़ जाती है। युद्ध विराम भी निशान छोड़ता है। हम शत्रु पर भारी पड़े सो हमारे यहां इसके निशान वैसे दिखाई नहीं देते जैसे वहां। हमें ऐसा लगता है कोई हमारी आंखों पर बेहद मोटे लेंस वाला चश्मा लगा गया। सब कुछ बड़ा बड़ा दिखने लगा। इस कर के हमारे यहां इस लड़ाई और युद्ध विराम के निशान कुछ अलग टाईप से दिखाई दिये। हम सीमा पर जा नहीं सकते थे, सो टीवी के सामने बैठ कर युद्ध में हिस्सा लिया। अब हमारे कुछ दोस्तों को जैसे कोई हथियार हाथ लग गया हो। जब तब फोन करते हैं - जल्दी आ जा एक बड़ी खबर है। हम बहुत उम्मीद से सारे काम छोड़ कर उन तक पहुंचते हैं तो पता चलता है कोई पुराना ही किस्सा है। हमें उनकी ये चाल देर से समझ आई क्योंकि हमने उनसे कम टीवी देखा। पर इतना असर तो हुआ कि जैसे आईपीएल का मैच आधा रोकना पड़ा और मज़ा चला गया वैसे ही युद्ध का रोमांच जाता रहा। हमारे रन भी अच्छे थे बॉलिंग भी जोरदार कर ही रहे थे। मैच चलता रहता तो और भारी विजय होती। इस युद्ध ने हमें ऐसा चश्मा पहना दिया कि अब हम बहुत बड़ा बड़ा देखने लगे। पहले दिन अपने जम्मू में रहने वाले मित्र से बात हुई और उन्होंने जो बताया उससे तब हमें बहुत चिंता हुई। अगर उनके शहर पर दागे गये मिसाईली गोले किसी चूक से कारगर हो जाते तो क्या होता? युद्ध चलते चलते हमारी नजर इतनी चौड़ी हो गई कि ये सोच बदल गई। हमारे हर शॉट पर छक्का ही जायेगा, हमारी हर गेंद पर उनका खिलाड़ी बेबस होगा। लगातार जीत के बाद जैसे दिमाग पर पड़ते हैं, युद्ध के बाद ये निशान वैसे ही लग रहे। टीवी पर महिलायें तेज आवाज में चीखते हुए और पुरूष अहसान जताने वाले टोन में कहते हुए- इस बीच एक बड़ी खबर फलां जगह से आ रही है।

हमें अब जम्मू फम्मू की चिंता कम होने लगी पर ये भी है कि हमारी ये बड़ी सोच लोकल लेवल पर अब भी छोटी ही है। जैसे ही बाहर किसी गाड़ी का टायर फटता है हम कहीं छुपने की जगह ढूंढते हैं कहीं दुश्मन का गोला हमारे मोहल्ले में ही ना गिरा हो और अब हम पर गिर सकता है। अंतर्राष्ट्रीय लेवल पर हम बड़े साहसी हो चले। हमारी चिंतायें दूर हो चली। हमारे पास अनंत हवाई जहाज हैं। हमारे पास ड्रोन ही डोन हैं। मिसाईले ही मिसाईले हैं। अब बस कश्मीर वापस ले लेना हैं। दुश्मन को टुकड़ों में बांट देना है। हमारा

आत्मविश्वास इतना बड़ा हुआ कि कोहली 90 पर खेल रहा और अगली ही गेंद पर आउट हो सकता है ये ख्याल ही नहीं आता। कोहली नहीं, खेल तो हम रहे हैं और हमारे टोटके। जैसे ही वह आउट होता है उसके खराब शॉट पर गुफ्तार शुरू। उधर कोहली ने भी अच्छे खासे चलते फार्म के बाद टेस्ट क्रिकेट से सन्यास ले लिया। बहुत गलत किया। इसकी भी निंदा करना चाहते थे पर हमें ये बात उतनी बड़ी नहीं लगी जितनी युद्ध विराम। बहुत से खिलाड़ी लाइन में हैं सो धुंआधार बल्लेबाज़ी देखने का हमारा आनंद बना रहेगा, पर यह युद्ध? कितना अच्छा मौका हाथ लगा था और मैच रोक दिया गया। हमारी बड़ी सोच किसी छोटे मोटे कारण को मानने को तैयार नहीं। मूड बना था पूरे देश का। टी 20 मैच के आदी हो चले हम लोग अब ऊब ही न जायेंगे।

अब सोचना पड़ेगा अपनी सोच को छोटी कैसे किया जाये। बच्चे क्रिकेट खेलते समय किसी का कांच फूटने पर जैसे मैदान से खिसक लेते हैं कहीं हमने भी किसी परमाणु वाली गुदाम की खिड़की पर तो गेंद नहीं मार दी। खेल बंद कर निकल लेना ही ठीक है। हमारी कितने दिन तक आहत हुए बिन युद्ध में खड़े रहने की क्षमता है इसे परख तो नहीं लिया गया होगा। हमें राफेल विगेरे की संख्या पता है पर मिसाइलों ड्रोन होन की थोड़ी ना पता है। हम अपनी क्षमता को अक्षय पात्र में भरा सामान मानते हैं। अब इस सोच को छोटी करें? फिर बड़ी खबरें कैसे बनेंगी?

जिसे अब तक दूसरों ने पाला, अपना वह उत्पाती बच्चा घर ले आने से पहले हम कुछ छोटी छोटी बातें तो सोच समझ लें। वह बच्चा किस तरह पुरानी सोच से बाहर आयेगा, कब तक आयेगा? उस बच्चे को अपने असली मां बाप चाहियें भी या उसने कुछ अलग ही सबक रट रखे हैं। दुश्मन के और टुकड़े कर दो तब मन को शांति हो, पर बाद में, इन उत्पाती जीवों की संख्या हमने ही बढ़ा दी, ऐसी छोटी सोच मत रखना। लगता नहीं कि युद्ध के ये साइड इफेक्ट जल्दी दूर होंगे। हमारे घरेलू और कामकाजी सहायक तक बड़ी खबर-बड़ी खबर कहते हुए छोटे छोटे मामलों पर छुट्टी पर जाने लगे हैं। हम स्वयं गाड़ी चलाते हुए इतने आक्रामक हो चले कि क्या बतायें। इसके बाद भी रोज सुरक्षित घर पहुंच जाते हैं, सो आत्मविश्वास भी अपार बढ़ चला। हम भूल चले कि एक दिन एक शराबी ने हमारी गाड़ी का पीछे देखने वाला शीशा मरोड़ दिया था और भाग खड़ा हुआ। हम कुछ नहीं कर पाये। हम अपने भीतर इतने बढ़ चुके नये साहस और ज्ञान को कहां रखें, हम अपनी अपेक्षाओं की ललक कहां पूरी करें? हम भले ही घरेलू, डरपोक किस्म के इंसान हैं पर सपने देखना क्यों छोड़ें ? सचमुच की कोई बड़ी खबर हो तो ही हमसे बात करें आप। तब तक हम खुदई इस जंग के ये टुच्चे निशान कमती होने की बाट जोहते हैं। बड़ा समय लगेगा बड़ी खबर की इस लत से बाहर आने में।

पुनश्च- दुनिया में दो ही तो रिश्ते होते हैं। एक दोस्ती और दूसरा दुश्मनी। रक्त संबंधों में भी इन दो रिश्तों का नमक जब तक ना डले ये गले नहीं उतरते। नादान दोस्त और चालाक दुश्मन ये दो ही किस्में होतीं हैं। नमक मिर्च की तरह इन का कम ज़्यादा होना ही स्वाद बदमज़ा या मज़ेदार कर देता है। प्रेम और ईर्ष्या ये दो ही भाव होते हैं। राहगीर दो ही तरह के होते हैं- भूखे प्यासे और भरे पेट। भरे पेट वाले रायचंद हो जाते हैं। खुद रास्ता पूछते पूछते, पानी मांगते आपके गांव तक आये पर बाकी समय आपको ज्ञान देंगें। खबर देने वालों की कोई गलती नहीं है, खबर के प्यासे सदा प्यासे ही रहते हैं सो हर बार बड़ी खबर की पुकार सुन कर लपकते हैं जैसे किसी मृग मरीचिका के पीछे। ये खेल दिन रात चलता है। फैसला करने वाले हम कौन ? हमें तो खबरें देखते सुनते रहना है। जब तक हम खुद खबर न बन जायें। ये हमारी खबर कुछ के लिये बड़ी हो सकती है पर बाकी के लिये मामूली। जैसी भी हो, तब, अफसोस हम ना होंगे। और हां, हम विराम में लगते होंगे आपको, युद्ध में सदा से हैं और रहेंगे। आप हमें प्यार करते हैं सो आपको हमारी हर खबर बड़ी ही लगती है, ये प्रेम विराम कभी ना हो। जुग जुग जियें, जीने दें।

पेड़ को फोटो गैलरी से बाहर निकाल कर लायें

पर्यावरण

विवेक कुमार मिश्र

लेखक हिंदी के प्रोफेसर हैं।

पेड़ लगाने की जगह पेड़ को पालने की जरूरत है। पेड़ को पालना ही सबसे बड़ा मानव धर्म है। एक पेड़ के साथ सभ्यता और संस्कृति की पूरी परंपरा होती है एक पेड़ आपका जीवित इतिहास बन जाता है। उस पेड़ के पास से जब भी चलते हैं तो जैसे वह कहता है कि थक गये हो तो थोड़ा आराम कर लो। फिर जहां जाना है वहां चले जाना। इस तरह से पेड़ में एक ख्याल का भाव हर समय होता है। पेड़ जितना ही विस्तार लेता है उतना ही वह अपने लगाने वाले का विस्तार करता जाता है। पेड़ के भीतर ममत्व का भाव होता है। वह इतना बड़ा दाता होता है कि सभी के लिए कुछ न कुछ रखता है। कोई भी उसके पास से उदास होकर नहीं जाता। किसी से कुछ भी लिए बिना बस देता ही रहता है। यह जो देने का भाव है वहीं पेड़ की व्यापकता को रचता है। यहां जो पेड़ के साथ रहता है वह भी व्यापक होता जाता है। पेड़ अपनी कथा आदमी को सीखाता जाता है। पेड़ अकेले ही सबकुछ को रचने की शक्ति रखता है। जब कोई नहीं होता तो भी पेड़ ही अनंत की संभावना लेकर चलता है। पेड़ को सुनने सभी आ जाते हैं। जैसे जैसे गर्मी बढ़ती है वैसे ही ठंडी लहर की, ठंडी हवा की उम्मीद भी पेड़ से ही करने लगते हैं। जब गर्म हवाओं का भभुका उड़ रहा होता है, जब गर्म हवाएं मार ही डालने के लिए चल रही होती हैं तो खिड़की के पास एक छोटे से पेठ की हिलती टहनियां, पत्तियां कितना सुख देती हैं इसकी बस कल्पना ही कर सकते हैं पर जब इस तरह का दृश्य आंखों के सामने होता है तो बहुत सुकून मिलता है। ऐसे समय में सब बस पेड़ की ओर देख रहे होते हैं कि पेड़ झूमे, पेड़ की पत्तियां चलें फिर आनंद ही आनंद हो जायेगा। आदमी पंखे कूलर एसी चाहे जो चला लें पर जब तक पेड़ नहीं चलेगा, कोई ठीक से चल नहीं पाता। यह जो हरे भरे बाग बगीचे हैं या जो दूर दूर तक हरियाली दिख रही वह सब पेड़ों के कारण ही है और पेड़ चल पड़ते हैं हवा को लेकर और आदमी खुशी के गीत गाने लगता है। पेड़ की खुशी सबके लिए होती है। देखते देखते ही पूरा माहौल ठंडा हो जाता है ऐसा लगता है कि जैसे प्राकृतिक एसी चल पड़ा हो। जब पूरी प्रकृति में ठंडक हो जाती है तो सभी को राहत मिल जाती है। पेड़ का किसी से कोई भेदभाव नहीं होता। पेड़ आंतरिक सुरक्षा को केंद्र में रखकर चलता है। युगों युगों से पेड़ के सहारे लोग लम्बी पटरी पर न जाने कहां से कहां तक चलें गये। कितनी ही बार हम केवल पेड़ लगाते हैं और फिर लौटकर वहां नहीं जाते कि क्या हाल है उस पेड़ का वह पेड़ वहां पर है भी कि नहीं है और नहीं है तो क्यों नहीं है ? बस हमने पेड़ लगा दिया और हमारा काम खत्म हो गया। यह काफी नहीं है। जब कहीं पर पेड़ लगाने चलते हैं तो सबसे पहले उस पेड़ के पालन पोषण के बारे में सोचें कि इस पेड़ को कैसे बड़ा किया जाएं। कुछ सालों तक इसकी देखभाल की जाएं फिर पेड़ भी बचेगा और हमारी खुशी भी कई गुना बढ़ जायेगी। यदि हम पेड़ को पाल नहीं सकते उसे संरक्षित नहीं कर सकते तो हमारे पेड़ लगाने का कोई खास अर्थ नहीं होता। हम बस भीड़ का एक चेहरा भर बन जाते हैं कि और लोग पेड़ लगा रहे थे तो वहां हम भी खड़े हो गए या खड़े होने के साथ साथ पेड़ को पकड़ कर फोटो खींचवा लिए। यह भी सही बात है कि फोटो में जो पेड़ दिखता है जिसे बड़े जोश के साथ लगाया जाता है यदि उसे बचाने की ज़िद नहीं है तो फिर वह पेड़ बस एक दिन फोटो में ही दिखता है और फोटो का फ्रेम बनकर सजा रहता है। पेड़ को फोटो गैलरी से निकाल कर वास्तविक रूप में लगाने पालने और पोषित करने की जरूरत है। जब हम एक पेड़ को पालने के लिए आगे आते हैं तो पेड़ हमारे पूरे समाज को पालने के लिए चल पड़ता है। पेड़ की कथा में सब होते हैं। पेड़ किसी एक के लिए नहीं होता, न ही वह एक के अनुसार चलता है। वह तो सबके लिए और सबके साथ होता है। पेड़ जब चलता है तो सभी मगन हो जाते हैं। सबके लिए जीवन की कहानी रचता जाता है... यहां से सभी को छाया, हवा, लकड़ी और फल मिलते हैं और बिना किसी प्रतिदान के पेड़ देता ही देता रहता है। पेड़ को कुछ नहीं चाहिए वह तो बस देता है ऐसे में हम सबका धर्म बनता है कि पेड़ को बचाने के लिए आगे आयें। पेड़ रहेगा तो हम होंगे, हमारा भविष्य होगा। जहां दूर दूर तक कोई पेड़ नहीं है वहां कुछ नहीं होता, सन्नाटा ही सन्नाटा पसरा रहता है, ऐसी जगहों पर कोई चाहकर भी नहीं जा पाता। सब यहीं कहते हैं कि जल्दी से यह रास्ता काट लो यहां रह नहीं सकते, रुक नहीं सकते फिर यहां होने का क्या मतलब? और वहीं जहां कहीं कुछ पेड़ होते हैं हर किसी को आते जाते ही सही एक राहत का रास्ता मिल जाता है। बिना कुछ सोचे-समझे ही आदमी बैठ जाता है। इन गर्मियों में तो ये पेड़ ही बाहर निकलने पर सहारा देते हैं संभाल लेते हैं फिर हमें भी तो इनके लिए कदम बढ़ाना ही बढ़ाना होगा। कुछ पेड़ को लगाना पालना और पोषित करना होगा। जो छाया आज हमारे लिए पुरुखों ने रख छोड़ी है कुछ छाया तो हम भी रख छोड़े अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए। एक पेड़ के रास्ते सबका नाम हो जाता है।

जीवन की गति यदि कहीं से संभव होती है तो वह पेड़ के किनारे से ही होती है। पेड़ के साथ मनुष्य का जो रिश्ता है वह सहभावी का है। पेड़ और मनुष्य दोनों एक दूसरे के साथ रहते हैं। पेड़ संबल प्रदान करता है। जब कोई भी साधन न हो तो पेड़ कहता है कि मेरे पास बैठ जाओ। मैं सुन रहा हूं। तुम तो बस सुनाते जाओ तुम्हारी कथा में मेरी दिलचस्पी है। इस तरह जो लोग पेड़ को पालते पोसते हैं उनकी हर कथा पेड़ में दर्ज हो जाती है। पेड़ की हर टहनी पर आदमी का इतिहास दर्ज हो जाता है। आदमी फिर पेड़ में ही बोलने लगता है। पेड़ होकर आदमी बाहर आता है और फिर पेड़ में चला जाता है।

पेड़ एक सभ्यता और संस्कृति का जीवंत रूप है। आप कहीं हों कुछ करें इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ता पर जब आप पेड़ को लगाते हैं, पालते हैं और बचाते हैं तो आप पूरी पृथ्वी के लिए काम कर रहे होते हैं। पेड़ पर जब हम विचार करते हैं या पेड़ की संस्कृति के बारे में सोचते हैं तो सीधी सी बात है कि हम पूरी पृथ्वी की कथा कह रहे होते हैं। पेड़ हमें विस्तारित करता है। हमारी दुनिया को बहुत दूर तक देखना सीखाता है। पेड़ पौधे के लिए आज संरक्षण की सबसे बड़ी जरूरत है।

सायकिलों का भी अपना जमाना हुआ करता था

विश्व साइकिल दिवस

रमेशचंद्र शर्मा

स्वतंत्र लेखक

मौजूदा दौर में आप किसी भी शहर की सड़क पर खड़े हो जाइए आपको कारों का काफिला दिख जाएगा।दो पहिया वाहनों की रेलमपेल दिख जाएगी। मगर नहीं दिखेगी तो साइकिलें। अगर दिख भी गईं तो इक्कादुक्का वह भी भूले भटके। इन्हीं भूली भटकी गुजरे हुए जमाने की साइकिलों का कभी बोलबाला हुआ करता था।आजादी के पहले के भारत में मझौले और छोटे शहरों के अलावा कस्बों में सायकिल का दिख जाना बहुत बड़ी बात हुआ करती थीं। उस जमाने में सायकिल पर जाते हुए व्यक्ति को देखने के लिए अपने काम छोड़ कर अपने घरों के ओटलों, खिड़कियों और छज्जों पर लोग आ जाया करते थे। विमल मित्र के उपन्यास 'साहेब,बीवी और गुलाम' में ऐसा ही कुछ उल्लेख किया गया है। उल्लेख किया है कि जब कस्बे में पहली सायकिल आई तो लोग अपने दरवाजों पर सायकिल सवार को देखने के लिए खड़े हो गए।

उस जमाने की फिल्मों में नायक - नायिका की प्रेम कहानी की शुरुआत प्रायः सायकिलों के टकराने से हुआ करता था। अथवा बहुत इसरार के बाद नायिका नायक की सायकिल पर आगे वाले डंडे पर बैठ जाती थी। तब दर्शकों को एहतराम हो जाया करता था कि सायकिल की गति से अब इनके इश्क़ की सायकिल भी चल पड़ेगी।लड़कों और लड़कियों के झुंड को सामूहिक रूप से सायकिल चलाते देख गीतकार ने लिखा था, सायकिल पे जवानों की टोली देखी तो तबियत डोली..।

सायकिल चलाने के पहले सायकिल चलाना सीखनी होती थी। सायकिल सीखने वाला पीछे से एक हाथ से सायकिल की सीट पकड़ता था और दूसरे हाथ से कभी कैरियर तो कभी हैंडल पकड़ता था। यह प्रैक्टिस कई दिनों तक सुनसान सड़कों पर या मैदानों पर हुआ करती थी। एक बात पक्की हुआ करती थी कि बगैर गिरे कोई भी सायकिल चलाना नहीं सीख सकता था।कहा जाता था कि एक बार सायकिल से गिरने पर सीखने वाला निडर हो जाता था। सीखने की कोई तयशुदा अवधि नहीं होती थी। सायकिल चलाना कम से कम तीन दिन तथा अधिकतम सात दिन में सीख ही लेता था।इस दौरान कोई सीधे डंडे पर पांव डालकर सीख लेता तो कोई कैंची पद्धति से सीखता था। जब सीखने वाला सिद्ध हस्त हो जाता था तो अपनी उस्तादी बताने के लिए कभी कभी दोनों हाथ छोड़कर दो चार सेकंड सायकिल चलता था। इस करतब को बताने के दौरान जब गिरता था तो हाथ पर छिला जाते थे। घर पर पिटाई लगती थी वह अलग से।हां,जो सायकिल चलाना अच्छे से सीख जाता था वह डबल तो कभी ति बल सवारी बैठा कर सायकिल चलाता था।

जिसके पास सायकिल होती वह अपनी सायकिल का बड़े जतन से रखाव करता।हर हफ्ते ओवर ऑयलिंग करवाता।गाड़ी में अतिरिक्त स्पंजी मोटी सीट लगवाता।घंटी,हॉर्न और लाइट लगवाता। उस दौर में नगरपालिकाएं गाड़ी के लायसेंस जारी करती थी जो धातु के टुकड़े हुआ करते थे।जो गाड़ी के हैंडल के नीचे कसे जाते थे। डबल- तिबल सवारी होती तो ट्रैफिक पुलिस के जवान चालान बना देते। लिहाजा चौराहे पर ट्राफिक पुलिस के सिपाही को देख कर पीछे बैठे चौराहे पर उतर जाते और चौराहे पार फिर बैठ जाते थे।

सन् 1817 में जिस सायकिल का आविष्कार हुआ उसकी शुरुआती कीमत 20 रुपए हुआ करती थी। अब तो बच्चो की सायकिल ही 10 हजार रुपए से ज्यादा है। सायकिल का पूरा नाम बाइसिकल हुआ करता था जो कालांतर में सायकिल हो गया। किसी जमाने में सायकिल स्टेटस सिंबल हुआ करता थी लोग उसकी बड़ी इज्जत किया करते थे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

ईमानदारी की रिसर्च में बेईमानी

व्यंग्य

संजय जैन

(लेखक और व्यंग्यकार)

हाल ही में खबर आई कि ईमानदारी की रिसर्च में भी बेईमानी हो गयी। प्रश्न यह है कि ईमानदारी पर रिसर्च करते-करते बेईमानी का विचार कैसे हुई? लगता है शुरुआत में तो रिसर्च ईमानदारी से की गई होगी पर जब आस-पास देखा होगा तो चारों ओर बेईमानी ही बेईमानी नजर आयी होगी या फिर ईमानदारी की रिसर्च को लेकर ईमानदारों को ढूंढने में दिक्कत आ रही होगीं। तो रिसर्च करने वाले ने सोचा होगा कि जब सारे कुएँ में भांग डली है तो कौन देखेगा कि क्या किया गया। तो उसने भी बेईमानी कर ली।

वैसे यह रिसर्च हमारे यहां होती तो ज्यादा अच्छे से और ज्यादा कायदे से की जा सकती थी। क्योंकि हमारे यहां ईमानदारी से बेईमानी की रिसर्च कराने की लम्बी परंपरा है। हमारे यहां जितनी रिसर्च नहीं होती उससे ज्यादा हम रिसर्च में उपाधियां बांट देते हैं। वैसे रिसर्च के नाम पर हम जो भी करते हैं पूरी ईमानदारी से करते हैं। इतनी ईमानदारी से कि किसी को भी पता नहीं चलता कि बेईमानी की गई है। इस मौलिक कला की खोज और विकास हमारे यहां के विश्वविद्यालयों में ही हुआ है। अब हमारे मित्र चंदू जी को ही लें उन्होंने रिसर्च को लेकर जो गहन रिसर्च कर रखी है वह तो अद्भूत है।

रिसर्च को लेकर आदि से अंत तक की प्रक्रिया के वो जाने-माने विशेषज्ञ हैं। रिसर्च को विषय कैसे चुनना, फिर उसके लिये अध्ययन और शोध सामग्री कहां से और कैसे जुटाना। फिर उसे रिसर्च पेपर का रूप देना । इस तरह से कि रिसर्च हर बार नयी सी लगे। फिर उस रिसर्च पेपर को प्रकाशित कराना। इन सब में चंदू जी की भारी विशेषज्ञता है। कह सकते हैं वो रिसर्च की दुकान भी हैं। वो तो अब तक सैंकड़ों को सफलता और ईमानदारी से रिसर्च करा चुके हैं।

जो बेचारे भाई ईमानदारी पर रिसर्च में बेईमानी करते हुये पकड़ा गये, काश चन्दू जी के संपर्क में आ जाते तो शायद पकड़ में नहीं आते और सफलतापूर्वक रिसर्च कर लेते। अब जब वो पकड़ा गये तो हमने चन्दू जी से इस पूरे प्रकरण पर उनके एक्सपर्ट कमेंट जानना चाहे। तो चंदू जी का कहना था कि देखिये एक तो यह मामला हमारे देश का नहीं है, हमारे यहां तो इस बात की गुंजाईश ही नहीं है कि कोई ईमानदारी से बेईमानी करे और पकड़ा जाये। पकड़ा वही जाता है बेईमानी करने में भी बेईमानी कर देता है। हम उनकी गुढ़ बात को समझ नहीं पाये तो आग्रह किया कि गुरु थोड़ा और स्पष्ट करें।

चंदू जी ने हमारी मूढ़ता को लगभग धिक्कारते हुए कहा कि जो रिसर्च कर रहे थे ईमानदारी पर, उन्हें इतनी तो ईमानदारी रखना थी कि बेईमानी से जो कर रहे थे उसको ईमानदारी के आवरण से ढक देते तो पकड़ में नहीं आते। उनकी बात अब कुछ-कुछ समझ में आ रही थी। हमने कहा तो अब भी कुछ हो सकता है क्या? उन्होंने कहा-क्यों नहीं यदि वो हमारी दुकान पर सम्पर्क करें तो हमारे सारे मामले को फिर से सुधार सकते हैं और उनकी रिसर्च की ईमानदारी को स्थापित कर सकते हैं क्योंकि दुनिया कोई भी विचार मौलिक नहीं है और हर विचार कभी न कभी किसी न किसी के द्वारा कर लिया गया है। हम उनकी इस अनूठी रिसर्च के आगे फिर एक बार नतमस्तक हो गये।

साइकिल दिवस

गोविन्द सेन

साहित्य और सिनेमा में साइकिल

जून के महीने में गर्मी अपने चरम पर होती है । इस महीने में बिगड़ते पर्यावरण पर हमारा ध्यान सर्वाधिक जाता है। उल्लेखनीय है कि पर्यावरण के लिहाज से जून का महीना बहुत महत्वपूर्ण है । 3 जून को विश्व साइकिल दिवस और 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है । साइकिल पर्यावरण मित्र मानी जाती है। सबसे पहले साइकिल 1817 जर्मनी के कार्ल वॉन ड्राइस ने एक साइकिल बनाई जिसे स्विफ्टवॉकर कहा गया। यह लकड़ी की बनाई गई थी । इसमें पैडल नहीं थे । इसे पैरों से धकेल कर चलाया जाता था । लेकिन रूस के एक मैकेनिक इफ़ीम अरतामोनव ने वर्ष 1800 में ही साइकिल बना ली थी । इसका पेटेंट उसने नहीं कराया था इसलिए साइकिल की ईजाद का श्रेय उसे नहीं मिला । 1839 में स्कॉटलैंड के किर्कपैट्रिक मैकमिलन ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पहिए को चलाने के लिए पैडल थे ।

साइकिल दो पहिया वाहन है जो मनुष्य के बल से चलने वाली सरल मशीन है। इसे चलाते हुए बच्चों को अनिर्वचनीय ख़ुशी मिलती है। जिसने जीवन में एक बार साइकिल चलाने का रस चख लिया हो, वह उसे जीवन भर नहीं भूल पाता। मोटर साइकिल या कार चलाने वाले ने पहले-पहले साइकिल ही सीखी होगी। साइकिल देखकर बड़े-बड़े से बड़ा आदमी भी इसे चलाने को उत्सुक हो जाता है। अपनी उम्र और पद की गरिमा सब भूल जाता है। उसके भीतर बैठा बच्चा जाग जाता है।

जून के महीने में गर्मी अपने चरम पर होती है । इस महीने में बिगड़ते पर्यावरण पर हमारा ध्यान सर्वाधिक जाता है । उल्लेखनीय है कि पर्यावरण के लिहाज से जून का महीना बहुत महत्वपूर्ण है । 3 जून को विश्व साइकिल दिवस और 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है । साइकिल पर्यावरण मित्र मानी जाती है।

सबसे पहले साइकिल 1817 जर्मनी के कार्ल वॉन ड्राइस ने एक साइकिल बनाई जिसे स्विफ्टवॉकर कहा गया। यह लकड़ी की बनाई गई थी। इसमें पैडल नहीं थे। इसे पैरों से धकेल कर चलाया जाता था । लेकिन रूस के एक मैकेनिक इफ़ीम अरतामोनव ने वर्ष 1800 में ही साइकिल बना ली थी । इसका पेटेंट उसने नहीं कराया था इसलिए साइकिल की ईजाद का श्रेय उसे नहीं मिला। 1839 में स्कॉटलैंड के किर्कपैट्रिक मैकमिलन ने एक ऐसी साइकिल बनाई जिसमें पहिए को चलाने के लिए पैडल थे।

साहित्य और सिनेमा दोनों ही जीवन की हलचलों को दर्ज करते हैं। दोनों ही जन-भावनाओं, सामाजिक सरोकारों, संस्कृति और उनके क्रियाकलापों को चित्रित करते हैं। दोनों ही लोकप्रिय और प्रभावी माध्यम हैं। प्रारंभ से ही साइकिल मनुष्य के जीवन का अनिवार्य हिस्सा रही है। खासकर श्रमजीवी वर्ग के आवागमन के लिए यह सबसे सस्ता साधन रही है। मजदूरों को अपने कार्य स्थल तक पहुँचने के लिए यह बड़ी सहायक रही है।

सिनेमा में साइकिल का महत्वपूर्ण स्थान है। 1948 में बनी 'द साइकिल थीफ' एक विश्व प्रसिद्ध इतालवी फिल्म है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद रोम में फिल्म का नायक एंटोनियो रिक्की अपनी पत्नी मारिया और बेटे ब्रूनो के साथ रहता है। उसे परिवार के भरण-पोषण के लिए काम की सख्त जरूरत है। उसे पोस्टर चिपकाने की नौकरी मिलती है। लेकिन इसके लिए साइकिल जरूरी थी। उसकी साइकिल गिरवी पड़ी थी। आखिर घर का कीमती सामान बेचकर गिरवी साइकिल को छुड़ा लिया जाता है। काम के पहले ही दिन जब एंटोनियो सीढ़ी पर सबसे ऊपर खड़ा होकर दीवार पर पोस्टर चिपका रहा होता है, एक युवक उसकी साइकिल चुरा लेता है। एंटोनियो उसका पीछा करता है लेकिन उसे पकड़ नहीं पाता। पूरी फिल्म साइकिल चोरी से उपजी स्थितियों पर केन्द्रित है। इस चोरी से ब्रुनो, एंटोनिया और मारिया का जीवन कितना दूभर और दयनीय हो जाता है । फिल्म इसे बहुत मर्मस्पर्शी ढंग से चित्रित करती है।

प्रकाश झा की हिंदी फिल्म 'मट्टो की साइकिल' भी गरीब दिहाड़ी मजदूर मट्टो की साइकिल पर केन्द्रित है। मट्टो के परिवार में उसकी पत्नी और दो छोटी बेटियाँ हैं। उसकी इकलौती टूटी-फूटी साइकिल उसकी आजीविका में सहायक है। वह उस साइकिल से ही प्रतिदिन भवन निर्माण के काम के लिए शहर जाता है। वह रेत सीमेंट का मसाला बनाना, ईंटें ढोना, सरिया खींचने जैसे मेहनत के काम करता है। यह साइकिल उसके काम पर जाने के लिए एक जरूरी साधन है। एक दिन उसकी साइकिल को एक ट्रैक्टर कुचल जाता है। मट्टो को अपार दुख होता है। उसकी साइकिल इतनी टूट-फूट जाती है कि उसे ठीक नहीं किया जा सकता। साइकिल न होने से वह समय पर काम पर नहीं पहुँच पाता। उसकी मजदूरी का नुकसान होता है। इससे उसका परिवार प्रभावित होता है। आखिर वह जैसे-तैसे एक नई साइकिल खरीदता है। लेकिन वह साइकिल भी चोरी हो जाती है। जब वह मदद के लिए मुखिया के पास जाता है, तो वह मट्टो की मदद करने से इनकार कर देता है। निराश मट्टो वापस लौटता है । पार्श्व में गाना बजता है-'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा'। इस तरह फिल्म एक बहुत बड़ी विडंबना को सहजता से उजागर कर देती है।

साहित्य में भी साइकिलिंग के अनुभवों को बखूबी अंकित किया गया है। यूँ तो साइकिल चलाना आसान लगता है लेकिन साइकिल सीखना सचमुच टेड़ी खीर है। सुदर्शन की एक सुप्रसिद्ध कहानी है-'साइकिल की सवारी'। कहानी में लेखक ने साइकिल सीखने के दिलचस्प अनुभवों को दर्ज किया है। कहानी की प्रारंभिक पंक्तियाँ देखिए-'भगवान ही जानता है कि जब मैं किसी को साइकिल की सवारी करते या हारमोनियम बजाते देखता हूँ तब मुझे अपने ऊपर कैसी दया आती है। सोचता हूँ, भगवान ने ये दोनों विद्याएँ भी खूब बनाई हैं। एक से समय बचता है, दूसरी से समय कटता है। मगर तमाशा देखिए, हमारे प्रारब्ध में कलियुग की ये दोनों विद्याएँ नहीं लिखी गईं। न साइकिल चला सकते हैं, न बाजा ही बजा सकते हैं। पता नहीं, कब से यह धारणा हमारे मन में बैठ गई है कि हम सब कुछ कर सकते हैं, मगर ये दोनों काम नहीं कर सकते हैं।'

सबके साइकिल से जुड़े अपने अनुभव होते हैं। सबकी साइकिल सीखने के दौरान गिरने-पड़ने, चोरी होने, चेन उतरने आदि अपनी कहानियाँ होती हैं । ज़रा सा कुरेदने पर साइकिल से जुड़े कई संस्मरणों सामने आ जाते हैं। 'यादों में चलती साइकिल' शीर्षक से यादवेन्द्र जी ने एक अनोखी किताब संपादित की है। इसमें पचासों लेखक, कवि, पत्रकार, चित्रकार, फोटोग्राफर, शिक्षक आदि विभिन्न पेशों से जुड़े देश-विदेश के अनेक लोगों के साइकिल से जुड़े रोचक संस्मरण और किस्से हैं।

ट्रैवलॉग चर्चा

ब्रजेश कानूनगो

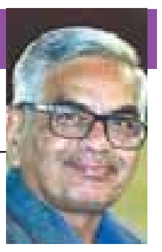

सफेद महाद्वीप की रोमांचक सैर

अंटार्कटिका, जिसे 'सफेद महाद्वीप' भी कहा जाता है, पृथ्वी का पाँचवाँ सबसे बड़ा महाद्वीप है, जो दक्षिणी ध्रुव के पास स्थित है। यह दुनिया का सबसे ठंडा, शुष्क और हवादार महाद्वीप है, जो दक्षिणी महासागर से घिरा हुआ है। अंटार्कटिका में गर्मियों के दौरान, सूर्य कभी नहीं डूबता है, और सर्दियों के दौरान, सूर्य कभी नहीं उगता है। अंटार्कटिका में कई झीलें हैं, जिनमें से कुछ बर्फ के नीचे भी हैं। अंटार्कटिका का लगभग 98 प्रतिशत हिस्सा मोटी बर्फ की चादर से ढका हुआ है, जिसमें पृथ्वी के ताजे पानी का लगभग 75 प्रतिशत हिस्सा मौजूद है। यहां औसत वार्षिक वर्षा लगभग 2 इंच से भी कम होती है, दरअसल यह एक बर्फीला रेगिस्तान है। अंटार्कटिका पृथ्वी पर सबसे ऊंचा महाद्वीप है, जिसकी औसत ऊंचाई 8,200 फीट (2500 मीटर) है। यहां विशिष्ट वन्यजीव प्रजातियां पाई जाती हैं, जैसे पेंगुइन, सील और व्हेल।

अंटार्कटिका के निर्माण की भी एक जटिल और लंबी प्रक्रिया है, जो लगभग 4.5 अरब वर्ष पूर्व से शुरू हुई थी। पृथ्वी पर लगभग 550 मिलियन वर्ष पूर्व, गोंडवाना नामक एक महाद्वीप का निर्माण हुआ था, जिसमें अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, और अंटार्कटिका आदि का भूभाग शामिल था। बाद में लगभग 180 मिलियन वर्ष पूर्व, गोंडवाना का टूटना शुरू हुआ, और अंटार्कटिका धीरे-धीरे खिसकता हुआ सुदूर दक्षिण में पहुँच गया। लगभग 25 मिलियन वर्ष पूर्व, अंटार्कटिका पूरी तरह से अन्य महाद्वीपों से अलग हो गया और अपनी वर्तमान स्थिति में पहुँच गया। 34 मिलियन वर्ष पूर्व, अंटार्कटिका में बर्फ का निर्माण शुरू हुआ, जिसने धीरे-धीरे पूरे द्वीप को ढक लिया। आज, अंटार्कटिका का लगभग 98 प्रतिशत भाग बर्फ से ढका हुआ है।

अंटार्कटिका महाद्वीप इस पृथ्वी पर एक मात्र ऐसी जगह है जहां शायद ही कोई भी मनुष्य स्थाई रूप से निवास करता हो। यहां जो भी व्यक्ति पहुंचता है वह या तो किसी अनुसंधान के उद्देश्य या फिर अब जब दुनिया के इस बिरले हिस्से पर पर्यटकों की रुचि जागृत हो गई है, तब बड़ी राशि खर्च कर किन्हीं टूर ऑपरेटरों के माध्यम से कुछ दिनों में यहां के नजारों को देखता है। यहां के हिमशैलों और जीवों को बहुत नजदीक से देखकर रोमांचित होता है। अंटार्कटिका की ये पर्यटन यात्राएँ मुख्य रूप से दर्शनीय स्थलों के आनंद और वन्यजीवों के अवलोकन के साथ साथ मनोरंजक एवं ऐश्वर्यपूर्ण व सुकून भरे सुविधाजनक पर्यटन पर केंद्रित होती हैं।

इस सुदूर महाद्वीप की यात्रा, जिसने 1966 में पहले आधुनिक पर्यटक अभियान के बाद लोकप्रियता हासिल की, आमतौर पर दिसंबर से फरवरी तक दक्षिणी गोलार्ध के गर्मियों के महीनों के दौरान होती है। पर्यटक कई तरह की गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं, जैसे कि कयाकिंग, स्कीइंग और कैंपिंग, जिनका नेतृत्व अक्सर अनुभवी गाइड करते हैं, जिनमें पूर्व शोधकर्ता भी शामिल हैं। अंतर्राष्ट्रीय अंटार्कटिका टूर ऑपरेटर्स एसोसिएशन (IAATO) द्वारा प्रबंधित नियम लागू हैं, जो जहाजों के आकार और लोकप्रिय स्थलों पर आगंतुकों की संख्या को सीमित करके जिम्मेदार पर्यटन प्रथाओं को सुनिश्चित करते हैं।

हाल के वर्षों में, अंटार्कटिक पर्यटन में रुचि बढ़ी है, 2022-23 सीज़न में 105,000 से अधिक आगंतुकों ने रिकॉर्ड दौरा किया है, जो साहसिक और पारिस्थितिक पर्यटन की ओर बढ़ते रुझान को दर्शाता है। ट्रैवल ब्लॉगर नवांकुर चौधरी (डॉक्टर यात्री) के ट्रैवल वीडियो श्रृंखला के माध्यम से हमने उनके साक्षात अनुभवों को अपने को आभासी रूप से महसूस करने की कोशिश की है।

नवांकुर ने अपनी यह यात्रा अर्जेंटीना के उशआइया पोर्ट से वर्ल्ड ट्रैवल कंपनी के बड़े क्रूज से की। इस संपूर्ण यात्रा के लिए उन्हें कुल साढ़े आठ लाख रुपयों का भुगतान करना पड़ा। हालांकि इस में कुछ खास गतिविधियों के अलावा सारी व्यवस्थाएं और पर्यटन गाइड व साधन शामिल थे। इस बड़े जहाज में सात मंजिलें थी जिनमें रेस्टोरेंट, पुस्तकालय, इनडोर गेम्स, स्वीमिंगपूल , जिम,बार, ऑडिटोरियम आदि के अलावा छत पर एक हेलीपेड भी स्थित था। कमरों में सभी आधुनिक सुविधाओं के साथ एक खुली गैलरी भी थी जहां बैठकर समूची यात्रा का आनंद उठाया जा सकता था। नवांकुर के साथ एक अन्य सिख ट्रैवलर भी थे जो पंजाबी में वीडियो बनाते हैं।

अंटार्कटिका तक पहुंचने के लिए क्रू यात्रा का भी बड़ा रोमांच है। जहाज के भीतर का अनुभव जहां आधुनिक विकसित जीवन शैली से रूबरू होने का मौका देता है, वहीं प्रबंधन द्वारा पल पल दी जाने वाली सूचनाएं, नियमित ऑडिटोरियम में बैठकों के जरिए यात्रा की तैयारियों, सावधानियों, क्या करना है, क्या नहीं करना है, निर्देशित करना बड़ा दिलचस्प और जरूरी हिस्सा होता है। जहाज में यात्रा कर रहे लगभग 200 पर्यटकों को छोटे छोटे समूहों में बाटकर उन्हें एक साथ अन्य गतिविधियों से जोड़ना, छोटी नावों से स्थलों पर ले जाकर प्रकृति से परिचित कराना, जल जीवों और थल जीवों से साक्षात्कार कराना। यह सब देखना बहुत रोमांचित करता है। सबसे ध्यान रखने वाली बात यह कि पर्यटक के कपड़ों से लेकर उनके शरीर को वेक्यूम क्लीन और सेनेटाइज करना ताकि किसी भी प्रकार के संक्रमण से खुद को और अंटार्कटिका के पर्यावरण को नुकसान न हो सके।

जहाज याने क्रूज प्रबंधन प्रतिदिन की कार्यसूची प्रत्येक समूह को देता है, दूरबीन, जैकेट आदि भी दिए जाते हैं। प्रतिदिन सेफ्टी ड्रिल सुरक्षा अभ्यास करवाया जाता है। समुद्र में ड्रेक पैसेज जहां समुद्रों के मिलन से खरनाक गतिविधियाँ भारी तबाही का खतरा उत्पन्न करते हैं, ऐसी स्थितियों में यात्री को सचेतक उपाय बताए जाते हैं। जहाज जमे हुए समुद्र की बर्फ काटकर अपना रास्ता बनाते हुए हिमशैलों और धरती के निकट तक पहुंचता है। समूह में बांटे गए पर्यटकों को छोटी छोटी रबर की बोटों में बैठाकर किनारे पर पहुंचाया जाता है। कभी पेंग्विन समूह तो कभी सील,व्हेल जैसी विभिन्न प्रजातियों के वन्यजीव साक्षात देखे जाते हैं। अंटार्कटिका के बर्फीले परिदृश्य, ग्लेशियर, और हिमशिखर, टूटते, बनते नए हिम खंडों को देखना बहुत ही मनोरम और भव्य होता है। अदभुत होती है यह सुंदरता। अंटार्कटिका के वैज्ञानिक अनुसंधान केंद्र भी पर्यटकों को विज्ञान और अनुसंधान के बारे में जानने का अवसर प्रदान करते हैं। पर्यटन का यह अनुभव मूल पर्यावरण और दुर्लभ वन्य जीवन के लुभावने दृश्य प्रस्तुत करता है।

अंटार्कटिका पर किसी भी देश का स्वामित्व नहीं है, बल्कि यह अंटार्कटिक संधि के तहत एक अंतर्राष्ट्रीय समझौते द्वारा शासित है, जो अंटार्कटिका को केवल शांति और वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए उपयोग करने का प्रावधान करता है। अंटार्कटिका वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, और विभिन्न देशों के कई शोध स्टेशन यहां स्थित हैं। भारत के भी दो सक्रिय अनुसंधान केंद्र मैत्री और भारती यहां स्थापित हैं।

बढ़ती पर्यटन गतिविधियों से अंटार्कटिका में संभावित मिट्टी के कटाव और प्रदूषण जैसी पर्यावरणीय चिंताओं को भी बढ़ाता है। टूर ऑपरेटर पर्यटकों को जलवायु परिवर्तन के पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में शिक्षित करने पर हर संभव जोर देते हैं, जिसका उद्देश्य इस नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण को बढ़ावा देना है। जैसे-जैसे उद्योग का विस्तार जारी है, पर्यटन और संरक्षण के बीच संतुलन बनाना अंटार्कटिका के भविष्य के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। आज के दौर में पर्यटन प्रसार और पर्यावरण संरक्षण के उपाय संभवतः एक ही क्रूज पर सवार हैं। अंततः दुनिया की यह रीत भी है। सब साथ साथ चलता रहता है। अंटार्कटिका का पर्यावरण बढ़ते पर्यटन के बावजूद अपने मूल स्वरूप में बना रहेगा ऐसे उपाय हम अवश्य करेंगे, इसी उम्मीद तो की ही जा सकती है।

भरोसे का भ्रम: डिजिटल घोटालों के बढ़ते जाल में फंसा भारत

विचार

डॉ. भूपेंद्र कुमार

घोटाले केवल डेटा या पासवर्ड चुराने का मामला नहीं हैं - ये इंसानी भरोसे को निशाना बनाते हैं। स्कैमर अब साइकोलॉजिस्ट, इंजीनियर और मार्केटिंग एक्सपर्ट बन चुके हैं। वे 'आपका बैंक खाता ब्लॉक हो जाएगा' जैसे संदेशों से डराते हैं, 'आपकी मदद चाहिए' जैसे वाक्यों से सहानुभूति जगाते हैं, और वीडियो कॉल, डीपफेक वॉइस या फेक वेबसाइटों से विश्वसनीयता का मुखौटा पहनते हैं।

ऐसा मेरे साथ नहीं हो सकता - जब तक कि हो न जाए। यह सोच आज करोड़ों भारतीयों को भारी पड़ रही है। डिजिटल तकनीक जितनी तेज़ी से हमारी ज़िंदगी में घुली है, उतनी ही चुपके से धोखे का एक नया रूप हमारे दरवाज़े पर दस्तक दे रहा है- डिजिटल घोटाले।

जब तकनीक दोस्त नहीं, हथियार बन जाए

कभी आपने सोचा है कि एक आम सा फ़ोन कॉल आपकी ज़िंदगी की जमा-पूंजी उड़ा सकता है? एक शांत आवाज़, एक भरोसेमंद तस्वीर या वीडियो, और एक भरोसे का जाल – बस, इतना ही काफी है। लोग सोचते हैं कि वे स्मार्ट हैं, सतर्क हैं। लेकिन घोटालेबाज इससे कहीं आगे निकल चुके हैं।

86 वर्षीय महिला से 20 करोड़, रिटायर्ड व्यक्ति से 83 लाख, OTP शेयर करते ही उड़ते लाखों – ये कोई अपवाद नहीं, आज की हकीकत है।

धोखा सिर्फ तकनीकी नहीं, भावनात्मक भी है

ये घोटाले केवल डेटा या पासवर्ड चुराने का मामला नहीं हैं - ये इंसानी भरोसे को निशाना बनाते हैं। स्कैमर अब साइकोलॉजिस्ट, इंजीनियर और मार्केटिंग एक्सपर्ट बन चुके हैं। वे 'आपका बैंक खाता ब्लॉक हो जाएगा' जैसे संदेशों से डराते हैं, 'आपकी मदद चाहिए' जैसे वाक्यों से सहानुभूति जगाते हैं, और वीडियो कॉल, डीपफेक वॉइस या फेक वेबसाइटों से विश्वसनीयता का मुखौटा पहनते हैं।

शिकारी तकनीक, मासूम शिकार

क्लोन की गई आवाज़ें, नकली वेबसाइटें, QR कोड से पेलोड डाउनलोड, और AI से बने नकली अधिकारी - सबकुछ असली जैसा दिखता है, लेकिन होता है छल। और सबसे खतरनाक बात? इनका शिकार केवल बुजुर्ग या कम पढ़े-लिखे नहीं हैं। IIT, IIM से पढ़े लोग, अधिकारी, CEO – कोई सुरक्षित नहीं है।

CERT-IN की एक रिपोर्ट बताती है कि 65% साइबर धोखाधड़ी के शिकार स्नातकोत्तर डिग्री वाले लोग थे। डिजिटल छल का जाल इतना बारीक बुना गया है कि तकनीकी जागरूकता भी उसे पूरी तरह काट नहीं पाती।

पहला घंटा: हार और बचाव के बीच की रेखा

अगर आप किसी धोखाधड़ी का शिकार होते हैं, तो पहला घंटा निर्णायक हो सकता है। तुरंत इंटरनेट डिस्कनेक्ट करें, बैंक को सूचित करें, पासवर्ड बदलें और cybercrime.gov.in पर शिकायत दर्ज करें। हेल्पलाइन 1930 पर कॉल करना आपकी पहली प्रतिक्रिया होनी चाहिए।

क्या सरकार और तकनीक से उम्मीद की जा सकती है?

जी हाँ। अब सरकार AI आधारित खतरा विश्लेषण, FIDOw आधारित प्रमाणीकरण, और ब्लॉकचेन आधारित सत्यापन जैसे कदम उठा रही है। डिजिटल इंडिया अधिनियम और साइबर सुरक्षा नीति 2024 जैसे कानून भी जल्द प्रभावी होंगे। लेकिन इन सबके बावजूद, असली सुरक्षा आपके हाथ में है।

सतर्कता: आपकी सबसे बड़ी सुरक्षा
OTP या पासवर्ड कभी न साझा करें।
किसी भी कॉल की सच्चाई की पुष्टि करें।
जल्दी फैसला न लें – वक्त लेकर सोचें।
संदिग्ध लिंक, QR कोड या ऐप्स से बचें।

अंतिम बात

भरोसा अब एक हथियार बन चुका है। अगली बार जब कोई आपको 'आपका बैंक अधिकारी' या 'पुराना दोस्त' बनकर कॉल करे- सवाल ज़रूर पूछें। हो सकता है, अगली आवाज़ जो आप सुनें, आपके खाते को खाली कर दे।

डिजिटल युग में हम सभी एक नए युद्धभूमि पर हैं – जहां दुश्मन अदृश्य है और हमला आपकी सबसे सुरक्षित जगह से हो सकता है- आपका मोबाइल फ़ोन।

संक्षिप्त समाचार

विश्व तम्बाकू निषेध दिवस पर संपूर्ण जिले में विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित

रायसेन (निप्र)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर शनिवार को संपूर्ण जिले में विभिन्न जागरूकता गतिविधियां आयोजित कर मद्यपान तथा मादक पदार्थो, नशीली दवाईयां, शराब एवं विभिन्न प्रकार के नशे से होने वाले दुष्परिणामों से युवाओं, आमजन को अवगत कराते हुए नशामुक्ति के लिए प्रेरित किया गया।

जिला जेल रायसेन में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित

रायसेन (निप्र)। जिला जेल रायसेन में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित जिला जेल रायसेन में जिला चिकित्सालय रायसेन द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमे डॉ. त्रिवेन्द्र विश्वकर्मा, जेल चिकित्सक, श्री राहुल आहुजा मेलनर्स, श्री रामकृष्ण चौरे, जेल अधीक्षक एवं जेल स्टॉफ एवं अन्य के योगदान से 25 यूनिट स्वैच्छिक रक्तदान किया गया, रक्तदान में जेल स्टॉफ की भूमिका विशेष सराहनीय रही। दिनांक 31 मई 2025 को जिला जेल रायसेन में पदस्थ श्री फरीद अहमद कार्यवाहक मुख्य प्रहरी अर्द्धवार्षिकी आयु पूर्ण कर सेवानिवृत्त हुये, जिनकों जेल स्टॉफ द्वारा विदाई दी गयी एवं समारोह का आयोजन किया एवं उनके उज्जवल भविष्य की कामना की गयी।

20 किलो वजन की प्रतिबंधित थाईलेण्ड मांगुर मछली जप्त

हरदा (निप्र)। सहायक संचालक मत्स्योद्योग श्री संदीप वर्मा ने बताया कि गुरूवार को अलग-अलग स्थानीय बाजारों में प्रतिबंधित थाईलेण्ड मांगुर मछली के विक्रय की सूचना प्राप्त होने पर निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान करताना बाजार में 20 किलो वजन की 5 नग थाईलेण्ड मांगुर मछली लावारिस अवस्था में जप्त कर विनिष्टिकरण की कार्यवाही की गई। निरीक्षण के दौरान मत्स्य विक्रेताओं को थाईलेण्ड मांगुर मछली विक्रय नहीं करने की समझाईश दी गई। उन्होने बताया कि थाईलेण्ड मांगुर मछली पारिस्थितिक तंत्र एवं मानव स्वास्थ्य के लिये अत्यंत हानिकारक मछली है। निरीक्षण के दौरान मत्स्य निरीक्षक श्री सुशील गौर एवं मत्स्य विभाग के अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी ने सिरोंज थाना में दर्ज प्रकरण के फरार आरोपी की सूचना देने अथवा गिरफ्तारी कराने में मदद करने वाले के लिए तीन हजार रूपए नगद इनाम देने की घोषणा की है। सिरोंज थाना में दर्ज अपराध क्रमांक 175/2025 के फरार आरोपी अजय पुत्र विजय वाल्मीकी निवासी ग्राम भाऊखेडी थाना पथरिया जिला विदिशा की सूचना देने, गिरफ्तारी में मदद करने वाले के लिए तीन हजार रूपए का इनाम घोषित किया गया है सूचना देने वाला व्यक्ति चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर दिलाई गई शपथ

सीहोर (निप्र)। कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर जिले में अनेक गतिविधियां आयोजित की गई। इन गतिविधियों के माध्यम से समुदाय एवं युवाओं को तंबाकू के दुष्परिणामों से बचाने के लिए जागरूक किया गया। सीएमएचओ सुधीर डेहरिया ने बताया कि विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर जिला चिकित्सालय में सभी चिकित्सकों, नर्सिंग स्टॉफ को तंबाकू से होने वाले दुष्परिणामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। इसके साथ ही बताया गया कि समुदाय को इससे बचाने के लिए किस प्रकार जागरूक किया जा सकता है।

कृषि विभाग ने 17 हजार मीट्रिक टन खाद की भेजी डिमांड, 9579 मीट्रिक मिला

● **खरीफ फसल के लिए खाद-बीज का उठाव शुरू**

संजय द्विवेदी, बैतूल। जून माह के पहले सप्ताह में प्री मानसून की बारिश होने की संभावना है। बारिश के पूर्व किसान खरीफ फसल के लिए खाद बीज का उठाव करने लगे है। सहकारी समितियों में खाद बीज के लिए किसानों की भीड़ लगने लगी है। अधिकारियों का कहना है कि जिले में खाद-बीज की व्यवस्था बनाई है। किसानों को किसी प्रकार से परेशान नहीं होना पड़ेगा। बता दे कि किसानों ने खरीफ फसल की बोवनी की तैयारी शुरू कर दी है। खेत बनकर तैयार है। अब किसान खाद-बीज की व्यवस्था में जुटे हुए है। खाद्य-बीज के लिए किसान अब सोसायटी में पहुंचने लगे है। खाद-बीज की व्यवस्था के बाद बारिश होते ही बोवनी कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा। खरीफ फसल के लिए विभाग ने खाद का अग्रिम भंडारण किया है। जिससे जिले में खाद की कोई कमी नहीं रहेगी। आवश्यकतानुसार किसानों को खाद-बीज उपलब्ध कराया जाएगा। अधिकारियों का कहना है कि सोसायटियों में प्राप्त मात्रा में खाद उपलब्ध है। आवश्यकता पड़ी तो और खाद की रैक बुलाई जाएंगी।

43 हजार क्विंटल बीज की बनाई व्यवस्था- खरीफ फसल की बोनी को ध्यान में रखते हुए इस बार खाद की व्यवस्था बनाई है। जिले में 4 लाख से अधिक हेक्टेयर में खरीफ फसल की बोवनी की जाएगी। बोवनी के लिए सोयाबीन, मक्का, धान सहित अन्य बीज उपलब्ध है। अधिकारियों के मुताबिक अभी जिले में 43 हजार क्विंटल बीज की व्यवस्था की है। पिछले वर्ष लगभग 42 हजार क्विंटल बीज का उठाव हुआ था। इस वर्ष भी इतने ही बीज की खपत का अनुमान है। किसान अपनी नज़दीकी सोसायटियों में जाकर बीज खरीद सकते है। कुछ निजी कंपनियों द्वारा भी बाजार में बीज उपलब्ध कराया जा रहा है। प्रतिवर्ष बीज के दाम भी बढ़ते जा रहे है। खासतौर पर निजी कंपनियों द्वारा बोनी के द्वारा बीज के दामों में बढ़ोतरी की जाती है। किसानों को बीज की महंगाईयों से जूझना पडता है।

पिछले साल 17,696 मेट्रिक टन खाद का हुआ था उठाव - कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार विगत खरीफ सीजन में जिले भर में 17696 मेट्रिक टन खाद का उठाव हुआ था। इसे देखते हुए कृषि विभाग ने इस खरीफ सीजन के लिए 17 हजार मीट्रिक टन खाद का लक्ष्य रखा है। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि 9579 मीट्रिक टन खाद में से 5640 मीट्रिक टन खाद सोसायटियों के माध्यम से किसानों को बांटा जा चुका है। पूरे खरीफ सीजन में 7200 से 7500 मेट्रिक टन डीएपी की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे मांग बढ़ रही है, खाद बुलाया जा रहा है। जिले में किसानों को खाद की कमी नहीं होने दी जायेगी।

किसानों को बारिश का इंतजार- खरीफ की बोवनी के लिए किसानों ने खेत बनाकर तैयार किए है। किसान अब बारिश होने के इंतजार में लगे है। मौसम विभाग का कहना है कि 20 जून तक जिले में मानसून दस्तक दे सकता है। इसके पहले प्री मानसून की बारिश होने की संभावना बनी है। कृषि विभाग के अधिकारियों का कहना है कि पर्याप्त बारिश होने की स्थिति में किसान बोवनी करें अन्यथा कम बारिश में बोनी करने पर बीज खराब होने की संभावना बनी रहती है। इसीलिए जमीन में पर्याप्त नमी होना अतिआवश्यक है। बोवनी को लेकर कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा किसानों को जागरूक भी किया जा रहा है।

इनका कहना है -

खरीफ की बोवनी को लेकर जिले में खाद-बीज की पर्याप्त व्यवस्था है। विभाग द्वारा खरीफ सीजन के लिए 17 हजार मेट्रिक टन खाद का लक्ष्य रखा है। अभी तक 5640 मेट्रिक टन खाद सोसायटियों के माध्यम से किसानों को बांटा जा चुका है। कृषि विभाग के पास खाद का भंडारण भी है। जैसे-जैसे मांग बढ़ रही, खाद बुलाकर किसानों को उपलब्ध कराया जा रहा है।

-आनंद बडोनिया, उप संचालक कृषि, बैतूल

एनपीके और एसएसपी उर्वरकों का उपयोग लाभकारी : उप संचालक कृषि

बैतूल। कृषि विभाग द्वारा किसानों को रासायनिक उर्वरकों के विवेकपूर्ण उपयोग के लिए जागरूक किया जा रहा है। उप संचालक कृषि ने बताया कि पारंपरिक डीएपी उर्वरक के स्थान पर एनपीके (12:32:16, 20:20:0:13, 10:26:26) और एसएसपी जैसे उर्वरकों का उपयोग फसल उत्पादन बढ़ाने में अधिक प्रभावी सिद्ध हो रहा है। एनपीके उर्वरक पौधों को आवश्यक नाइट्रोजन, फास्फोरस और पोटेशियम उपलब्ध कराते हैं। पोटेशियम रंध्रों के खुलने-बंद होने को नियंत्रित करता है, जिससे पौधों द्वारा जल और पोषक तत्वों का अवशोषण बेहतर होता है। इसका सीधा लाभ बीजों की गुणवत्ता, उपज में वृद्धि और रोग प्रतिरोधक क्षमता के रूप में मिलता है। इसी प्रकार, सिंगल सुपर फॉस्फेट (एसएसपी) में 16 प्रतिशत फॉस्फोरस, 12.5 प्रतिशत सल्फर और कैल्शियम होता है। सल्फर पौधों में प्रोटीन और तेल उत्पादन में सहायक होता है, जबकि कैल्शियम मिट्टी के पीएच को संतुलित कर उसकी उर्वरता को सुधारता है। 20 किलोग्राम यूरिया के साथ 2 बैग एसएसपी का उपयोग एक लागत-प्रभावी विकल्प के रूप में बेहतर पैदावार दे सकता है। उप संचालक ने बताया कि वर्तमान में जिले में विभिन्न उर्वरकों की पर्याप्त उपलब्धता है, जिसमें यूरिया 16,777 मीट्रिक टन, डीएपी 3,565 मीट्रिक टन, एसएसपी 7,186 मीट्रिक टन और एनपीके 4,818 मीट्रिक टन शामिल हैं। किसानों से आग्रह किया गया है कि वे इन वैकल्पिक उर्वरकों का अधिकाधिक उपयोग करें और वैज्ञानिक पद्धति से खेती कर बेहतर उत्पादन प्राप्त करें।

बैतूल के पाश एरिया टिकारी में नई कॉलोनी विद्यासागर रेसीडेंसी का हुआ भव्य शुभारंभ

बैतूल। शहर के टिकारी क्षेत्र के प्रताप वार्ड में स्थित विद्यासागर रेसीडेंसी नामक नई कॉलोनी का शनिवार को भव्य शुभारंभ हुआ। इस कॉलोनी में कई प्लॉटो की बुकिंग हुई है, जो इस बात का संकेत है कि लोगों ने इस कॉलोनी को अपने रहने के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में चुना है। कॉलोनाइजर ने ग्राहकों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए इसे सर्वसुविधायुक्त बनाया है। कॉलोनी में भव्य एवं आकर्षक प्रवेश द्वार, स्ट्रीट लाइट, अंडर ग्राउंड ड्रेनेज सीवेज, अंडरग्राउंड इलेक्ट्रिसिटी, वाटर टैंक, आकर्षक गार्डन एवं बच्चों के लिए झूले, प्रत्येक प्लॉट पर नल कनेक्शन सुविधा, सुरक्षा की दृष्टि से कवर्ड कैंपस इत्यादि की सुविधाएं शामिल हैं। एक चर्चा में कॉलोनी के डायरेक्टर नूतन एवं अनुज जैन ने बताया कि कॉलोनी के निर्माण हेतु सभी शासन के नियमों का पालन किया जाएगा, साथ ही सभी प्रकार की परमिशन प्राप्त कर ली गई है, जिससे ग्राहकों को किसी भी प्रकार की समस्या नहीं होगी। दो दिन के उद्घाटन सत्र के दौरान ग्राहकों ने कॉलोनी की सुविधाओं और विकास कार्य की प्रशंसा की है और उन्हें लगता है कि यह कॉलोनी उनके लिए एक आदर्श निवास स्थल होगी। कॉलोनी के प्लॉट के दाम भी अन्य विकसित कॉलोनी की तुलना में अधिक नहीं हैं, जिससे यह मध्यम वर्ग के लोगों के लिए भी सुलभ हो गई है। किंगडम रियल स्टेट मार्केटिंग एजेंसी ग्रुप के द्वारा की जा रही मार्केटिंग के तहत, कंपनी के शिवम द्विवेदी एवं अनुराग तिवारी ने बताया कि वे ग्राहकों की संतुष्टि को प्राथमिकता देते हैं और उनकी सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। शुभारंभ समारोह में कई ग्राहकों ने भाग लिया और कॉलोनी की सुविधाओं का अवलोकन किया। उन्हें कॉलोनी का विकास कार्य और सुविधाएं बहुत पसंद आईं। उम्मीद है कि आने वाले समय में इस कॉलोनी में और भी अधिक प्लॉट की बुकिंग होगी और यह कॉलोनी बैतूल शहर की सबसे अच्छी कॉलोनियों में से एक होगी। उन्होंने बताया कि हमारा उद्देश्य है कि ग्राहकों को एक सुरक्षित और सुविधाजनक वातावरण प्रदान किया जाए, जहां वे अपने परिवार के साथ सुखी जीवन व्यतीत कर सकें। उद्घाटन कार्यक्रम में नर्मदापुरम जिले के पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष भवानी शंकर शर्मा, नर्मदापुरम के जनपद अध्यक्ष भूपेंद्र चौकसे, पूर्व सुधार न्यास अध्यक्ष राजीव खंडेलवाल, वरिष्ठ समाजसेवी मुकेश खंडेलवाल, चार्टर्ड अकाउंटेंट एसोसिएशन अध्यक्ष प्रदीप खंडेलवाल, नागरिक बैंक अध्यक्ष अतीत अग्रवाल, पूर्व विधायक शिव प्रसाद राठौर सहित अन्य गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

जिला अभिभाषक संघ की चुनाव प्रक्रिया शुरू

22 अधिवक्ताओं ने लिए विभिन्न पदों के लिए फार्म

बैतूल। जिला अभिभाषक संघ बैतूल के निर्वाचन की प्रक्रिया शुरू हो गई है। अब तक कुल 22 नामांकन फार्म वितरित किए जा चुके है। अधिवक्ता एवं चुनाव अधिकारी वरिष्ठ अधिवक्ता नितिन मिश्रा ने बताया कि जिला अभिभाषक संघ बैतूल के लिए चुनाव प्रक्रिया शुरू हो गई है, जिसके तहत 21 मई को प्रारंभिक मतदाता सूची का प्रकाशन, 24 मई तक मतदाता सूची पर दावा-आपत्तियां स्वीकार की गई और 27 मई को अंतिम मतदाता सूची का प्रकाशन किया गया। 28 मई से नामांकन फार्म वितरण एवं जमा करने की प्रक्रिया शुरू हुई, जो 6 जून तक जारी रहेगी। इस दौरान अभी तक सभी पदों के लिए 22 फार्म वितरित किए जा चुके है। फार्म जमा होने के बाद नामांकन फार्म की जांच एवं प्रत्याशी की सूची का प्रकाशन किया जायेगा। प्रत्याशी 6 जून शाम 4 बजे तक नामांकन फार्म वापस ले सकते है। 6 जून को ही शाम 5 बजे तक प्रत्याशियों की अंतिम सूची का प्रकाशन किया जाएगा, वहीं आगामी 27 जून शुक्रवार को सुबह 10 से शाम 5 बजे तक मतदान और मतगणना शाम 7 बजे से होगी। जिसके पश्चात विजयी प्रत्याशियों की घोषणा की जायेगी। यहां उल्लेखनीय है कि जिला अभिभाषक संघ बैतूल में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सहसचिव, कोषाध्यक्ष सहित सात कार्यकारिणी सदस्य नियुक्त किये जायेगे। फिलहाल विभिन्न पदों के लिए फार्म वितरण का कार्य जारी है। इसी कड़ी में वरिष्ठ अधिवक्ता कृष्णा वागद्रे ने सोमवार को अध्यक्ष पद के लिए अपना नामांकन-पत्र लिया। कृष्णा वागद्रे बैतूल जिला न्यायालय में लम्बे समय से सक्रिय रूप से वकालत कर रहे हैं और अधिवक्ता समुदाय में एक सरल, मिलनसार और संघर्षशील अधिवक्ता के रूप में पहचान रखते हैं। नामांकन-पत्र लेते समय उनके विभिन्न साथी सहित अन्य अधिवक्ता उपस्थित रहे।

एक नई पहल एक कदम जागरूकता की ओर चलाकर नागरिकों को किया जा रहा है जागरूक

सीहोर (निप्र)। प्रधान जिला न्यायाधीश एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष श्री प्रकाश चंद्र आर्य के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण एवं भारतेन्दु आर्ट्स इंटीग्रेशन युवा मंच एंड सोशल वेलफेयर सोसाइटी द्वारा प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया के माध्यम से विधिक सेवा योजनाओं और विभिन्न महत्वपूर्ण कानूनी विषयों के बारे में आमजन को जागरूक करने के लिए 10 मई से एक नई पहल एक कदम जागरूकता की ओर प्रारंभ की गई है। इस पहल में विभिन्न योजनाओं, अधिनियम, महत्वपूर्ण कानूनी मुद्दों और सुसंगत विषयों को सम्मिलित किया जाएगा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह ने बताया कि सोशल मीडिया अधिकांश लोगों के लिए एक बहुत ही प्रभावी और पसंदीदा माध्यम है, इसलिए इस पहल को सर्वप्रथम सोशल मीडिया के माध्यम से प्रसारित किया गया है। इसका पहला सत्र घरेलू हिंसा के विषय पर आधारित है, जिसमें विशेषज्ञ के तौर पर सचिव श्रीमती स्वप्नश्री सिंह द्वारा कानून संबंधी जानकारी दी गई। इसका पूरा सत्र यूट्यूब चैनल ऑफिशियल प्राइम 24 पर उपलब्ध है।इस पहल के तहत न्यायिक अधिकारी एवं अन्य अधिकारी आगामी सत्रों में अपने-अपने क्षेत्र के कानूनों, योजनाओं एवं प्रावधानों की जानकारी देंगे तथा आमजन को उनके अधिकारों एवं दायित्वों के प्रति जागरूक करेंगे। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा सभी नागरिकों से यह अपील की गई है कि वे इस पहल से जुड़कर लाभान्वित हों और अन्य लोगों को भी लाभान्वित करें।

नशामुक्ति का संदेश रैली से

विधायक तथा कलेक्टर और अन्य ने सहभागिता निभाई

विदिशा (निप्र)। अंतरराष्ट्रीय नशा निवारण दिवस पर विदिशा जिले में भी विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था। प्रातःकाल जन-जागरूकता रैली के माध्यम से नशा के दुष्प्रभावों की जानकारी और संदेशों का संप्रेषण किया गया था।विदिशा विधायक श्री मुकेश टंडन ने जन-जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के साथ विधायक, विभिन्न सामाजिक संगठनों के पदाधिकारियों के अलावा अन्य विभागों के अधिकारियों कर्मचारियों, स्वास्थ्य विभाग, स्कूल शिक्षा विभाग, स्वयं सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने सहभागिता निभाई है। रैली नर्सिंग ट्रेनिंग सेंटर से प्रारंभ होकर नगर के प्रमुख मार्ग से होती हुई नीमताल चैराहे पर संपन्न हुई है।

तख्तियां : नशा विमुक्ति जन-जागरूकता रैली में सहभागिता निभाई वालों के हाथों में विभिन्न स्लोगनों के माध्यम से नशा नहीं करने,नशा से होने वाले दुष्परिणामों, नशा से बचाव के उपायों पर केंद्रित संदेशों का व्यापक प्रचार-प्रसार किया गया है।

माल्यार्पण : जन-जागरूकता रैली जैसे ही नीमताल चैराहे पर पहुंची तो सबसे पहले महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। विधायक समेत अन्य जनप्रतिनिधि गणमान्य नागरिकों ने माल्यार्पण किया। समापन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक श्री मुकेश टंडन ने कहा कि नशा से हर प्रकार का नुकसान होता है। उन्होंने शारीरिक और आर्थिक दोनों परेशानियां का सामना करना पड़ा है। उन्होंने आधुनिक युग में नशे के बदलते स्वरूप को भी रेखांकित किया।

हिमाचल प्रदेश की अध्ययन यात्रा से लौटा स्काउटर गाईडर का दल

विदिशा (निप्र)। भारत स्काउट गाइड जिला संघ विदिशा का 13 सदस्यों का दल राज्य स्तरीय कार्यशाला अध्ययन यात्रा हिमाचल प्रदेश में सहभागिता कर शुक्रवार को वापिस लौटा है। भारत स्काउट गाइड जिला संघ विदिशा के सचिव हरिहर चतुर्वेदी ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला शिक्षा अधिकारी आरके ठाकुर की अनुशंसा पर सहायक राज्य संगठन आयुक्त भोपाल संभाग राजेश मेवाड़े, सहायक संचालक अनीता पटले एवं सुशील कुमार बिल्लौरे के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश में आयोजित अध्ययन यात्रा में विदिशा जिले से 3 स्काउटर, 6 गाइडर एवं 4 रेंजर्स ने विभिन्न साहसिक गतिविधियों में जिले का प्रतिनिधित्व किया। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू मनाली की मनभावन वादियों में स्काउटर गाईडर को समुद्र तल से 13 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित रोहतांग दर्रे पर हाइक के द्वारा ले जाया गया। जहां मौसम के पल पल बदलते हुए स्वरूप का गहन अध्ययन स्काउटर गाईडर ने किया। इसके अलावा मणिकरण स्थित गुरुद्वारा, मनाली में देवी हिडिंबा मंदिर, रेवासल में 51 शक्तिपीठों में से एक माता नैना देवी के मंदिर का भ्रमण भी स्काउटर गाईडर को करवाया गया।

देश की सबसे लंबी टनल जो कि देश के इंजीनियर्स की योग्यता का उत्कृष्ट नमूना है अटल टनल का भ्रमण भी स्काउटर गाईडर ने किया। जिले के स्काउटर गाईडर ने हिमाचल प्रदेश में स्थानीय निवासियों से मिलकर हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को भी बारीकी से समझा। हिमाचल प्रदेश के सेव एवं लीची के बागानों के साथ साथ पहाड़ों पर की जाने वाली खेती करने के पारंपरिक तरीके भी स्काउटर गाईडर को बताए गए। जिले से इस दल में जिला सचिव हरिहर चतुर्वेदी, शमशाबाद से स्काउटर हनीफ खान मंसूरी, बासौदा से सुनील जैन, विदिशा से गाइडर रेखा शर्मा एवं प्रतिभा आर्य, सिरोंज से ज्योति यादव, पिपलधार से शीतल ठाकुर, बासौदा से प्रमिला रघुवंशी सहित रेंजर्स सुरभि रघुवंशी, अनुभा आर्य, तुलसी यादव एवं शिवानी यादव सम्मिलित हुईं।

मलेरिया जागरूकता रथ को हरी झण्डी दिखाकर मलेरिया निरोधक माह का किया शुभारंभ

बैतूल। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजेश परिहार ने सोमवार को मलेरिया निरोधक माह अंतर्गत मलेरिया जागरूकता रथ को कार्यालय परिसर से हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। यह जागरूकता रथ जिले में विभिन्न विकासखंडों के चयनित ग्रामों में भ्रमण करेगा। 1 जून से प्रारंभ हुये मलेरिया निरोधक माह के दौरान यह जागरूकता रथ ग्रामों में जाकर लोगों को मलेरिया से बचाव के प्रति सचेत करेगा। रथ द्वारा मलेरिया जागरूकता माह के दौरान मलेरिया से बचाव के साधनों से भली भांति अवगत कराया जायेगा। साथ ही मच्छरदानी के उपयोग के लिये लोगों को प्रेरित किया जायेगा। जागरूकता रथ में बुखार रोगियों के रक्त के नमून लेकर जांच एवं मलेरिया पाये जाने पर उपचार की पूर्ण सुविधा उपलब्ध है। सीएमएचओ डॉ. राजेश परिहार ने स्वास्थ्य अमले को निर्देशित किया कि मैदानी क्षेत्रों में मलेरिया के उपचार संबंधी दवाइयां पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहें। लार्वा विनिष्टीकरण का कार्य भी सतत संचालित किया जाये। उन्होंने ग्रामीण जन में मलेरिया के प्रति जागरूकता लाकर मलेरिया की बीमारी से बचाव की बात कही। इस अवसर पर जिला मीडिया अधिकारी श्रीमती श्रुति गौर तोमर, जिला मलेरिया अधिकारी जितेंद्र सिंह राजपूत सहित अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पूर्व मुख्यमंत्री बाबूलाल गौर का किया पुण्य स्मरण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री बाबूलाल गौर की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश के विकास और कमजोर वर्ग के हितों की रक्षा के लिए श्रद्धेय श्री गौर ने स्वयं को आजीवन समर्पित कर दिया था। राजनीति में उनके द्वारा स्थापित प्रतिमान सदैव भावी पीढ़ियों को जनसेवा के लिए प्रेरित करते रहेंगे।

मुख्यमंत्री ने गायत्री परिवार के संस्थापक पं. श्रीराम शर्मा की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित की

भोपाल । मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य जी का ध्येय वाक्य 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा, हम सुधरेंगे, युग सुधरेगा, सदैव पाथेय रहेगा।'

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आचार्य श्रीराम शर्मा ने आजीवन सनातन संस्कारों की दीपशिखा को विस्तारित किया। उन्होंने चारित्रिक, बौद्धिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर मानव समाज का उत्थान कर युग परिवर्तन की दिशा में अतुलनीय योगदान दिया।

मंत्री पटेल ने विभागीय विषयों की समीक्षा कर दिए निर्देश

भोपाल। पंचायत एवं ग्रामीण विकास और श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने कहा कि पंचायत विभाग के अंतर्गत जिला पंचायत तथा जनपद पंचायतों हेतु बनने वाले भवन भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बनाएं जाएं। उन्होंने कहा कि इन भवनों में ग्रे-वाटर ट्रीटमेंट, रूफ वाटर हार्वेस्टिंग, सोलर ऊर्जा से विद्युत आपूर्ति जैसी आधुनिक सुविधाओं का अनिवार्य रूप से समावेश करें। उन्होंने आगे कहा कि कार्यालय भवनों को नागरिकों के लिए सुविधाजनक बनाएं। मंत्री श्री पटेल ने सोमवार को विकास भवन में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग अंतर्गत कार्यों की समीक्षा की।

श्री पटेल ने जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की और विस्तृत निर्देश दिए। उन्होंने नवीन जिला पंचायत कार्यालय भवन एवं नर्मदा परिक्रमा पथ में विश्राम गृह की प्रस्तावित डिजाइन का प्रस्तुतीकरण देखा। उन्होंने कहा यह भवन कार्यालयीन अधिकारियों, कर्मचारियों एवं आम नागरिकों के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप हों। उन्होंने कहा कि जनपद पंचायत भवनों में आने वाले आम नागरिकों की आवश्यकताओं के अनुरूप छाया, पेयजल, शौचालय और साफ सफाई की पर्याप्त व्यवस्था हो। उन्होंने नर्मदा परिक्रमावासियों के लिए बनाए जाने वाले विश्राम गृहों को सर्व सुविधायुक्त बनाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इस बात का विशेष ध्यान रखें कि इन गृहों के निकलने वाला ग्रे-वॉटर नर्मदा एवं सहायक नदियों में न मिले। ये वॉटर का ट्रीटमेंट कर जल का समुचित उपयोग करें। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को भी अपने सुझाव देने को कहा।

श्री पटेल ने इस दौरान पेसा एक्ट के क्रियान्वयन की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि जनजाति समुदायों के हित में पेसा एक्ट का प्रभावी कियान्वयन हमारी प्राथमिकता है, इसके लिए ठोस कदम उठाएं जाएं। उन्होंने जनपद पंचायत सीईओ और पेसा को ऑर्डिनेटर की संयुक्त ट्रेनिंग कराने के निर्देश दिए। उन्होंने छोटी नदियों के उद्गमस्थलों के संरक्षण और नर्मदा किनारे की भूमियों पर पौध रोपण के लिए तार फेंसिंग कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए।

श्री पटेल ने कहा कि दीनदयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल योजना सरकार की महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना के अंतर्गत ग्रामीण युवाओं को प्रदान किए जा रहे प्रशिक्षण की सतत मॉनिटरिंग करें। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत मिलने वाले रोजगार का सक्सेस रेट शत प्रतिशत हो, इस दिशा में निरंतर कार्य करें। उन्होंने अटल सुशासन भवन निर्माण, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, मनरेगा योजना के तहत निर्माण कार्यों, वित्तीय प्रावधानों आदि विभागीय विषयों पर विस्तार से चर्चा कर निर्देश दिए।

ज्वेलर्स डेवलपमेंट वेलफेयर एसोसिएशन का होगा वार्षिक आयोजन

ज्वैलरी एग्जिबिशन एवं परंपरागत आभूषणों के फैशन शो का होगा आयोजन

देवास । ज्वेलर्स डेवलपमेंट वेलफेयर एसोसिएशन मप्र अध्यक्ष संजय जैन एवं महासचिव संतोष सराफ के मार्गदर्शन में प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी वार्षिक सम्मेलन का आयोजन 21 और 22 जून को आयोजित होगा।

देवास अध्यक्ष दिलीप चौधरी एवं सचिव ऋषि सोनी ने बताया कि प्रदेश स्तरीय सम्मेलन में देवास के साथ-साथ प्रदेश समस्त जिलों से व्यापारियों को आमंत्रित किया जा रहा है। बैठक का मुख्य उद्देश्य पिछली बार से ज्यादा लगभग 1000 व्यापारियों को एकत्र करने का लक्ष्य रखा गया है। इस बार मुख्य विषय जो हर वर्ष की तरह एजेंडा में शामिल किए

गए है। उसमें मुख्य रूप से इस बार मप्र में पहली बार ज्वैलरी एग्जिबिशन का आयोजन किया जा रहा है एवं परंपरागत आभूषणों का फैशन शो भी किया जाएगा। इसके साथ 22 जून की मुख्य बैठक में प्रदेश में ज्वेलरी उद्योग के आयात निर्यात की संभावनाओं को यथार्थ में उतरना और प्रदेश के लगभग सभी जिले से चुनिंदा व्यापारियों का चयन कर उन्हें आयात निर्यात का लाइसेंस प्रक्रिया कस्टम का परमिशन एवं इसके तौर तरीके से पूर्णत~ अवगत कराना होगा और लक्ष्य रखा गया है कि इस वर्ष मप्र में ज्वैलरी इंडस्ट्री की मैन्युफैक्चरिंग कैसे प्रारंभ की जाए। इसके ऊपर भी गंभीर प्रयास हेतु एमएसएमस मंत्रालय के साथ प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी। साथ में व्यापारियों को भारत के उन तमाम होलसेलर और मैन्युफैक्चरर से अवगत कराया जाएगा एवं व्यापारी कैसे अपने व्यापार को वर्तमान परिपेक्ष के अनुरूप स्थापित कर सके आगे बढ़ा सके। इन सभी विषयों के ऊपर चर्चा होगी और सकारात्मक रूप से कैसे प्रक्रिया प्रारंभ की जाएगी। इस पर भी दिशा निर्देश जारी किए जाएंगे। इस कार्यक्रम हेतु देवास जिले से भी व्यापारी को दो दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित होने हेतु दिशा निर्देश दिए गए। देवास जिले के व्यापारी पूरे उत्साह के साथ उपस्थित होंगे। क्योंकि यह एक प्रदेश के रिटेल ज्वैलरी उद्योग के लिए बहुत अच्छा अवसर है। व्यापार को आगे बढ़ाने हेतु ज्वेलर्स डेवलपमेंट वेलफेयर एसोसिएशन मप्र की ओर से जो प्रयास किया जा रहे हैं। वह अपने आप में सराहनीय है। देवास जिले के व्यापारी इस आयोजन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे।

सफलता

कुसुम डूंगरवाल

हिंदी को केवल विषय न मानें, यह जीने का माध्यम

सफलता एक दिन में नहीं मिलती, बल्कि यह निरंतर परिश्रम,धैर्य और आत्मविश्वास का परिणाम होती है। ऐसी ही एक प्रेरणादायक यात्रा है कुसुम डूंगरवाल की, जिन्होंने मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित हिन्दी विषय में सहायक प्राध्यापक के रूप में प्रावीण्य सूची में दसवां स्थान प्राप्त किया है।

हिन्दी विषय में सहायक प्राध्यापक चयन की सफल यात्रा के बारे में उन्होंने बताया कि मेरा सदैव से हिन्दी भाषा और साहित्य में गहरा रुचि रही है और शिक्षण कार्य मेरा सपना था। हिन्दी साहित्य में स्नातकोत्तर करने के बाद यूजीसी नेट/जेआरएफ की परीक्षा पास की ताकि शिक्षक कार्य का सपना पूरा कर सकूं। सहायक प्राध्यापक के रूप में चयन मेरे लिए सिर्फ एक नौकरी नहीं, बल्कि एक ज़िम्मेदारी है। मेरी सफलता में विक्रम विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के आचार्यों के मार्गदर्शन का गहरा योगदान है। मैं इसे एक अवसर मानता/मानती हूँ, जिससे मैं हिन्दी साहित्य को विद्यार्थियों तक अधिक प्रभावशाली ढंग से पहुँचा सकूँ। मैं एक शिक्षक के रूप में न केवल साहित्य पढ़ाना चाहती हूं बल्कि विद्यार्थियों में आलोचनात्मक और सृजनात्मक सोच विकसित करना चाहती हूँ। साथ ही, शोध और लेखन कार्य भी मेरी प्राथमिकता में रहेगा।

जहां तक इस परीक्षा की तैयारी और विशेष रणनीति की बात है तो मैंने सबसे पहले यूजीसी नेट की पाठ्य-सामग्री को अच्छे से समझा और नियमित अध्ययन किया। मैंने मूलभूत पुस्तकों जैसे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी, नामवर सिंह आदि के लेखन को गहराई से पढ़ा। साथ ही, विगत वर्षों के प्रश्न पत्रों का विश्लेषण भी किया। शुरुआत में मैंने स्वअध्ययन किया, लेकिन बाद में कुछ ऑनलाइन कक्षाओं और टेस्ट सीरीज़ का सहारा लिया। आत्म-अनुशासन और सतत अभ्यास सबसे ज़रूरी रहा।ऐसी परीक्षा की तैयारी कर रहे साथियों से मैं यही कहूँगी कि आत्मविश्वास बनाए रखें और मूल ग्रंथों को पढ़ें। रटने के बजाय समझने की प्रवृत्ति विकसित करें। और सबसे ज़रूरी बात - हिन्दी को केवल विषय न मानें, उसे जीने का माध्यम बनाएं। खुद पर भरोसा रखे,लक्ष्य पर नजर रखे और प्रतिबद्धता से लक्ष्य की और बढ़ते रहे,एक न एक दिन सफलता अवश्य मिलेगी।

स्वस्थ यकृत मिशन के तहत नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज स्क्रीनिंग प्रारंभ

पहले दिन 21 सौ से अधिक की जांच

भोपाल। नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज की स्क्रीनिंग के लिए चलाये जा रहे स्वस्थ लीवर मिशन के पहले दिन 2191 लोगों की स्क्रीनिंग की गई। कार्यक्रम में 30 वर्ष से अधिक आयु के नागरिकों की स्क्रीनिंग जा रही है। स्क्रीनिंग में ऊंचाई, वजन, कमर के माप की गणना की जा रही है। फैटी लीवर के संभावित संदिग्ध श्रेणी के मरीजों की जानकारी संधारित की जा रही है। इन लोगों में चिकित्सकीय सलाह पर अन्य जांचों के माध्यम से फैटी लीवर होने की संभावनाओं का पता लगाया जाएगा।

ये अभियान लीवर संबंधी बीमारियों की जागरुकता, प्रारंभिक पहचान, उपचार और रोकथाम के लिए चलाया जा रहा है। मिशन के तहत प्रारम्भिक स्क्रीनिंग में मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा बीएमआई , सीबैक स्कोर एवं कमर का माप लिया जा रहा है। बीएमआई 23 से अधिक होने, महिलाओं में कमर का माप 80 सेमी और पुरुषों में 90 सेमी से अधिक होने पर आयुष्मान आरोग्य मंदिरों एवं नजदीकी स्वास्थ्य संस्थाओं में जांच के लिए रेफरल किया जा रहा है। अभियान के पहले दिन 1978 व्यक्तियों की बी एम आई स्क्रीनिंग में 565 का बीएमआई अधिक पाया गया। 867 पुरुषों की स्क्रीनिंग में 211 और 1324 महिलाओं में से 407 की कमर का माप निर्धारित मापदंडों से अधिक मिला है।

स्वस्थ लीवर मिशन में जोखिम कारकों की पहचान और मूल्यांकन , लीवर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता , संदिग्ध और पुष्ट मामलों के लिए रेफरल और फॉलोअप , चिकित्सकों व स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण सम्मिलित है । संदिग्ध मामलों की जांच के साथ साथ लीवर को स्वस्थ रखने के लिए घर में उपलब्ध पौष्टिक आहार के सेवन, शराब एवं धूम्रपान से दूर रहने का परामर्श दिया जा रहा है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी भोपाल डॉ. प्रभाकर तिवारी ने बताया कि नॉन अल्कोहलिक फैटी लीवर डिजीज एक प्रमुख जन स्वास्थ्य समस्या बनकर उभर रही है जो कि मोटापा, मधुमेह, उच्च रक्तचाप एवं मेटाबॉलिक सिंड्रोम जैसे बीमारियों से संबंधित है। समय पर पहचान कर प्रबंधन और जोखिम कारकों को कम किया जा सकता है।

एम्स भोपाल के डॉक्टरों ने राष्ट्रीय स्तर पर लहराया परचम

चित्रकूट में सद्गुरु कॉन्क्लेव 2025 में हुए सम्मानित

भोपाल। एम्स भोपाल के कार्यपालक निदेशक प्रो. (डॉ.) अजय सिंह के नेतृत्व में संस्थान निरंतर अकादमिक उत्कृष्टता और नवाचार के नए आयाम स्थापित कर रहा है। इसी क्रम में, सद्गुरु ग्रुप एवं ऑल इंडिया ऑप्थैल्मोलॉजिकल सोसायटी द्वारा भगवान श्रीराम की पावन भूमि चित्रकूट में आयोजित एक्यूटी - ए कॉन्फ्लूएंस ऑफ आइडियाज, सद्गुरु कॉन्क्लेव - 2025 में एम्स भोपाल के फैकल्टी एवं रेजिडेंट डॉक्टरों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराया।

इस कार्यक्रम में द्वितीय वर्ष के अकादमिक जूनियर रेजिडेंट्स डॉ. प्रत्युष एवं डॉ. एस्थर ने पेपर/पोस्टर प्रतियोगिता सत्र में रनर-अप का स्थान प्राप्त किया। उनके शोध विषय– प्रीसेनाइल मोतियाबिंद की व्यापकता, प्रकार एवं कारण बनने वाले जोखिम कारक और द टेल ऑफ डिसप्लेस्ड आईबॉल-ने चिकित्सा शोध के क्षेत्र में उनकी गंभीरता एवं गहन अध्ययन क्षमता को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया। उन्हें यह सम्मान दो पद्मश्री पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ नेत्र चिकित्सकों एवं अन्य प्रतिष्ठित विशेषज्ञों के कर-कमलों से प्रदान किया गया, जो उनके लिए अत्यंत प्रेरणादायक क्षण रहा। इसी अवसर पर, एम्स भोपाल की नेत्र रोग विभागाध्यक्ष प्रो. (डॉ.) भावना शर्मा को कॉर्निया एवं मोतियाबिंद के क्षेत्र में उनके वर्षों के विशिष्ट कार्य के लिए सद्गुरु सेवा मेडल से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें सद्गुरु ग्रुप द्वारा प्रदान किया गया, जो स्वयं में एक गौरवपूर्ण मान्यता है तथा चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान को रेखांकित करता है। इस उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए प्रो. (डॉ.) अजय सिंह ने कहा, ये उपलब्धियाँ एम्स भोपाल की अकादमिक गुणवत्ता, शोध के प्रति प्रतिबद्धता एवं मरीज-केन्द्रित दृष्टिकोण का प्रमाण हैं। हमारे रेजिडेंट डॉक्टरों और फैकल्टी को राष्ट्रीय मंच पर इस प्रकार की मान्यता मिलना न केवल संस्थान के लिए गर्व की बात है, बल्कि पूरे चिकित्सा समुदाय व आम जनता के लिए भी प्रेरणास्पद है।

अखिल भारतीय रघुवंशी समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष का स्वागत

सुबह सवेरे सोहागपुर

अखिल भारतीय अखंड रघुवंशी महापरिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष उमाशंकर रघुवंशी का अध्यक्ष बनने के उपरांत नगर में प्रथम आगमन पर रघुवंशी समाज के सामाजिक बंधुओं ने चंद्रकांत रघुवंशी के राज्य मार्ग 22 पर स्थित निवास में स्वागत करके सम्मानित किया ।

इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष उमाशंकर रघुवंशी ने संबोधित करते हुए कहा कि समाजिक हितों के लिए समस्त समाज एक साथ हो तभी समाज

का उत्थान होगा। आपने स्वागत करने पर सामाजिक बंधुओं का आभार व्यक्त किया। इसी अवसर पर शक्तिसिंह रघुवंशी,महिला रघुवंशी समाज अध्यक्ष डाक्टर सुनंदा रघुवंशी, एवं युवा रघुवंशी समाज अध्यक्ष रणजीतसिंह रघुवंशी आदि ने भी संबोधित किया गया। इस स्वागत की बैला में मदनसिंह रघुवंशी,सुमेरसिंह रघुवंशी होशंगाबाद, राजेंद्रसिंह चौधरी,राममूर्ति पटेल आदि मंचासीन थे। कार्यक्रम में वकील मंगलसिंह रघुवंशी,राकेश चौधरी, आकाश रघुवंशी,महेश रघुवंशी,राजकुमार रघुवंशी,विक्रम सिंह, लखनसिंह रघुवंशी,मुकेश रघुवंशी,संतोष रघुवंशी,दशरथ रघुवंशी,कृष्णकांत रघुवंशी,ऊदल रघुवंशी अशोक रघुवंशी मुकेश रघुवंशी,रामस्वरूप रघुवंशी सहित समाजिक बन्धु उपस्थित थे।

महारानी अहिल्याबाई होलकर त्रिशताब्दी वर्ष जयंती पर महिला मंडल के सानिध्य में कार्यक्रम संपन्न

सुबह सवेरे सोहागपुर । मप्र जन अभियान परिषद सोहागपुर के कक्षा संचालन के अवसर पर महारानी अहिल्याबाई होलकर होल्कर की त्रिशताब्दी वर्ष जंयती पर जनपद सभागार परिसर में महिला मंडल के सानिध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम श्रीमति लता यशवंत पटेल नगर पंचायत परिषद अध्यक्ष , जनपद पंचायत अध्यक्ष जालम सिंह पटेल ,उपाध्यक्ष राघवेंद्रसिंह रघुवंशी , शिवदयाल चौधरी जिला संघ चालक, उत्कर्षा नवगिरी , मुख्य वक्ता सत्यकीर्ती राने , ब्लाक जन अभियान परिषद समन्वयक

किशोर कड़ोले , समाजसेवी जीवन दुबे, भूरेलाल जी महाराज आदि के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर वक्ताओं ने महारानी अहिल्याबाई होलकर के जीवन एवं कई उल्लेखनीय घटनाओं पर विस्तृत सारगर्भित उद्बोधन दिया। इसी अवसर वक्ताओं ने एक मार्मिक चित्रण करते हुए कहा कि जब महारानी अहिल्याबाई होल्कर के बेटे ने एक गाय के बछड़े के ऊपर गाड़ी चला दी। जिससे उसकी मृत्यु हो जाती है। तब महारानी ने न्याय के रूप में बेटे को भी वही सजा रखी ।परंतु गौमाता के सामने आने पर उसे छोड़ दिया । इस प्रकरण से यही सीख मिली है कि जब ममता दिखानी हो तो गौमाता की तरह और जब राज्य देश परिवार पर आच आये तब महारानी अहिल्याबाई होलकर जैसा निणर्य लेने की क्षमता होनी चाहिए। इस कार्यक्रम में छात्राओं ने नृत्य, अहिल्याबाई पर एवं लाठी चलाने का प्रस्तुतिकरण कर सभी उपस्थित नागरिकों एवं मातृशक्ति का मन मोह लिया।कार्यक्रम का संचालन जिला संयोजिका महिला मंडल स्मिता तोमर , नवांकुर संस्था के संदेश मिश्रा, गजेंद्र ठाकुर ,मेंटर सचिन विश्वकर्मा, श्याम मीना, मंजू पंवार, निशा चौरसिया आदि सदस्य उपस्थित थे।

पुलिस ने किया नकली नोट छापने के बड़े रैकेट का पर्दाफाश, 15.41 लाख के नकली नोट जप्त

● मुख्य आरोपी ने जेल में रची थी साजिश

देवास-मोहन वर्मा। जिला देवास पुलिस को एक महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त हुई है । थाना बैंक नोट प्रेस पुलिस ने नकली नोटों के निर्माण एवं अवैध संचालन में लिप्त अंतरजिला गिरोह का पर्दाफाश करते हुए लगभग रू. 16,00,000/- से अधिक मूल्य के नकली नोट,उन्हें तैयार करने की सामग्री एवं उपकरण जब्त कर 05 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है।

पुलिस अधीक्षक पुनीत गेहलोद ने आज एक प्रेस वार्ता में जानकारी देते हुए बताया कि दिनांक 01 जून को थाना प्रभारी बैंक नोट प्रेस को विश्वसनीय सूत्रों से सूचना मिली कि आरोपी सचिन नागर एवं शुभम वर्मा द्वारा नकली नोट लेकर जा रहे है। जिस पर से तत्काल वरिष्ठ अधिकारियो को अवगत कराया गया ।

पुलिस अधीक्षक देवास श्री पुनीत गेहलोद ने उक्त सूचना की गंभीरता को देखते हुए तत्काल कार्यवाही हेतु निर्देशित किया। जिस पर से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) श्री जयवीर सिंह भदौरिया के मार्गदर्शन में उप पुलिस अधीक्षक (एल-आर) श्री संजय शर्मा के निर्देशन में थाना प्रभारी बैंक नोट प्रेस श्री अमित सोलंकी के नेतृत्व में 02 विशेष टीमों का गठन किया गया । उक्त टीमों ने आरोपी सचिन नागर एवं शुभम वर्मा को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से रू. 1,96,200/- के नकली नोट एवं एक काली रंग की स्प्लेंडर मोटरसाइकिल जब्त की जाकर आरोपियो के

विरूद्ध थाना बैंक नोट प्रेस में अपराध क्रमांक 556/2025 धारा 178,179,180, 61(2) BNS का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया । उक्त आरोपियो से पूछताछ में ज्ञात हुआ कि आरोपी राजकुमार मालवीय ग्राम सोनकच्छ, द्वारा अपने निवास पर नकली नोटों का निर्माण किया जा रहा है । तत्काल कार्यवाही करते हुए पुलिस टीमों के द्वारा आरोपी राजकुमार के घर पर दबिश दी गई, जहाँ से आरोपी राजकुमार मालवीय एवं सुनील पाटिल को गिरफ़्तार कर उनके कब्जे से रू. 13 लाख 25 हजार के 500-500 की नकली नोटों की गड्डियाँ तथा नोट निर्माण में प्रयुक्त उपकरण एवं अन्य सामग्री बरामद की गई । बाद अनुसंधान में आरोपी शक्ति सिंह चावड़ा को भी गिरफ़्तार किया गया ।

जप्तशुदा सामग्री - रू. 15,41,200/- के नकली नोट,लैपटॉप,प्रिंटर,स्केनिंग पेटी,100-200-500 के अर्द्ध छपे प्रिंट पेपर एवं 02 मोटर साइकिल जप्त ।

गिरफ्तार आरोपियों के नाम

1.सुनील पाटिल पिता बाबूराव पाटिल उम्र 38 वर्ष निवासी खकनार जिला बुरहानपुर ।

2.राजकुमार मालवीय पिता सिद्धनाथ उम्र 30 वर्ष निवासी ग्राम खेडाखजुरिया सोनकच्छ ।

3.सचिन नागर पिता तेज सिंह उम्र 27 वर्ष निवासी ग्राम दुधलाई सोनकच्छ ।

4.शुभम वर्मा पिता दिनेश वर्मा उम्र 23 वर्ष निवासी ग्राम आगरोद देवास ।

5.शक्ति सिंह चावड़ा पिता दिग्विजय सिंह उम्र 19 वर्ष निवासी ग्राम आगरोद देवास ।

उक्त सराहनीय कार्य में थाना प्रभारी बैंक नोट प्रेस श्री अमित सोलंकी,उनि तरूण कुमार बोडके,उनि गौरीशंकर यादव,उनि राहुल परमार,सउनि हितेन्द्र चंद्रवंशी,सउनि मनोज पटेल,सउनि ईश्वरसिंह मंडलोई, सउनि राजेश भारद्वाज पु.अ.कार्यलय, प्रआर रवि पटेल, आर राहुल शर्मा,सैनिक भगवान सिंह तथा सायबर सेल टीम प्रआर शिवप्रताप सिंह सेंगर,सचिन चौहान की महत्वपूर्ण भूमिका रही ।

लापता हनीमून जोड़े में पति राजा का शव खाई में मिला, पत्नी की तलाश

ओशरा हिल्स की आखिरी इंस्टाग्राम रील से पुलिस को सुराग मिला

इंदौर। शहर के नवविवाहित दंपत्ति राजा रघुवंशी और उनकी पत्नी सोनम हनीमून मनाने शिलांग गए थे और 23 मई से लापता थे। 12 दिन बाद आज राजा का शव गहरी खाई से बरामद किया गया। जबकि, सोनम की तलाश अब भी जारी है। पुलिस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और उनकी आखिरी सोशल मीडिया रील के जरिए लोकेशन ट्रेस कर सर्च ऑपरेशन चला रही है।

साकार नगर (कैट रोड) निवासी 30 वर्षीय राजा रघुवंशी की 20 मई को सोनम से शादी हुई थी। शादी के बाद दोनों हनीमून के लिए बेंगलुरु होते हुए मेघालय पहुंचे। 23 मई को आखिरी बार उन्होंने इंदौर में मौजूद अपने परिजनों से बात की। इसके बाद से ही उनके तीनों मोबाइल फोन बंद आ रहे थे। परिजनों ने जब संपर्क नहीं हो पाया तो चिंता बढ़ी। दोनों के भाई तुरंत शिलांग रवाना हुए और वहां पहुंचकर उन्होंने स्थानीय पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई।

सुराग आखिरी रील से मिला

जांच के दौरान पुलिस को एक अहम सुराग मिला। राजा और सोनम ने 23 मई को शिलांग के ओशरा हिल्स क्षेत्र में एक इंस्टाग्राम रील बनाई थी। यही उनकी आखिरी डिजिटल एक्टिविटी थी। पुलिस उसी वीडियो में दिख रहे इलाके में सर्चिंग कर रही थी, जहां अब जाकर राजा का शव मिला। बताया जा रहा है कि वह इलाका बेहद दुर्गम है और वहां सबसे ज्यादा बारिश होती है, जिससे खोजबीन में काफी दिक्कतें आ रही थीं।

गहरी खाई से मिला राजा का शव

सर्च ऑपरेशन के दौरान पुलिस और बचाव दल को एक गहरी खाई में राजा का शव मिला। शव की स्थिति को देखते हुए पुलिस ने दुर्घटना की आशंका जताई है। लेकिन, अन्य संभावनाओं को भी खारिज नहीं किया गया है। शव को खाई से निकालने की कोशिश की जा रही है। सोनम अब भी लापता हैं और उनकी खोजबीन जारी है।

गाइड और होटल स्टाफ पर शक

राजा और सोनम के परिजन जब शिलांग पहुंचे, तो उन्होंने बताया कि होटल और गाइड वालों का रवैया असहयोगात्मक था। परिजनों का आरोप है कि उन्हें धमकाया भी गया और पुलिस ने शुरुआत में मामले को गंभीरता से नहीं लिया। परिजनों का यह भी कहना है कि गाइड और वाहन चालक, जिन्होंने दंपत्ति को उस दिन ट्रिप पर ले जाया था, उनसे पुलिस ने ठीक से पूछताछ नहीं की।

सीसीटीवी और कॉल रिकॉर्ड खंगाले

राजा का शव मिलने के बाद शिलांग पुलिस अब इस केस को गंभीर आपराधिक एंगल से देख रही है। पुलिस सीसीटीवी फुटेज, कॉल डिटेल्स और मोबाइल लोकेशन के आधार पर सोनम की तलाश में जुटी है। फिलहाल पुलिस ने किसी की गिरफ्तारी नहीं की, लेकिन स्थानीय गाइड और होटल कर्मचारियों से पूछताछ की जा रही है।

हनीमून के दौरान मौत गंभीर घटना

राजा रघुवंशी की शादी को चंद दिन ही हुए थे कि यह अनहोनी हो गई। एक नया जीवन शुरू करने का सपना देखने वाला जोड़ा आज टूट चुका है। राजा अब इस दुनिया में नहीं हैं और सोनम का कोई अता-पता नहीं है। इस दुखद घटना ने इंदौर और शिलांग दोनों शहरों को झकझोर दिया है। उम्मीद की जा रही है कि सोनम सकुशल मिलें और इस मामले में सच्चाई जल्द सामने आए।

मिस यूनिवर्स एमपी 2025 का ग्रैंड फिनाले

13 प्रतिभागियों में होगी ताज की टक्कर

भोपाल (नप्र)। मिस यूनिवर्स एमपी 2025 का भव्य ग्रैंड फिनाले आज होटल एम्पायर में आयोजित किया जाएगा। रैंप तैयार है, लाइट्स जगमगा रही हैं और अब बारी है प्रतिभा, आत्मविश्वास और सौंदर्य के संगम की। इस मंच पर चुनी जाएंगी वह युवती, जो सीधे मिस यूनिवर्स इंडिया 2025 की रेस में पहुंचेंगी। 20 मई को हुए स्टेट लेवल ऑडिशन में प्रदेशभर से चयनित 13 फाइनलिस्ट अब फिनाले की रैंप पर जलवा बिखेरेंगी। शो की खास बात यह है कि यह आयोजन मध्यप्रदेश की आधिकारिक स्टेट फ्रेंचाइजी द्वारा किया जा रहा है। बीते वर्ष की विनर कोपल मंडोली अपनी उत्तराधिकारी को ताज पहनाकर अगली मिस यूनिवर्स एमपी की घोषणा करेंगी।

तीन दिन तक चली ग्रूमिंग, इंटरनेशनल ट्रेनर ने दी ट्रेनिंग- फिनाले से पहले सभी प्रतिभागियों को इंटरनेशनल एक्सपर्ट अरनिश डायमेरी द्वारा तीन दिन की खास ट्रेनिंग दी गई। इस दौरान प्रतिभागियों की रैंप वॉक, कम्युनिकेशन स्किल्स, पर्सनल इंटरव्यू, फोटोशूट और टैलेंट राउंड की बारीकी से तैयारी कराई गई। रविवार को हुए इन सभी सेगमेंट्स के प्रदर्शन के आधार पर निर्णायक मंडल विजेता का चुनाव करेगा।

खास मेहमान के तौर पर पहुंचीं 2024 की मिस यूनिवर्स रिया सिंघा- मध्यप्रदेश के इस प्रतिष्ठित मंच को और खास बनाने के लिए मिस यूनिवर्स 2024 रिया सिंघा को विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। वह प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करेंगी और फिनाले में अपनी मौजूदगी से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगी। फिनाले शो में दर्शकों को फैशन और ग्लैमर का भरपूर अनुभव मिलेगा। शो की शुरुआत होगी डांस परफॉर्मेंस से, इसके बाद होगा एलिमिनेशन राउंड जिसमें पहले टॉप 8, फिर टॉप 4 प्रतिभागियों का चयन होगा। अंत में घोषित की जाएगी मिस यूनिवर्स मध्यप्रदेश 2025। ईवनिंग गाउन राउंड भी शो की प्रमुख आकर्षणों में से एक रहेगा।

ये हैं 13 फाइनलिस्ट्स

नव्या ठाकुर - ग्वालियर, तान्या टंडन - भोपाल, शायनी माखिजा - जबलपुर, सृष्टि सोनी - इंदौर, सुमेधा शर्मा - रतलाम, प्राची चौधरी - उज्जैन, आकांक्षा मिश्रा - छिंदवाड़ा, निधि तिवारी - सागर, प्रिया वर्मा - खंडवा, माही सक्सेना - होशंगाबाद, रिद्धि जोशी - बालाघाट, अदिति सोनी - रीवा, वैष्णवी राठौर - भोपाल

यह रहेंगे जजेज

रिया सिंह (मिस यूनिवर्स इंडिया - ब्रांड एंबेसडर)
अनमोल राणा (सेलिब्रिटी फोटोग्राफर)
श्रेया मेहता (स्टाइल एक्सपर्ट)
शोभना रॉय (स्टेट डायरेक्टर, मिस यूनिवर्स एमपी)

बृजमोहन श्रीवास्तव स्कॉटलैंड में व्याख्यान देंगे

नई दिल्ली। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और मुख्य राष्ट्रीय प्रवक्ता बृजमोहन श्रीवास्तव को स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में 'विकसित भारत @2047' सम्मेलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया है। यह प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 25 से 27 जून 2025 तक स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में आयोजित होने जा रहा हैं। श्रीवास्तव ने पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत पवार व कार्यकारी अध्यक्ष प्रफुल्ल पटेल को जानकारी दी है।

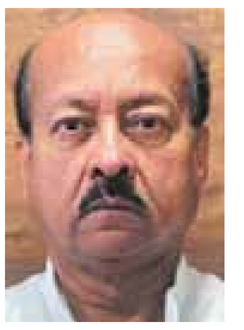

यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी के 'विकसित भारत' के दृष्टिकोण को विश्व में पहुँचाने के लिए आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन में सुशासन, पर्यावरण, पर्यटन, संस्कृति, आयुष, अर्थव्यवस्था, संचार, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे प्रमुख राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विषयों पर भारत के दृष्टिकोण विश्वव्यापी बनाना है।

इस सम्मेलन का उद्घाटन 25 जून को स्कॉटिश संसद, एडिनबर्ग में होगा तथा 26 जून को दूसरा सत्र एडिनबर्ग सिटी काउंसिल चैंबर्स में होगा। 27 जून को स्कॉटलैंड के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक स्थलों का दौरा होगा। बृजमोहन श्रीवास्तव ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि राष्ट्रीय और वैश्विक महत्व के मुद्दों पर पार्टी को अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर आमंत्रित करने से यह स्पष्ट है कि नेशनलिस्ट कांग्रेस पार्टी की विचारधारा और राष्ट्रीय अध्यक्ष अजीत पवार और कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रफुल पटेल को अन्तरराष्ट्रीय राजनैतिक मंच पर विश्व का राजनैतिक समुदाय जानना चाहता है। इस विश्व मंच के माध्यम से महाराष्ट्र को जो पहचान मिलेगी उससे प्रदेश की राजनीति में राकांपा के जनाधार का भी विस्तार होना पक्का है।

ग्लोबल डिजिटल फोरम में देश का प्रतिनिधित्व राजेश उदावत करेंगे

रूस में इंदौर की तकनीकी पहल और नवाचारों को प्रस्तुत करेंगे

इंदौर। नगर निगम की महापौर परिषद के सदस्य, योजना एवं सूचना प्रौद्योगिकी प्रभारी एवं वार्ड-49 के पार्षद राजेश उदावत, रूस के निज़नी नोवगोरोड में 5-6 जून को आयोजित होने वाले 'ग्लोबल डिजिटल फोरम' में भारत और विशेष रूप से इंदौर शहर का प्रतिनिधित्व करेंगे। इस महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आयोजन में वे इंदौर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव की ओर से प्रतिनिधि स्वरूप भाग लेंगे।

फोरम में उदावत इंदौर में संचालित स्मार्ट सिटी परियोजनाओं, डिजिटल गवर्नेंस मॉडल, और आईटी आधारित नागरिक सेवाओं के प्रभावशाली क्रियान्वयन पर व्याख्यान देंगे। उनका संबोधन इंदौर की तकनीकी पहल और नवाचारों को वैश्विक समुदाय के समक्ष प्रस्तुत करेगा। यात्रा के दौरान उनकी रूस के सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) मंत्री के साथ एक उच्च स्तरीय द्विपक्षीय बैठक भी प्रस्तावित है, जिसमें दोनों देशों के बीच डिजिटल साझेदारी, स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट्स और तकनीकी नवाचारों में सहयोग को लेकर संवाद होगा।

उल्लेखनीय है कि पिछले माह महापौर पुष्यमित्र भार्गव द्वारा इस विषय पर रूस के साथ प्रथम चरण की वार्ता संपन्न की गई थी, अब राजेश उदावत इस दिशा में द्वितीय चरण की औपचारिक बातचीत को आगे बढ़ाएंगे। यह वार्ता इंदौर और मॉस्को के बीच प्रस्तावित स्मार्ट सिटी एग्रीमेंट को लेकर एक अहम प्रगति मानी जा रही है। उदावत की यह भागीदारी इंदौर को एक स्मार्ट, डिजिटल और नागरिक-केन्द्रित शहर के रूप में वैश्विक मंच पर स्थापित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह न केवल नगर निगम के लिए बल्कि समस्त इंदौर वासियों के लिए गौरव का क्षण है कि हमारा शहर अब वैश्विक स्तर पर अपनी विशेष पहचान बना रहा है!

राहुल गांधी आज 6 घंटे भोपाल में, तीन बैठकें करेंगे

एमपी में कांग्रेस का नया कैम्पेन करेंगे लॉन्च

भोपाल (नप्र)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी 3 जून को भोपाल आएंगे। मध्य प्रदेश में कांग्रेस के संगठन सृजन अभियान की औपचारिक शुरुआत करेंगे। गुजरात के बाद अब मध्य प्रदेश में भी कांग्रेस संगठन के पुनर्निर्माण के लिए यह अभियान शुरू करने जा रही है।

इसके अलावा जातिगत जनगणना की पुरजोर तरीके से उठाई गई मांग के बाद केंद्र सरकार द्वारा कास्ट सेंसस कराने की घोषणा पर मध्य प्रदेश कांग्रेस की ओर से राहुल गांधी का आभार व्यक्त किया जाएगा।

आज भोपाल पहुंचेंगे एआईसीसी के ऑब्जर्वर

एमपी में संगठन सृजन अभियान के लिए अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (एआईसीसी) ने दो बार में कुल 61 ऑब्जर्वर नियुक्त किए हैं। मध्यप्रदेश के अलावा यूपी, राजस्थान, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, झारखंड, असम, आंध्र प्रदेश सहित देश के अलग-अलग राज्यों के विधायक, सांसद, पूर्व मंत्री और बड़े पदाधिकारियों को ऑब्जर्वर बनाया गया है।

इन ऑब्जर्वर्स को एक-एक जिले में भेजा जाएगा। इनके साथ मप्र कांग्रेस की ओर से हर ऑब्जर्वर के साथ 4-4 सहयोगी पर्यवेक्षक नियुक्त किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने जेईई के एआईआर-3 रैंकर श्री माजिद हुसैन को दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जेईई एडवांस-2025 की परीक्षा में एआईआर-3 रैंक अर्जित कर मध्यप्रदेश का नाम रोशन करने पर बुरहानपुर के श्री माजिद हुसैन को बधाई और शुभकामनाएं दी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोशल मीडिया 'एक्स' पर कहा कि मध्यप्रदेश के छोटे जिलों से भी हमारे युवा अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं, यह हर्ष और गौरव का विषय है।

गूगल के बताए रूट पर दौड़ाई कार, पेड़ से टकराई

महाकाल दर्शन कर दिल्ली लौट रहे थे 5 दोस्त, एक की मौत ; कार के परखच्चे उड़े

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन में महाकाल दर्शन कर दिल्ली लौट रहे 5 दोस्तों की हाईस्पीड कार एक पेड़ से टकरा गई। इस हादसे में 1 दोस्त की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 4 गंभीर रूप से घायल हो गए।

बताया जा रहा है कि कार सवारों ने गूगल मैप पर दिल्ली लोकेशन डाली थी। वो हाईवे छोड़कर गूगल के बताए रूट पर आगे बढ़ रहे थे। तभी घट्टिया थाना क्षेत्र के मालीखेड़ी गांव के पास हादसा हो गया। कार की स्पीड इतनी तेज थी कि टक्कर के बाद कार के परखच्चे उड़ गए।

हाईवे से हटकर गांव की ओर मोड़ दी कार- जानकारी के मुताबिक, दिल्ली निवासी पांच युवक अपनी अर्टिगा कार से उज्जैन आए थे। सोमवार सुबह इन्होंने महाकाल मंदिर की भस्म आरती में भाग लिया, इसके बाद काल भैरव मंदिर के दर्शन किए और फिर दिल्ली के लिए रवाना हो गए। वापसी में गूगल मैप की सहायता ली गई, लेकिन लोकेशन ने उन्हें कोटा हाईवे छोड़कर मालीखेड़ी गांव की ओर मोड़ने का संकेत दिया। टक्कर इतनी तेज थी कि एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि 4 घायल हैं।

पहले बेरिकेडिंग, फिर पेड़ से टकराई कार- जैसे ही कार मालीखेड़ी गांव के पास एक मोड़ पर पहुंची, तेज रफ्तार के कारण पहले वह पुलिस बेरिकेडिंग से टकराई और फिर अनियंत्रित होकर एक पेड़ से जा भिड़ी। टक्कर इतनी भीषण थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई।

आर्यन लोहिया की मौत, चार दोस्त घायल- हादसे में दिल्ली निवासी आर्यन लोहिया की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उज्जवल गुप्ता, अर्जुन वशिष्ठ, नचिकेत और मृदुल आर्य गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को पाटन स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से उन्हें उज्जैन रेफर किया गया।

पुलिस के अनुसार, सभी युवक दिल्ली के प्रतिष्ठित परिवारों से हैं। कोई लॉ की पढ़ाई कर रहा है, तो किसी के पिता दिल्ली के बड़े चिकित्सक हैं। ये लोग उज्जैन आने से पहले उदयपुर भी घूमने गए थे।

घायल ने सुनाया हादसे का पूरा घटनाक्रम

घायल युवक उज्जवल गुप्ता ने बताया कि हमने गूगल मैप पर लोकेशन डाली थी। उसने हमें हाईवे से हटाकर एक वैकल्पिक रास्ते पर मोड़ दिया। हम उसी रास्ते पर चल पड़े। अचानक झटका लगा और फिर कुछ समझ नहीं आया, होश अस्पताल में आया।

ग्रामीणों ने की मदद, पुलिस ने शुरू की जांच

हादसे की सूचना मिलते ही पास के खेतों में काम कर रहे ग्रामीण मौके पर पहुंचे और घायलों को तत्काल अस्पताल पहुंचाया। घट्टिया थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर मृतक का शव पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया और जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में तेज रफ्तार और रास्ते के चयन को हादसे का मुख्य कारण माना जा रहा है।

पहले भी गूगल मैप के कारण हो चुके हैं हादसे

यह कोई पहला मामला नहीं है जब गूगल मैप की दिशा को आंख मूंदकर फॉलो करना जानलेवा साबित हुआ है। इससे पहले उत्तर प्रदेश के बरेली में भी एक कार गूगल मैप के बताए हुए आधे-अधूरे पुल पर जा चढ़ी थी और खाई में गिर गई थी। उस हादसे में तीन लोगों की मौत हुई थी और उसका वीडियो भी सामने आया था।

गर्लफ्रेंड के पिता की गोली मारकर हत्या

मैहर में शादी के लिए नहीं मानने से नाराज था प्रेमी ; कुछ दिन पहले पिटा भी था

मैहर (नप्र)। मैहर के रामनगर थाना क्षेत्र के रामचुआ गांव में एक युवक ने अपनी गर्लफ्रेंड के पिता की गोली मारकर हत्या कर दी। रविवार रात 9 से 9.30 बजे के बीच युवती के पिता महेंद्र सिंह खेत पर बने घर के बाहर लेटे हुए थे।

इसी दौरान पहले से घात लगाए आरोपी ध्रुव कुमार बाइक से मौके पर पहुंचा। उसने महेंद्र सिंह के सीने पर देशी कट्टे से गोली चला दी, जिससे मौके पर ही उनकी मौत हो गई। गोली चलने की आवाज सुनकर परिजन घर के बाहर दौड़कर आए तो महेंद्र खून से लथपथ नीचे पड़े थे, वहीं, दो युवक बाइक से भागते नजर आए। पुलिस अधीक्षक सुधीर अग्रवाल ने बताया कि इसकी सूचना मिलते ही तत्काल थाना प्रभारी मौके पर पहुंचे। घेराबंदी और सर्चिंग भी की गई लेकिन उस समय आरोपी नहीं मिला। फिलहाल उसकी तलाश जारी है। जल्द ही आरोपी को पकड़ कर उसके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी एसपी के मुताबिक परिवार ने बताया कि महेंद्र की बेटी के साथ आरोपी ध्रुव कुमार शादी करना चाहता था, लेकिन महेंद्र को ये मंजूर नहीं था। महेंद्र के इनकार से आरोपी नाराज था। आरोपी उत्तर प्रदेश के झांसी के पास का रहने वाला है।

मुरैना में ट्रैक्टर-ट्रॉली पलटी, जेठ-बहू समेत 3 की मौत

24 घायलों में 9 बच्चे शामिल ; सभी आपस में रिश्तेदार, पूजा करने जा रहे थे

मुरैना (नप्र)। मुरैना में ट्रैक्टर ट्रॉली पलटने से जेठ और बहू की मौके पर ही मौत हो गई जबकि एक अन्य महिला ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। 24 लोग घायल हैं। इनमें 9 बच्चे भी शामिल हैं। तीन को गंभीर हालत में ग्वालियर रेफर किया गया है।

हादसा नूराबाद थाना क्षेत्र में करह धाम के पास रविवार रात करीब 11 बजे हुआ। ट्रॉली में 30-35 लोग सवार थे। मुंशी पुत्र मंगालिया जाटव (50) और पिस्ता बाई पति पूरण जाटव (35) निवासी हटीपुरा की घटनास्थल पर ही जान चली गई।अशर्फी (45) की ग्वालियर के अस्पताल में मौत हो गई।

पुलिस के मुताबिक, कैलारस थाना क्षेत्र के हटीपुरा और रिठोनिया गांव के लोग बानमोर में एक रिश्तेदार के यहां धार्मिक कार्यक्रम जैमाई में शामिल होने जा रहे थे। हादसे के बाद हटीपुरा निवासी ड्राइवर खिलाड़ी धाकड़ (40) पिता प्रहलाद धाकड़ मौके से फरार हो गया।

ये इलाज के लिए ग्वालियर रेफर

रेशमा, 17 वर्ष
पूनम, 20 वर्ष
कमला, 50 वर्ष

30 से ज्यादा लोग ट्रैक्टर-ट्रॉली के नीचे दबे- जैसे ही ट्रैक्टर-ट्रॉली करह धाम आश्रम के पास पहुंची, ड्राइवर का नियंत्रण छूट गया। बेकाबू ट्रैक्टर-ट्रॉली सड़क पर लहराती हुई पलट गई। 30 से ज्यादा लोग उसके नीचे दब गए। मौके से गुजर रहे लोगों ने रुककर उन्हें निकाला। फिर पुलिस और एम्बुलेंस को सूचना दी। घायलों को जिला अस्पताल मुरैना पहुंचाया गया, जहां तीन की हालत गंभीर होने पर ग्वालियर रेफर कर दिया गया।

पटिया वाले बाबा का आश्रम है करह धाम- करह धाम मुरैना ही नहीं, आसपास के जिलों में भी प्रसिद्ध है। यहां रामरतन महाराज उर्फ पटिया वाले बाबा का आश्रम है। 24 घंटे सियाराम की धुन और अखंड रामायण का पाठ चलता रहता है। मान्यता है कि यहां बने कुएं का पानी पीने से कुत्ते के काटे का इलाज हो जाता है।

तेंदुए का युवकों पर हमला, हाथ-सिर में गहरे घाव

श्योपुर में शोर सुनकर ग्रामीण लाठी-डंडे लेकर पहुंचे तो भागा ; वन अमला रेस्क्यू में जुटा

श्योपुर (नप्र)। श्योपुर में नदी में नहाने जा रहे दो युवकों पर तेंदुए ने हमला कर दिया। उनकी आवाज सुनकर आसपास के ग्रामीण लाठी-डंडे लेकर वहां पहुंचे। ग्रामीणों के चिल्लाने पर तेंदुआ वहां से भाग गया। युवकों के हाथ और सिर में गहरे घाव हो गए हैं। वन विभाग ने तेंदुए को पकड़ने के लिए पिंजरा लगाया है।

घटना विजयपुर के अर्रोद गांव में सोमवार सुबह की है। रामलखन ठाकुर(25) और धन सिंह कुशवाह (23) मवेशियों के लिए चारा लेने जा रहे थे। इसी दौरान झाड़ियों में छिपे तेंदुए ने पहले रामलखन पर हमला कर दिया। साथी को बचाने की कोशिश में धन सिंह कुशवाह भी घायल हो गए।

घायल बोला- झाड़ियों में छिपा था तेंदुआ- हमले में घायल रामलखन ने बताया कि मवेशियों के लिए चारा लाने के लिए खेत गए थे। इसी दौरान वहां झाड़ियों में छिपा तेंदुआ दिखा। उसे लाठी मारकर भगाने की कोशिश की, तो उसने हमला कर दिया। इसके बाद जंगल की ओर भाग गया।

एक दिन पहले किया था बछड़े का शिकार- गांव वालों का कहना है कि क्षेत्र में तेंदुआ पिछले कुछ समय से है। एक दिन पहले ही रविवार को तेंदुए ने गांव में बछड़े का शिकार किया था। इससे लोगों में दहशत है। वन विभाग को कई बार सूचना दी है, लेकिन अब तक तेंदुए को पकड़ने के लिए ठोस कदम नहीं उठाया गया है। इससे लोगों में नाराजगी है।

गांव वालों को जंगल में नहीं जाने की सलाह- इधर, वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। तेंदुए की तलाश की जा रही है। अफसरों ने गांव वालों को जंगल या नदी किनारे अकेले नहीं जाने की सलाह दी गई है। वन विभाग द्वारा घायल रामलखन को 10 हजार और धन सिंह को पांच हजार रुपए की सहायता राशि दी गई है। वहीं, गांव वालों का कहना है कि केवल आर्थिक मदद काफी नहीं है। विभाग को तेंदुए को पकड़ने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिए।

डीएफओ ने कहा- पिंजरा लगवाया जा रहा- सामान्य वनमंडल के डीएफओ केएस रंधा का कहना है कि दोनों घायलों को इलाज करवाया जा रहा है। साथ ही उन्हें सहायता राशि भी दे दी गई है। तेंदुए को पकड़ने के लिए पिंजरा लगवाया जा रहा है।